4425. हमसे उ़ष़्मान बिन हैष़म ने बयान किया, कहा हमसे औ़फ़ अअ़राबी ने बयान किया, उनसे इमाम ह़सन बस़री ने, उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे जमल के मौक़े पर वो कलाम मेरे काम आ गया जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था। मैं इरादा कर चुका था कि अस्ह़ाबे जमल ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) और आपके लश्कर के साथ शरीक होकर (ह़ज़रत अ़ली रज़ि. की) फ़ौज से लड़ूँ। उन्होंने बयान किया कि जब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि अहले फ़ारस ने किसरा की लड़की को वारिष़े तख़्त व ताज बनाया है तो आपने फ़र्माया कि वो क़ौम कभी फ़लाह़ नहीं पा सकती जिसने अपना हुक्मरान किसी औ़रत को बनाया हो। (तशरीह़ पीछे हो चुकी है) (दीगर मक़ाम : 7099)

٤٤٢٥- حدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ، حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: لَقَدْ نَفَعَنِي اللهُ بِكَلِمَةٍ سَمِعْتُهَا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَيَّامَ الْجَمَلِ بَعْدَ مَا كِدْتُ أَنْ أَلْحَقَ بِأَصْحَابِ الْجَمَلِ فَأُقَاتِلَ مَعَهُمْ، قَالَ: فَلَمَّا بَلَغَ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَنَّ أَهْلَ فَارِسَ قَدْ مَلَّكُوا عَلَيْهِمْ بِنْتَ كِسْرَى، قَالَ: ((لَنْ يُفْلِحَ قَوْمٌ وَلَّوْا أَمْرَهُمُ امْرَأَةً)).
[طرفه في : ٧٠٩٩].

4426. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुह्री से सुना, उन्होंने साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मुझे याद है जब मैं बच्चों के साथ ष़निय्यतुल वदाअ़ की त़रफ़ रसूलुल्लाह (ﷺ) का इस्तिक़्बाल करने गया था। सुफ़यान ने एक बार (मअ़ल ग़िल्मान के बजाय) मअ़स्सिब्यान बयान किया।

٤٤٢٦- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ يَقُولُ: أَذْكُرُ أَنِّي خَرَجْتُ مَعَ الْغِلْمَانِ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ نَتَلَقَّى رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَقَالَ سُفْيَانُ: مَرَّةً مَعَ الصِّبْيَانِ. [راجع: ٣٠٨٣]

4427. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने और उनसे साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) ने कि मुझे याद है, जब मैं बच्चों के साथ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) का इस्तिक़बाल करने गया था। आप ग़ज़्व-ए-तबूक से वापस तशरीफ़ ला रहे थे। (राजेअ़ : 3073)

٤٤٢٧- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ السَّائِبِ أَذْكُرُ أَنِّي خَرَجْتُ مَعَ الصِّبْيَانِ نَتَلَقَّى النَّبِيَّ ﷺ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ مَقْدَمَهُ مِنْ غَزْوَةِ تَبُوكَ. [راجع: ٣٠٨٣]

ऊपर वाली ह़दीष़ में ष़निय्यतुल वदाअ़ तक इस्तिक़बाल के लिये जाना मज़्कूर है। ये ग़ज़्व-ए-तबूक ही की वापसी पर हुआ है।

बाब 84 : नबी करीम (ﷺ) की बीमारी और आप (ﷺ) की वफ़ात का बयान

٨٤- باب مَرَضِ النَّبِيِّ ﷺ وَوَفَاتِهِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ، ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ﴾

और अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान कि, आपको भी मरना है और उन्हें भी मरना है फिर तुम सब क़यामत के दिन अपने रब के हुज़ूर में झगड़ा करोगे।

4428. और यूनुस ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़र्वा ने

٤٤٢٨- وَقَالَ يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ

बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) अपने मर्ज़े वफ़ात में फ़र्माते थे कि ख़ैबर में (ज़हर आलूद) लुक़्मा जो मैंने अपने मुँह में रख लिया था, उसकी तकलीफ़ आज भी मैं महसूस करता हूँ। ऐसा मा'लूम होता है कि मेरी शहे-रग उस ज़हर की तकलीफ़ से कट जाएगी।

عُرْوَةُ قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ ((يَا عَائِشَةُ مَا أَزَالُ أَجِدُ أَلَمَ الطَّعَامِ الَّذِي أَكَلْتُ بِخَيْبَرَ فَهَذَا أَوَانُ وَجَدْتُ انْقِطَاعَ أَبْهَرِي مِنْ ذَلِكَ السُّمِّ)).

4429. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने और उनसे उम्मे फ़ज़ल बिन्ते हारिष़ (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने सुना रसूलुल्लाह (ﷺ) मग़रिब की नमाज़ में वल मुर्सलाति उर्फ़ा की क़िरात कर रहे थे, उसके बाद फिर आपने हमें कभी नमाज़ नहीं पढ़ाई, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली।

(राजेअ: 763)

٤٤٢٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ أُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْحَارِثِ قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْمَغْرِبِ بِالْمُرْسَلاَتِ عُرْفًا ثُمَّ مَا صَلَّى لَنَا بَعْدَهَا حَتَّى قَبَضَهُ اللهُ.

[راجع: ٧٦٣]

4430. हमसे मुहम्मद बिन अरअरह ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उमर (रज़ि.) आपको (मजलिस में) अपने क़रीब बिठाते थे। इस पर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) ने ए'तिराज़ किया कि इस जैसे तो हमारे बच्चे हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मैंने ये तर्ज़े अमल जिस वजह से इख़्तियार किया, वो आपको मा'लूम भी है? फिर हज़रत उमर (रज़ि.) ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इस आयत (या'नी) इज़ा जाआ नस्रुल्लाहि वल फ़त्ह के बारे में पूछा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने जवाब दिया कि ये रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात थी, आपको अल्लाह तआला ने (आयत में) उसी की ख़बर दी है। उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि जो तुमने बताया वही मैं भी इस आयत के बारे में जानता हूँ। (राजेअ: 3627)

٤٤٣٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُدْنِي ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ لَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ: إِنَّ لَنَا أَبْنَاءً مِثْلَهُ، فَقَالَ: إِنَّهُ مِنْ حَيْثُ تَعْلَمُ. فَسَأَلَ عُمَرُ ابْنَ عَبَّاسٍ عَنْ هَذِهِ الآيَةِ ﴿إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ﴾ فَقَالَ: أَجَلُ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَعْلَمَهُ إِيَّاهُ فَقَالَ: مَا أَعْلَمُ مِنْهَا إِلاَّ مَا تَعْلَمُ.

[راجع: ٣٦٢٧]

4431. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उययना ने बयान किया, उनसे सुलैमान अहवल ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि इब्ने अब्बास

٤٤٣١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ سُلَيْمَانَ الأَحْوَلِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَوْمُ الْخَمِيسِ وَمَا يَوْمُ

सको। कुछ लोगों ने उसके खिलाफ़ दूसरी राय पर इसरार किया। जब शोरो–गुल और झगड़ा ज़्यादा हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि यहाँ से जाओ। उबैदुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहते थे कि मुसीबत सबसे बड़ी ये थी कि लोगों ने इख़्तिलाफ़ और शोर करके आँहज़रत (ﷺ) को वो हिदायत नहीं लिखने दी।

(राजेअ़: 114)

مَنْ يَقُولُ غَيْرَ ذَلِكَ فَلَمَّا أَكْثَرُوا اللَّغْوَ وَالاخْتِلاَفَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قُومُوا)). قَالَ عُبَيْدُ اللهِ: فَكَانَ يَقُولُ ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّ الرَّزِيَّةَ كُلَّ الرَّزِيَّةِ مَا حَالَ بَيْنَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبَيْنَ أَنْ يَكْتُبَ لَهُمْ ذَلِكَ الْكِتَابَ لاخْتِلاَفِهِمْ وَلَغَطِهِمْ.

[راجع: ١١٤]

तश्रीह : ये रह़लत से चार दिन पहले की बात है। जब मर्ज ने शिद्दत इख़्तियार की तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, लाओ तुम्हें कुछ लिख दूँ ताकि तुम मेरे बाद गुमराह न हो। कुछ ने कहा कि आप पर शिद्दते दर्द ग़ालिब है, क़ुर्आन हमारे पास मौजूद है और हमको काफ़ी है। इस पर आपस में इख़्तिलाफ़ हुआ। कोई कहता था सामाने किताबत ले आओ कि ऐसा नविश्ता लिखा जाए कोई कुछ और कहता था ये शोरो-शग़फ़ बढ़ा तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम सब उठ जाओ। ये जुम्अ़ेरात का वाक़िया है। उसी रोज़ आपने तीन वसिय्यतें फ़र्माईं। यहूद को अ़रब से निकाल दिया जाए। वफ़ूद की इ़ज़्ज़त हमेशा उसी त़रह़ की जाए जैसा मैं करता रहा हूँ। क़ुर्आन मजीद को हर काम में मा'मूल बनाया जाए। कुछ रिवायात के मुत़ाबिक़ किताबुल्लाह और सुन्नत पर तमस्सुक का हुक्म फ़र्माया। आज मग़्रिब तक की तमाम नमाज़ें हुज़ूर (ﷺ) ने ख़ुद पढ़ाई थीं मगर इशा में न जा सके और ह़ज़रत अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) को फ़र्माया कि वो नमाज़ पढ़ाएँ। जिसके तह़त ह़ज़रत स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने ह़याते नबवी में सत्रह नमाज़ों की इमामत फ़र्माई। **रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु** आमीन।

4433, 4434. हमसे बुस्रा बिन स़फ़्वान बिन जमील लख़्मी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मर्ज़ुल मौत में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़ात़िमा (रज़ि.) को बुलाया और आहिस्ता से कोई बात उनसे कही जिस पर वो रोने लगीं, फिर दोबारा आहिस्ता से कोई बात कही जिस पर वो हंसने लगीं। फिर हमने उनसे उसके बारे में पूछा तो उन्होंने बतलाया कि आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि आपकी वफ़ात उसी मर्ज़ में हो जाएगी, मैं ये सुनकर रोने लगी। दूसरी बार आप (ﷺ) ने मुझसे जब सरगोशी की तो ये फ़र्माया कि आपके घर के आदमियों में सबसे पहले मैं आपसे जा मिलूँगी तो मैं हंसी थी।

(राजेअ़: 3623, 3624)

٤٤٣٣، ٤٤٣٤- حَدَّثَنَا بُسْرَةُ بْنُ صَفْوَانَ بْنِ جَمِيلٍ اللَّخْمِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ فَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ فِي شَكْوَاهُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَبَكَتْ ثُمَّ دَعَاهَا فَسَارَّهَا بِشَيْءٍ فَضَحِكَتْ، فَسَأَلْنَا عَنْ ذَلِكَ فَقَالَتْ: سَارَّنِي النَّبِيُّ ﷺ أَنَّهُ يُقْبَضُ فِي وَجَعِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ فَبَكَيْتُ، ثُمَّ سَارَّنِي فَأَخْبَرَنِي أَنِّي أَوَّلُ أَهْلِهِ يَتْبَعُهُ فَضَحِكْتُ. [راجع: ٣٦٢٣، ٣٦٢٤]

4435. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे

٤٤٣٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدٍ، عَنْ عُرْوَةَ

सअ़द ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं सुनती आई थी कि हर नबी को वफ़ात से पहले दुनिया और आख़िरत के रहने में इख़्तियार दिया जाता है, फिर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से भी सुना, आप अपने मर्ज़ुल मौत में फ़र्मा रहे थे, आपकी आवाज़ भारी हो चुकी थी। आप आयत 'मअ़ल्लज़ीन अन्अमल्लाहु अ़लैहिम अल्ख़' की तिलावत फ़र्मा रहे थे (या'नी उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह ने इन्आम किया है) मुझे यक़ीन हो गया कि आपको भी इख़्तियार दे दिया गया है। (दीगर मक़ाम : 4436, 4437, 4586, 6337, 6509)

عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : كُنْتُ أَسْمَعُ أَنَّهُ لاَ يَمُوتُ نَبِيٌّ حَتَّى يُخَيَّرَ بَيْنَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، فَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ وَأَخَذَتْهُ بُحَّةٌ يَقُولُ: ﴿مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ﴾ الآيَةَ فَظَنَنْتُ أَنَّهُ خُيِّرَ. [أطرافه في : ٤٤٣٦، ٤٤٣٧، ٤٥٨٦، ٦٣٣٨، ٦٥٠٩].

तश्रीह : या'नी आपने आख़िरत को इख़्तियार किया। वाक़दी ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने दुनिया में आने पर सबसे पहले जो कलिमा ज़ुबान से निकाला वो अल्लाहु अकबर था और आख़िरी कलिमा जो वफ़ात के वक़्त फ़र्माया, वो अर्रफ़ीक़ुल्आला था। (वह़ीदी)

4436. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने मर्ज़ुल वफ़ात में बार बार फ़र्माते थे। (अल्लाहुम्म) अर्रफ़ीक़ुल आ़ला, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे रुफ़्क़ाअ (अंबिया और सिद्दीक़ीन) में पहुँचा दे (जो आला इल्लियीन में रहते हैं) (राजेअ : 4435)

٤٤٣٦– حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدٍ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : لَمَّا مَرِضَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَرَضَ الَّذِي مَاتَ فِيهِ جَعَلَ يَقُولُ : ((فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)). [راجع: ٤٤٣٥]

4437. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने कि उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया तन्दरुस्ती के ज़माने में रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माया करते थे कि जब भी किसी नबी की रूह क़ब्ज़ की गई तो पहले जन्नत में उसकी क़यामगाह उसे ज़रूर दिखा दी गई, फिर उसे इख़्तियार दिया गया (रावी को शक था कि लफ़्ज़ यह़्या है या युख़य्यिरु, दोनों का मफ़्हूम एक ही है) फिर जब आँहज़रत (ﷺ) बीमार पड़े और वक़्त क़रीब आ गया तो सरे मुबारक आ़इशा (रज़ि.) की रान पर था और आप पर ग़शी त़ारी हो गई थी, जब कुछ होश हुआ तो आपकी आँखे घर की छत की त़रफ़ उठ गईं और आपने फ़र्माया। अल्लाहुम्म फ़िर्रफ़ीक़िल आ़ला। मैं समझ गई कि अब हुज़ूरे अकरम (ﷺ) हमें (या'नी दुनियवी ज़िन्दगी को) पसन्द नहीं फ़र्माएँगे। मुझे वो ह़दीष़ याद आ गई जो आपने तन्दुरुस्ती के ज़माने में फ़र्माई थी। (राजेअ : 4435)

٤٤٣٧– حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ إِنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ صَحِيحٌ يَقُولُ ((إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ قَطُّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ، ثُمَّ يُحَيَّا أَوْ يُخَيَّرَ)) فَلَمَّا اشْتَكَى وَحَضَرَهُ الْقَبْضُ وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِ عَائِشَةَ غُشِيَ عَلَيْهِ فَلَمَّا أَفَاقَ شَخَصَ بَصَرُهُ نَحْوَ سَقْفِ الْبَيْتِ ثُمَّ قَالَ : ((اللَّهُمَّ فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)) فَقُلْتُ: إِذًا لاَ يُجَاوِرُنَا فَعَرَفْتُ أَنَّهُ حَدِيثُهُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا وَهُوَ صَحِيحٌ. [راجع: ٤٤٣٥]

4438. हमसे मुह़म्मद बिन यह़्या ज़ुह्ली ने बयान किया, कहा

٤٤٣٨– حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا عَفَّانُ عَنْ

हमसे अफ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे सख़र बिन जुवैरिया ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद (क़ासिम बिन मुहम्मद) ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि (उनके भाई) अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत मे हाज़िर हुए। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे। अब्दुर्रहमान (रज़ि.) के हाथ में एक ताज़ा मिस्वाक इस्ते'माल के लिये थी आप (ﷺ) इस मिस्वाक की तरफ़ देखते रहे। चुनाँचे मैं ने उनसे मिस्वाक ले ली और उसे अपने दांतों से चबाकर अच्छी तरह झाड़ने और साफ़ करने के बाद हुज़ूर (ﷺ) को दे दी। आपने वो मिस्वाक इस्ते'माल की जितने उम्दा तरीक़ा से हुज़ूर (ﷺ) उस वक़्त मिस्वाक कर रहे थे, मैंने आपको इतनी अच्छी तरह मिस्वाक करते कभी नहीं देखा। मिस्वाक से फ़ारिग़ होने के बाद आपने अपना हाथ या अपनी उँगली उठाई और फ़र्माया। फ़िर्रफ़ीक़िल आला तीन बार और आपका इंतिक़ाल हो गया। हज़रत आइशा(रज़ि.) कहा करती थीं कि हुज़ूर अकरम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो सरे मुबारक मेरी हंसली और ठोडी के बीच में था। (राजेअ : 890)

صَخْرِ بْنِ جُوَيْرِيَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا دَخَلَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا مُسْنِدَتُهُ إِلَى صَدْرِي وَمَعَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سِوَاكٌ رَطْبٌ يَسْتَنُّ بِهِ فَأَبَدَّهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَصَرَهُ فَأَخَذْتُ السِّوَاكَ فَقَصَمْتُهُ وَنَفَضْتُهُ وَطَيَّبْتُهُ، ثُمَّ دَفَعْتُهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَاسْتَنَّ بِهِ، فَمَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ اسْتَنَّ اسْتِنَانًا قَطُّ أَحْسَنَ مِنْهُ، فَمَا عَدَا أَنْ فَرَغَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَفَعَ يَدَهُ أَوْ إِصْبَعَهُ ثُمَّ قَالَ: ((فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى)) ثَلاَثًا ثُمَّ قَضَى وَكَانَتْ تَقُولُ: مَاتَ وَرَأْسُهُ بَيْنَ حَاقِنَتِي وَذَاقِنَتِي.

[راجع: ٨٩٠]

तश्रीह : इसमें ये इशारा था कि हज़रत आइशा (रज़ि.) और आँहज़रत (ﷺ) दुनिया और आख़िरत दोनों में एक जगह रहेंगे। हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं अल्लाह जानता है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) दुनिया और आख़िरत में आपकी बीवी हैं। हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ षानी (रह) फ़र्माते हैं कि मैं खाना तैयार करके ईसाले ष़वाब के वक़्त आँहज़रत (ﷺ) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) और हस्नैन (रज़ि.) के ष़वाब की निय्यत किया करता था। एक शब ख़्वाब में आँहज़रत (ﷺ) को मैंने देखा कि आप गुस्से की नज़र से मुझको देख रहे हैं। मैंने सबब पूछा इर्शाद हुआ ये अम्र सबको मा'लूम है कि मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) के घर में खाना खाया करता हूँ। (लिहाज़ा तुमको भी ईसाले ष़वाब में हज़रत आइशा रज़ि. को भी शामिल करना चाहिये)। हज़रत मुजद्दिद कहते हैं मैंने उस रोज़ से आपकी अज़्वाजे मुतह्हरात ख़ुसूसन हज़रत आइशा (रज़ि.) को भी ईसाले ष़वाब में शरीक करना शुरू कर दिया। **खाना खिलाने के लिये मुत्लक़न ऐसा ईसाले ष़वाब जो किसी क़ैद या रस्म के बग़ैर हो और ख़ालिस अल्लाह की रज़ा के लिये किसी ग़रीब मिस्कीन यतीम को खिलाया जाए और उसका ष़वाब बुज़ुर्गों को बख़्शा जाए, उसके जवाज़ में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है।**

4439. मुझसे हिब्बान बिन मूसा मरवज़ी ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे उर्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जब बीमार पड़ते तो अपने ऊपर मुअव्वज़तैन (सूरह फ़लक़ और सूरह नास) पढ़कर दम कर लिया करते थे और

٤٤٣٩ - حَدَّثَنِي حِبَّانُ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ إِذَا اشْتَكَى نَفَثَ عَلَى نَفْسِهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ وَمَسَحَ عَنْهُ بِيَدِهِ

अपने जिस्म पर अपने हाथ फेर लिया करते थे, फिर जब वो मर्ज़ आपको लाह़िक़ हुआ जिसमें आपकी वफ़ात हुई तो मैं मुअव्वज़तैन पढ़कर आप पर दम किया करती थी और हाथ पर दम करके ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) के ज़िस्म पर फेरा करती थी।

فلمّا اشتكى وَجَعَهُ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ طَفِقْتُ أَنْفِثُ عَلَى نَفْسِهِ بِالْمُعَوِّذَاتِ الَّتِي كَانَ يَنْفِثُ وَامْسَحُ بِيَدِ النَّبِيِّ ﷺ عَنْهُ.

(दीगर मक़ाम : 5016, 5735, 5751)

[أطرافه في: ٥٠١٦، ٥٧٣٥، ٥٧٥١].

4440. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुख़्तार ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे अ़ब्बाद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने और उन्हें आ़इशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि आपने नबी करीम (ﷺ) से सुना, वफ़ात से कुछ पहले आँह़ज़रत (ﷺ) पुश्त से उनका सहारा लिए हुए थे। आपने कान लगाकर सुना कि ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) दुआ़ कर रहे हैं। ऐ अल्लाह! मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा, मुझ पर रह़म कर और मेरे रफ़ीक़ों से मुझे मिला।

(दीगर मक़ाम : 5647)

٤٤٤٠- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُخْتَارٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ ﷺ وَأَصْغَتْ إِلَيْهِ قَبْلَ أَنْ يَمُوتَ وَهُوَ مُسْنِدٌ إِلَيَّ ظَهْرَهُ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ)).

[طرفه في: ٥٦٤٧].

4441. हमसे स़ल्त बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना वज़्ज़ाह यश्करी ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अबी ह़ुमैद वज़ान ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने मर्ज़ुल वफ़ात में फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला ने यहूदियों को अपनी रह़मत से दूर कर दिया कि उन्होंने अपने अंबिया की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया था। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि अगर ये बात न होती तो आपकी क़ब्र भी खुली रखी जाती लेकिन आपको ये ख़तरा था कि कहीं आपकी क़ब्र को भी सज्दा न किया जाने लगे। (राजेअ़ : 435)

٤٤٤١- حَدَّثَنَا الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ هِلاَلٍ الْوَزَّانِ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ فِي مَرَضِهِ الَّذِي لَمْ يَقُمْ مِنْهُ: ((لَعَنَ اللهُ الْيَهُودَ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ)) قَالَتْ عَائِشَةُ: لَوْلاَ ذَلِكَ لأُبْرِزَ قَبْرُهُ خَشِيَ أَنْ يُتَّخَذَ مَسْجِدًا. [راجع: ٤٣٥]

ग़ालिबन आपकी इस मुबारक दुआ़ की बरकत थी कि क़ब्रे मुबारक को अब बिलकुल मुसक़्क़फ़ करके बन्द कर दिया गया है। ये कितना बड़ा मोअजजा है कि आज सारी दुनिया में सिर्फ़ एक ही सच्चे आख़िरी रसूल (ﷺ) की क़ब्र मह़फ़ूज़ है और वो भी इस ह़ालत में कि वहाँ कोई किसी भी क़िस्म की पूजा-पाठ नहीं। (ﷺ)

4442. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द ने ख़बर दी और उनसे उम्मुल मोमिनीन आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये उठना बैठना दुश्वार हो गया और आपके मर्ज़ ने

٤٤٤٢- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، أَنَّ عَائِشَةَ زَوْجَ

फ़र्मा गये और आपका हाथ झुक गया। (राजेअ : 890)

4450. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन ड़र्वा ने बयान किया, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि मर्ज़ुल मौत में रसूलुल्लाह (ﷺ) पूछते रहते थे कि कल मेरा क़याम कहाँ होगा, कल मेरा क़याम कहाँ होगा? आप आइशा (रज़ि.) की बारी के मुंतज़िर थे, फिर अज़्वाजे मुतहहरात (रज़ि.) ने आइशा (रज़ि.) के घर क़याम की इजाज़त दे दी और आपकी वफ़ात उन्हीं के घर में हुई। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आपकी वफ़ात उसी दिन हुई जिस दिन क़ायदे के मुताबिक़ मेरे यहाँ आपके क़याम की बारी थी। रहलत के वक़्त सरे मुबारक मेरे सीने पर था और मेरा थूक आपके थूक के साथ मिला था। उन्होंने बयान किया कि अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) दाख़िल हुए और उनके हाथ में इस्ते'माल के क़ाबिल मिस्वाक थी। हुज़ूर (ﷺ) ने उसकी तरफ़ देखा तो मैंने कहा कि अब्दुर्रहमान! ये मिस्वाक मुझे दे दो। उन्होंने मिस्वाक मुझे दे दी। मैंने उसे अच्छी तरह चबाया और झाड़कर हुज़ूर (ﷺ) को दी, फिर आपने वो मिस्वाक की, उस वक़्त आप मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे।

(राजेअ : 890)

٤٤٥٠- حدَّثَنا إسْماعيلُ. قالَ: حدّثني سُلَيْمانُ بْنُ بِلالٍ. حدّثنا هشامُ بْنُ عُرْوَة. أخْبَرَني أبي عنْ عائشة رضي الله عنْها أنّ رسُولَ الله ﷺ كان يسْألُ في مرضه الّذي ماتَ فيهِ يقولُ: ((أيْن أنا غداً؟)) يُريدُ يوْمَ عائشة فأذِنَ لهُ أزْواجُهُ يكُونُ حَيْثُ شاءَ فكانَ في بيْت عائشةَ حتّى ماتَ عنْدها. قالتْ عائشة : فمات في الْيوْم الّذي كانَ يدُورُ عليّ فيه في بيْتي فقبضهُ الله، وإنّ رأْسهُ لبيْن نحْري وسحْري وخالَط ريقُهُ ريقي. ثُمّ قالتْ: دخل عبْدُ الرّحْمن بن أبي بكْر ومعه سواكٌ يسْتَنُّ به. فنظَرَ إلَيْه رسُولُ الله ﷺ فقُلْتُ لهُ: أعْطني هذا السّواكَ يا عبْد الرّحْمن فأعْطانيه. فقَضمْتُهُ ثمّ مضغْتُهُ فأعْطيْتُهُ رسُولَ الله ﷺ فاسْتَنّ به وهُوَ مُسْتَنِدٌ إلى صدْري. [راجع: ٨٩٠]

4451. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात मेरे घर में, मेरी बारी के दिन हुई। आप उस वक़्त मेरे सीने से टेक लगाए हुए थे। जब आप बीमार पड़े तो हम आपकी सेहत के लिये दुआएँ किया करते थे। उस बीमारी में भी मैं आपके लिये दुआ करने लगी लेकिन आप फ़र्मा रहे थे और आप (ﷺ) का सर आसमान की तरफ़ उठा हुआ था फ़िर्रफ़ीक़िल आला फ़िर्रफ़ीक़िल आला और अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र (रज़ि.) आए तो उनके हाथ में एक ताज़ा टहनी थी। हुज़ूर (ﷺ) ने उसकी तरफ़ देखा तो मैं समझ गई कि आप (ﷺ) मिस्वाक करना चाहते हैं। चुनाँचे वो

٤٤٥١- حدَّثَنا سُلَيْمانُ بْنُ حَرْبٍ، حدّثنا حَمّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوب عن ابْنِ أبي مُلَيْكَةَ، عَنْ عائِشَةَ رَضِيَ الله عَنْهَا قَالتْ : تُوُفّي النّبيُّ ﷺ في بيْتي وفي يوْمي وبيْن سَحْري ونَحْرِي، وكَانَتْ إحْدانا تُعوّذُهُ بدُعاء إذا مَرِضَ. فذهَبْتُ أُعَوّذُهُ فَرَفَعَ رَأْسهُ إلى السّماء وَقَالَ وقَال: ((في الرّفيقِ الأعْلى. في الرّفِيقِ الأعْلى)) ومَرّ عَبْدُ الرّحْمنِ بْنُ أبي بَكْرٍ وَفي يَدِهِ جَرِيدَةٌ رَطْبَةٌ فَنظَرَ إلَيْهِ النّبيُّ

टहनी मैंने उनसे ले ली। पहले मैंने उसे चबाया, फिर साफ़ करके आपको दे दी। हुज़ूर (ﷺ) ने उससे मिस्वाक की, जिस तरह पहले आप मिस्वाक किया करते थे, उससे भी अच्छी तरह से, फिर हुज़ूर (ﷺ) ने वो मिस्वाक मुझे इनायत की और आपका हाथ झुक गया, या (रावी ने ये बयान किया कि) मिस्वाक आपके हाथ से छूट गई। इस तरह अल्लाह तआला ने मेरे और हुज़ूर (ﷺ) के थूक को उस दिन जमा कर दिया जो आपकी दुनिया की ज़िन्दगी का सबसे आख़िरी और आख़िरत की ज़िन्दगी का सबसे पहला दिन था। (राजेअ़ : 890)

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَظَنَنْتُ أَنَّ لَهُ بِهَا حَاجَةً. فَأَخَذْتُهَا فَمَضَغْتُ رَأْسَهَا وَنَفَضْتُهَا، فَدَفَعْتُهَا إِلَيْهِ فَاسْتَنَّ بِهَا كَأَحْسَنِ مَا كَانَ مُسْتَنًّا، ثُمَّ نَاوَلَنِيهَا فَسَقَطَتْ يَدُهُ أَوْ سَقَطَتْ مِنْ يَدِهِ فَجَمَعَ اللهُ بَيْنَ رِيقِي وَرِيقِهِ، فِي آخِرِ مِنَ الدُّنْيَا وَأَوَّلِ يَوْمٍ مِنَ الآخِرَةِ. [راجع: ٨٩٠]

4452,4453. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें अबू सलमा ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अपनी क़यामगाह, मस्ख़ से घोड़े पर आए और आकर उतरे, फिर मस्जिद के अंदर गये। किसी से आपने कोई बात नहीं की। उसके बाद आप आइशा (रज़ि.) के हुज्रे में आए और हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की तरफ़ गये, नअशे मुबारक एक यमनी चादर से ढंकी हुई थी। आपने चेहरा खोला और झुककर चेहर-ए-मुबारक को बोसा दिया और रोने लगे, फिर कहा मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हो अल्लाह की क़सम! अल्लाह तआ़ला आप पर दो मर्तबा मौत तारी नहीं करेगा। जो एक मौत आपके मुक़द्दर में थी, वो आप पर तारी हो चुकी है। (राजेअ़ : 1241, 1242)

٤٤٥٢، ٤٤٥٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَقْبَلَ عَلَى فَرَسٍ مِنْ مَسْكَنِهِ بِالسُّنْحِ حَتَّى نَزَلَ فَدَخَلَ الْمَسْجِدَ فَلَمْ يُكَلِّمِ النَّاسَ، حَتَّى دَخَلَ عَلَى عَائِشَةَ فَتَيَمَّمَ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهُوَ مُغَشًّى بِثَوْبِ حِبَرَةٍ، فَكَشَفَ عَنْ وَجْهِهِ ثُمَّ أَكَبَّ عَلَيْهِ فَقَبَّلَهُ وَبَكَى، ثُمَّ قَالَ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، وَاللهِ لاَ يَجْمَعُ اللهُ عَلَيْكَ مَوْتَتَيْنِ، أَمَّا الْمَوْتَةُ الَّتِي كُتِبَتْ عَلَيْكَ فَقَدْ مُتَّهَا. [راجع: ١٢٤١، ١٢٤٢]

4454. ज़ुह्री ने बयान किया और उनसे अबू सलमा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) लोगों से कुछ कह रहे थे। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, उ़मर! बैठ जाओ, लेकिन हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बैठने से इंकार कर दिया। इतने में लोग हज़रत उ़मर (रज़ि.) को छोड़कर अबूबक्र (रज़ि.) के पास आ गये और आपने ख़ुत्बा मस्नूना के बाद फ़र्माया, अम्माबअ़द! तुममें जो भी मुहम्मद (ﷺ) की इबादत करता था तो उसे मा'लूम होना चाहिये कि आपकी वफ़ात हो चुकी है और जो

٤٤٥٤- قَالَ الزُّهْرِيُّ: وَحَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ. أَنَّ أَبَا بَكْرٍ خَرَجَ وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يُكَلِّمُ النَّاسَ، فَقَالَ: اجْلِسْ يَا عُمَرُ فَأَبَى عُمَرُ أَنْ يَجْلِسَ، فَأَقْبَلَ النَّاسُ إِلَيْهِ وَتَرَكُوا عُمَرَ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَمَّا بَعْدُ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا ﷺ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ،

को आपने कब वसी बना दिया। (राजेअ : 2741)

[راجع: ٢٧٤١]

4460. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे मालिक बिन मिग़वल ने बयान किया, उनसे त़लहा बिन मुसर्रिफ़ ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से पूछा, क्या रसूलल्लाह (ﷺ) ने किसी को वसी बनाया था। उन्होंने कहा कि नहीं। मैंने पूछा कि लोगों पर वसिय्यत करना कैसे फ़र्ज़ है या वसिय्यत करने का कैसे हुक्म है? उन्होंने बताया कि आपने किताबुल्लाह के मुताबिक़ अ़मल करते रहने की वसिय्यत की थी। (राजेअ : 2740)

٤٤٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ مِغْوَلٍ، عَنْ طَلْحَةَ قَالَ : سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَوْصَى النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: لاَ، فَقُلْتُ كَيْفَ كُتِبَ عَلَى النَّاسِ الْوَصِيَّةُ أَوْ أُمِرُوا بِهَا قَالَ: أَوْصَى بِكِتَابِ اللهِ. [راجع: ٢٧٤٠]

4461. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुल अह़वस़ (सलाम बिन ह़कीम) ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने, उनसे अ़म्र बिन ह़ारिष़ (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने न दिरहम छोड़े थे, न दीनार, न कोई ग़ुलाम न बांदी, सिवा अपने सफ़ेद ख़च्चर के जिस पर आप सवार हुआ करते थे और आपका हथियार और कुछ वो ज़मीन जो आप (ﷺ) ने अपनी ज़िन्दगी में मुजाहिदों और मुसाफ़िरों के लिये वक़्फ़ कर रखी थी। (राजेअ : 2739)

٤٤٦١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَارِثِ، قَالَ: مَا تَرَكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ دِينَارًا وَلاَ دِرْهَمًا، وَلاَ عَبْدًا وَلاَ أَمَةً إِلاَّ بَغْلَتَهُ الْبَيْضَاءَ الَّتِي كَانَ يَرْكَبُهَا وَسِلاَحَهُ، وَأَرْضًا جَعَلَهَا لاِبْنِ السَّبِيلِ صَدَقَةً. [راجع: ٢٧٣٩]

4462. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित बिनानी ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि शिद्दते मर्ज़ के ज़माने में नबी करीम (ﷺ) की बेचैनी बहुत बढ़ गई थी। ह़ज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हरा (रज़ि.) ने कहा, आह अब्बाजान को कितनी बेचैनी है। हुज़ूर (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया, आज के बाद तुम्हारे अब्बाजान की बेचैनी नहीं रहेगी। फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई तो फ़ात़िमा (रज़ि.) कहती थीं, हाय अब्बाजान! आप अपने रब के बुलावे पर चले गये, हाए अब्बाजान! आप जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मुक़ाम पर चले गये। हम ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) को आपकी वफ़ात की ख़बर सुनाते हैं। फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) दफ़न कर दिये गये तो आप (रज़ि.) ने अनस (रज़ि.) से कहा, अनस! तुम्हारे दिल रसूलुल्लाह (ﷺ) की नअश पर मिट्टी डालने के लिये किस त़रह आमादा हो गये थे।

٤٤٦٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا ثَقُلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ يَتَغَشَّاهُ فَقَالَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ: وَاكَرْبَ أَبَاهُ فَقَالَ لَهَا: ((لَيْسَ عَلَى أَبِيكِ كَرْبٌ بَعْدَ الْيَوْمِ)). فَلَمَّا مَاتَ قَالَتْ: يَا أَبَتَاهُ أَجَابَ رَبًّا دَعَاهُ يَا أَبَتَاهُ مَنْ جَنَّةُ الْفِرْدَوْسِ مَأْوَاهُ يَا أَبَتَاهُ إِلَى جِبْرِيلَ نَنْعَاهُ فَلَمَّا دُفِنَ قَالَتْ فَاطِمَةُ عَلَيْهَا السَّلاَمُ : يَا أَنَسُ أَطَابَتْ أَنْفُسُكُمْ أَنْ تَحْثُوا عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ التُّرَابَ.

बाब 85 : नबी करीम (ﷺ) का आख़िरी कलिमा जो ज़ुबाने मुबारक से निकला

٨٥- باب آخِرِ مَا تَكَلَّمَ النَّبِيُّ ﷺ

हमसे बिश्र बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने कई अहले इल्म की मौजूदगी में ख़बर दी और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हालते स़ेहत में फ़र्माया करते थे कि हर नबी की रूह क़ब्ज़ करने से पहले उन्हें जन्नत में उनकी क़यामगाह दिखाई गई, फिर इख़्तियार दिया गया, फिर जब आप (ﷺ) बीमार हुए और आपका सरे मुबारक मेरी रान पर था। उस वक़्त आप पर ग़शी त़ारी हो गई। जब होश मे आए तो आपने अपनी नज़र घर की छत की त़रफ़ उठा ली और फ़र्माया, अल्लाहुम्मर्रफ़ीकुल आ़ला (ऐ अल्लाह! मुझे अपनी बारगाह में अंबिया और स़िद्दीक़ीन से मिला दे) मैं उसी वक़्त समझ गई कि अब आप हमें पसन्द नहीं कर सकते और मुझे वो हदीस़ याद आ गई जो आप हालते स़ेहत में हमसे बयान किया करते थे। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आख़िरी कलिमा जो ज़ुबान मुबारक से निकला वो यही था कि अल्लाहुम्मर्रफ़ीकुल आ़ला। (राजेअ़ : 4435)

٤٤٦٣- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ يُونُسُ: قَالَ الزُّهْرِيُّ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ فِي رِجَالٍ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ، أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ وَهُوَ صَحِيحٌ: ((إِنَّهُ لَمْ يُقْبَضْ نَبِيٌّ حَتَّى يَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ، ثُمَّ يُخَيَّرُ)) فَلَمَّا نَزَلَ بِهِ وَرَأْسُهُ عَلَى فَخِذِي غُشِيَ عَلَيْهِ. ثُمَّ أَفَاقَ فَأَشْخَصَ بَصَرَهُ إِلَى سَقْفِ الْبَيْتِ، ثُمَّ قَالَ: ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)) فَقُلْتُ: إِذاً لاَ يَخْتَارُنَا وَعَرَفْتُ أَنَّهُ الْحَدِيثُ الَّذِي كَانَ يُحَدِّثُنَا بِهِ وَهُوَ صَحِيحٌ. قَالَتْ: فَكَانَ آخِرَ كَلِمَةٍ تَكَلَّمَ بِهَا ((اللَّهُمَّ الرَّفِيقَ الأَعْلَى)).

[راجع: ٤٤٣٥]

तश्रीह : नज़्आ की हालत में ह़ज़रत आइशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) आप (ﷺ) को सहारा दिये हुए पसे पुश्त बैठी हुई थीं। पानी का प्याला हुज़ूर (ﷺ) के सिराहने रखा हुआ था। आप प्याला में हाथ डालते और चेहरा पर फेर लेते थे। चेह्रा मुबारक कभी सुर्ख़ होता कभी ज़र्द पड़ जाता, ज़ुबाने मुबारक से फ़र्मा रहे थे **ला इलाह इल्लल्लाहु अन्न लिल्मौति सकरात** इतने में अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र (रज़ि.) हाथ में ताज़ा मिस्वाक लिये हुए आ गये। आप (ﷺ) ने मिस्वाक पर नज़र डाली तो ह़ज़रत स़िद्दीक़ा (रज़ि.) ने मिस्वाक को अपने दांतों से नरम करके पेश कर दिया। हुज़ूर (ﷺ) ने मिस्वाक की फिर हाथ को बुलन्द फ़र्माया और ज़ुबाने अक़्दस से फ़र्माया **अल्लाहुम्मर्रफ़ीक़िल्आ़ला** उस वक़्त हाथ लटक गया और पुतली ऊपर को उठ गई। **इन्न लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।**

बाब 86 : नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात का बयान

٨٦- باب وَفَاةِ النَّبِيِّ ﷺ

4464,65. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उसे यह्या बिन अबी कस़ीर ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे आइशा (रज़ि.) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने (बेअ़स़त के बाद) मक्का में दस साल तक क़याम किया जिसमें आप (ﷺ) पर वह्य नाज़िल होती रही और मदीना में भी

٤٤٦٤، ٤٤٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ وَابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَبِثَ بِمَكَّةَ عَشْرَ سِنِينَ يُنْزَلُ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ وَبِالْمَدِينَةِ عَشْرًا.

दस साल तक आपका क़याम रहा। (दीगर मक़ाम : 4978)

[طرفه في: ٤٩٧٨].

4466. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आपकी उ़म्र 63 साल थी। इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे सईद बिन मुसय्यिब ने भी उसी त़रह़ ख़बर दी थी। (राजेअ़ : 3536)

٤٤٦٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ تُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ. قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ مِثْلَهُ.

[راجع: ٣٥٣٦]

तश्रीह : 13 रबीउ़ल अव्वल 11 हिजरी यौमे सोमवार वक़्त चाश्त था कि जिस्मे अत़हर से रूहे अनवर ने परवाज़ किया, उस वक़्त उ़म्रे मुबारक 63 साल क़मरी पर चार दिन थी। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।**

बाब 87 :

٨٧- باب

4467. हमसे क़ुबैस़ा बिन उ़त्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आपकी ज़िरह एक यहूदी के यहाँ तीस स़ाअ़ जौ के बदले में गिरवी रखी हुई थी। (राजेअ़ : 2067)

٤٤٦٧- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ وَدِرْعُهُ مَرْهُونَةٌ عِنْدَ يَهُودِيٍّ بِثَلاَثِينَ يَعْنِي صَاعًا مِنْ شَعِيرٍ.

[راجع: ٢٠٦٨]

तश्रीह : ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने उस यहूदी का क़र्ज़ अदा करके आपकी ज़िरह छुड़ा ली। उन ह़ालात में अगर ज़रा सी भी अ़क़्ल वाला आदमी ग़ौर करेगा तो स़ाफ़ समझ लेगा कि आप सच्चे पैग़म्बर थे। दुनिया के बादशाहों की त़रह़ एक बादशाह न थे। अगर आप दुनिया के बादशाहों की त़रह़ होते तो लाखों करोड़ों रुपये की जायदाद अपने बच्चों और बीवियों के लिये छोड़ देते।

बाब : नबी करीम (ﷺ) का उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को मर्ज़ुल मौत में एक मुहिम पर रवाना करना

٨٨- باب بَعْثِ النَّبِيِّ ﷺ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي مَرَضِهِ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ

4468. हमसे अबू आ़स़िम ज़िह्हाक बिन मुख़लद ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद (अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को एक लश्कर का अमीर

٤٤٦٨- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ الضَّحَّاكُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنِ الْفُضَيْلِ بْنِ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ. عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ. اسْتَعْمَلَ النَّبِيُّ ﷺ أُسَامَةَ فَقَالُوا فِيهِ: فَقَالَ

किया कि मुझसे ख़ुबैब बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उनसे ह़फ़्स बिन आ़सिम ने और उनसे अबू सईद बिन मुअ़ल्ला (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे इसी ह़ालत में बुलाया, मैंने कोई जवाब नहीं दिया (फिर बाद में, मैंने ह़ाज़िर होकर) अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं नमाज़ पढ़ रहा था। इस पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या अल्लाह तआ़ला ने तुमसे नहीं फ़र्माया है 'इस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि इज़ा दआकुम' (अल्लाह और उसके रसूल जब तुम्हें बुलाएँ तो हाँ मे जवाब दो) फिर हुज़ूर (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया कि आज मैं तुम्हें मस्जिद से निकलने से पहले एक ऐसी सूरत की ता'लीम दूँगा जो क़ुर्आन की सबसे बड़ी सूरत है। फिर आपने मेरा हाथ अपने हाथ में ले लिया और जब आप बाहर निकलने लगे तो मैंने याद दिलाया कि हुज़ूर (ﷺ) ने मुझे क़ुर्आन की सबसे बड़ी सूरत बताने का वा'दा किया था। आपने फ़र्माया अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल्आलमीन यही वो सब्अ़े मषानी और क़ुर्आने अ़ज़ीम है जो मुझे अ़ता किया गया है। (दीगर मक़ाम : 4647, 4703, 5006)

الرَّحْمَنِ عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ عَنْ أَبِي سَعِيدِ بْنِ الْمُعَلَّى، قَالَ: كُنْتُ أُصَلِّي فِي الْمَسْجِدِ، فَدَعَانِي رَسُولُ اللهِ ﷺ فَلَمْ أُجِبْهُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي كُنْتُ أُصَلِّي فَقَالَ: ((أَلَمْ يَقُلِ اللهُ اسْتَجِيبُوا للهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ؟)) ثُمَّ قَالَ لِي: ((لأُعَلِّمَنَّكَ سُورَةً هِيَ أَعْظَمُ السُّوَرِ فِي الْقُرْآنِ قَبْلَ أَنْ تَخْرُجَ مِنَ الْمَسْجِدِ، ثُمَّ أَخَذَ بِيَدِي فَلَمَّا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ قُلْتُ لَهُ: أَلَمْ تَقُلْ لأُعَلِّمَنَّكَ سُورَةً هِيَ أَعْظَمُ سُورَةٍ فِي الْقُرْآنِ؟ قَالَ: ﴿الْحَمْدُ للهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ هِيَ السَّبْعُ الْمَثَانِي، وَالْقُرْآنُ الْعَظِيمُ الَّذِي أُوتِيتُهُ)).

[أطرافه في: ٤٦٤٧، ٤٧٠٣، ٥٠٠٦]

सब्अ़े मषानी वो सात आयात जो बार बार पढ़ी जाती हैं। जिनको नमाज़ की हर रकअ़त में इमाम और मुक़्तदी सबके लिये पढ़ना ज़रूरी है जिसके पढ़े बग़ैर किसी की नमाज़ नहीं होती। यही क़ुर्आने अ़ज़ीम है। **सदक़ल्लाहु तबारक व तआ़ला।**

बाब 02 : आयत ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन की तफ़्सीर

٢- باب ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ﴾

मग़्ज़ूबि अ़लैहिम से यहूद और ज़ाल्लीन से नसारा मुराद हैं या'नी या अल्लाह! तू हमको उन लोगों की राह पर न चलाइयो जिन पर तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ और वो यहूद हैं और न गुमराहों की राह पर जो नसारा हैं।

4475. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें सुमय ने, उन्हें अबू स़ालेह ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब इमाम 'ग़ैरिल मग़्ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन' कहे तो तुम आमीन कहो क्योंकि जिसका ये कहना मलाइका के कहने के साथ हो जाए उसकी तमाम पिछली ख़ताएँ मुआफ़ हो जाती हैं। (राजेअ़ : 782)

٤٤٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ سُمَيٍّ عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَالَ الإِمَامُ ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلاَ الضَّالِّينَ﴾ فَقُولُوا: آمِينَ، فَمَنْ وَافَقَ قَوْلُهُ قَوْلَ الْمَلاَئِكَةِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ)). [راجع: ٧٨٢]

रखे। अ़रफ़ा के दिन से पहले अगर आख़िर रोज़ा अ़रफ़ा के दिन आ जाए तब भी कोई क़बाहत नहीं शहरे मक्का से चलकर अ़रफ़ात को जाए वहाँ अ़स्र की नमाज़ से रात की तारीकी होने तक ठहरे, फिर अ़रफ़ात से उस वक़्त लौटे जब दूसरे लोग लौटें और सब लोगों के साथ रात मुज़दलिफ़ा में गुज़ारे और अल्लाह की याद और तक्बीर और तह्लील बहुत करता रहे सुबह होने तक। सुबह को लोगों के साथ मुज़दलिफ़ा से मिना को लौटे जैसे अल्लाह ने फ़र्माया, 'षुम्मा अफ़ीज़ू मिन हैषु अफ़ाज़न्नासु' अल आयति या'नी कंकरियाँ मारने तक उसी त़रह अल्लाह की याद और तक्बीर व तह्लील करते रहो।

الْحَجِّ وَذَلِكَ قَبْلَ يَوْمِ عَرَفَةَ، فَإِنْ كَانَ آخِرُ يَوْمٍ مِنَ الأَيَّامِ الثَّلاَثَةِ يَوْمَ عَرَفَةَ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِ ثُمَّ لِيَنْطَلِقْ حَتَّى يَقِفَ بِعَرَفَاتٍ مِنْ صَلاَةِ الْعَصْرِ إِلَى أَنْ يَكُونَ الظَّلاَمُ، ثُمَّ لِيَدْفَعُوا مِنْ عَرَفَاتٍ إِذَا أَفَاضُوا مِنْهَا حَتَّى يَبْلُغُوا جَمْعًا الَّذِي يَبِيتُونَ بِهِ ثُمَّ لِيَذْكُرِ اللهَ كَثِيرًا، وَأَكْثِرُوا التَّكْبِيرَ وَالتَّهْلِيلَ قَبْلَ أَنْ تُصْبِحُوا، ثُمَّ أَفِيضُوا فَإِنَّ النَّاسَ كَانُوا يُفِيضُونَ وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللهَ إِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ حَتَّى تَرْمُوا الْجَمْرَةَ.

बाब 36 : आयत 'व मिन्हुम मंय्यकूलु रब्बना आतिना फिद्दुनिया' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

और कुछ उनमे ऐसे हैं जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हमको दुनिया में बेहतरी दे और आख़िरत में भी बेहतरी दे और हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा.

٣٦- باب قوله ﴿وَمِنْهُم مَنْ يَقُولُ: رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ﴾

4522. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) दुआ़ करते थे, ऐ परवरदिगार! हमारे हमको दुनिया में भी बेहतरी दे और आख़िरत में भी बेहतरी और हमको दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा। (दीगर मक़ाम : 6375)

٤٥٢٢- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ)). [طرفه في: ٦٣٨٥].

तशरीह : ये दुआ बड़ी अहमियत रखती है। जिसे बकष़रत पढ़ना दीन और दुनिया में बहुत सी बरकतों का ज़रिया है। कुर्आन मजीद मे इससे पहले कुछ ऐसे लोगों का ज़िक्र है जो हज्ज में ख़ाली दुनियावी मफ़ाद की दुआएँ करते और आख़िरत को बिलकुल भूल जाते थे। मुसलमानों को ये दुआ सिखाई गई कि वो दुनिया के साथ आख़िरत की भी भलाई मांगे। इस आयत का शाने नुज़ूल यही है। अ़रफ़ात में भी ज़्यादातर इस दुआ की फ़ज़ीलत है।

बाब 37 : आयत 'व हुव अलद्दुल्ख़िसाम' की तफ़्सीर

या'नी हालाँकि वो बहुत ही सख़्त क़िस्म का झगड़ालू है। अ़ता

باب قوله ﴿وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ﴾

وَقَالَ عَطَاءٌ: النَّسْلُ: الْحَيَوَانُ.

कर बैठी थीं कि हिम्मत हार दें, जबकि ह़ाल ये कि अल्लाह दोनों का मददगार था। सुफ़यान ने बयान किया कि हम दो जमाअ़तें बनू ह़ारिष़ और बनू सलाम थे। ह़ालाँकि इस आयत में हमारे बोदेपन का ज़िक्र है, मगर हमको ये पसन्द नहीं कि ये आयत न उतरती क्योंकि उसमें ये मज़्कूर है कि अल्लाह उन दोनों गिरोहों का मददगार (सरपरस्त) है। (राजेअ़ : 5051)

تفشلا والله وليهما﴾ قال: نحن الطائفتان بنو حارثة، وبنو سلمة، وما نحب وقال سفيان مرة: وما يسرني أنها لم تنزل لقول الله: ﴿والله وليهما﴾.

[راجع: ٥٠٥١]

इससे बढ़कर और फ़ज़ीलत क्या होगी कि विलायते इलाही हमको ह़ासिल हो गई। हमारे बोदेपन का जो ज़िक्र है वो स़ह़ीह़ है। इस फ़ज़ीलत के सामने हमको इस ऐ़ब के फ़ाश होने का बिलकुल मलाल नहीं।

बाब 9 : आयत 'लैस लक मिनल्अम्रि शैउन' की तफ़्सीर या'नी, आपको इस अम्र में कोई दख़ल नहीं कि ये हिदायत क्यूँ नहीं क़ुबूल करते अल्लाह जिसे चाहे उसे हिदायत मिलती है।

٩- باب قوله ﴿ليس لك من الأمر شيء﴾

4559. हमसे ह़िब्बान बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझसे सालिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़ज्र की दूसरी रकअ़त के रुकूअ़ से सर उठाकर ये बद्दुआ की, 'ऐ अल्लाह! फ़लाँ फ़लाँ और फ़लाँ काफ़िर पर ला'नत कर', ये बद्दुआ आपने समिअ़ल्लाहुलिमन ह़मिदह् और रब्बना लकल ह़म्द के बाद की थी। इस पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत उतारी, 'आपको उसमें कोई दख़ल नहीं' आख़िर आयत फ़इन्नहुम ज़ालिमून तक। इस रिवायत को इस्ह़ाक़ बिन राशिद ने ज़ुह्री से नक़ल किया है। (राजेअ़ : 4069)

٤٥٥٩- حدثنا حبان بن موسى، أخبرنا عبد الله، أخبرنا معمر عن الزهري. قال: حدثني سالم عن أبيه أنه سمع رسول الله ﷺ إذا رفع رأسه من الركوع في الركعة الآخرة من الفجر يقول: ((اللهم العن فلانا وفلانا وفلانا)) بعد ما يقول: ((سمع الله لمن حمده ربنا ولك الحمد)) فأنزل الله ليس لك من الأمر شيء إلى قوله ﴿فإنهم ظالمون﴾. رواه إسحاق بن راشد عن الزهري.

[راجع: ٤٠٦٩]

तश्रीह़ : इस्ह़ाक़ बिन राशिद की रिवायत को त़बरानी ने मुअ़जमे कबीर में वस़्ल किया है। आपने चार शख़्सों का नाम लेकर बद्दुआ की थी। स़फ़्वान बिन उमय्या, सुहैल बिन उ़मैर, ह़ारिष़ बिन हिशाम और अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) और बाद में ये चारों मुसलमान हो गये। अल्लाह को उनका मुस्तक़्बिल मा'लूम था, इसीलिये अल्लाह ने उन पर ला'नत करने से मना किया।

4560. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलाम बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.)

٤٥٦٠- حدثنا موسى بن إسماعيل. حدثنا إبراهيم بن سعد، حدثنا ابن شهاب، عن سعيد بن المسيب، وأبي

जिसे अल्लाह तआला ने माल दिया और फिर उसने उसकी ज़कात नहीं अदा की तो (आख़िरत में) उसका माल निहायत ज़हरीले सांप बनकर जिसकी आँखों के ऊपर दो नुक़्ते होंगे। उसकी गर्दन में तौक़ की तरह पहना दिया जाएगा। फिर वो सांप उसके दोनों जबड़ों को पकड़कर कहेगा कि मैं ही तेरा माल हूँ, मैं ही तेरा ख़ज़ाना हूँ, फिर आपने इस आयत की तिलावत की, 'और जो लोग कि उस माल में बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह उन्हें अपने फ़ज़्ल से दे रखा है, वो ये न समझे कि ये माल उनके हक़ में बेहतर है', आख़िर तक। (राजेअ : 1403)

الله ﷺ: ((مَنْ آتَاهُ اللهُ مَالاً فَلَمْ يُؤَدِّ زَكَاتَهُ مُثِّلَ لَهُ مَالُهُ شُجَاعًا أَقْرَعَ لَهُ زَبِيبَتَانِ، يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَأْخُذُ بِلِهْزِمَتِهِ – يَعْنِي بِشِدْقَيْهِ – يَقُولُ أَنَا مَالُكَ أَنَا كَنْزُكَ)) ثُمَّ تَلاَ هَذِهِ الآيَةَ: ((﴿وَلاَ يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللهُ مِنْ فَضْلِهِ﴾)) إِلَى آخِرِ الآيَةِ.

[راجع: ١٤٠٣]

तश्रीह : आयत में उन मालदारों का बयान है जो ज़कात नहीं अदा करते बल्कि सोने चाँदी को बतौरे ख़ज़ाना जमा करके रखते हैं। उनका ह़ाल क़यामत के दिन ये होगा कि उनका वो ख़ज़ाना ज़हरीला सांप बनकर उनकी गर्दनों का हार बनेगा और उनके जबड़ों को चीरेगा। ये वो दौलत के पुजारी लोग होंगे जिन्होंने दुनिया में ख़ज़ाना गाड़-गाड़कर रखा और उसकी ज़कात तक अदा नहीं की।

बाब 15 : आयत 'वल तस्मउ़ना मिनल्लज़ीन ऊतुल किताब' की तफ़्सीर या'नी,

١٥– بَابُ قَوْلِهِ ﴿وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا﴾

और यक़ीनन तुम लोग बहुत सी दिल दुखाने वाली बातें उनसे सुनोगे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिल चुकी है और उनसे भी सुनोग जो मुश्रिक हैं।

या'नी यहूद व नसारा व बुतपरस्त क़ौमें हमेशा तकलीफ़ देने पर आमादा रहेंगी मगर तुमको सब्र व इस्तिक़ामत के साथ ये सारे मसाइब बर्दाश्त करने होंगे।

4566. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक गधे की पुश्त पर फ़िदक की बनी हुई एक मोटी चादर रखने के बाद सवार हुए और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को अपने पीछे बिठाया। आप (ﷺ) बनू ह़ारिष़ बिन ख़ज़रज में सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) की मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे। ये जंगे बद्र से पहले का वाक़िया है। रास्ते में एक मजलिस से आप गुज़रे जिसमें अ़ब्दुल्लाह बिन उबय इब्ने सलूल (मुनाफ़िक़) भी मौजूद था, ये अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के ज़ाहिरी इस्लाम लाने से भी पहले का क़िस्सा है। मज्लिस में मुसलमान और मुश्रिकीन या'नी बुतपरस्त और यहूदी सब ही

٤٥٦٦– حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَوْلُهُ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمَارٍ عَلَى قَطِيفَةٍ فَدَكِيَّةٍ وَأَرْدَفَ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ وَرَاءَهُ يَعُودُ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ فِي بَنِي الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ قَبْلَ وَقْعَةِ بَدْرٍ، قَالَ: حَتَّى مَرَّ بِمَجْلِسٍ فِيهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ، وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ يُسْلِمَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ فَإِذَا فِي الْمَجْلِسِ أَخْلاَطٌ

बाब 15 : आयत 'वल तस्मइना मिनल्लज़ीन ऊतुल किताब' की तफ़्सीर या'नी,

१٥- باب قوله ﴿وَلَتَسْمَعُنْ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا﴾

और यक़ीनन तुम लोग बहुत सी दिल दुखाने वाली बातें उनसे सुनोगे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिल चुकी है और उनसे भी सुनोग जो मुश्रिक हैं।

या'नी यहूद व नसारा व बुतपरस्त क़ौमें हमेशा तकलीफ़ देने पर आमादा रहेंगी मगर तुमको सब्र व इस्तिक़ामत के साथ ये सारे मसाइब बर्दाश्त करने होंगे।

4566. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी और उन्हें ह़ज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक गधे की पुश्त पर फ़िदक की बनी हुई एक मोटी चादर रखने के बाद सवार हुए और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को अपने पीछे बिठाया। आप (ﷺ) बनू ह़ारिष़ बिन ख़ज़रज में सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) की मिज़ाजपुर्सी के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे। ये जंगे बद्र से पहले का वाक़िया है। रास्ते में एक मजलिस से आप गुज़रे जिसमें अ़ब्दुल्लाह बिन उबय इब्ने सलूल (मुनाफ़िक़) भी मौजूद था, ये अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के ज़ाहिरी इस्लाम लाने से भी पहले का क़िस्सा है। मज्लिस में मुसलमान और मुश्रिकीन या'नी बुतपरस्त और यहूदी सब ही

٤٥٦٦- حدَّثَنَا أبو الْيمان أَخْبرَنَا شعَيبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قوْله أَخْبرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، أَنَّ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ الله عَنْهُمَا أَخْبرَهُ أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ رَكِبَ عَلَى حِمَارٍ عَلَى قَطِيفَةٍ فَدَكِيَّةٍ وَأَرْدَفَ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ وَرَاءَهُ يَعُودُ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ فِي بَنِي الْحَارِثِ بْنِ الْخَزْرَجِ قَبْلَ وَقْعَةِ بَدْرٍ، قَالَ : حَتَّى مَرَّ بِمَجْلِسٍ فِيهِ عَبْدُ الله بْنُ أَبِي ابْنُ سَلُولَ، وَذَلِكَ قَبْلَ أَنْ يُسْلِمَ عَبْدُ الله بْنُ أُبَيٍّ فَإِذَا فِي الْمَجْلِسِ أَخْلاَطٌ

त़रह के लोग थे, उन्हीं में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (रज़ि.) भी थे। सवारी की (टापों से गर्द उड़ी और) मज्लिस वालों पर पड़ी तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने चादर से अपनी नाक बन्द कर ली और बत़ौरे तह़क़ीर कहने लगा कि हम पर गर्द न उड़ाओ, इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी क़रीब पहुँच गये और उन्हें सलाम किया, फिर आप सवारी से उतर गये और मज्लिस वालों को अल्लाह की त़रफ़ बुलाया और क़ुर्आन की आयतें पढ़कर सुनाईं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल कहने लगा, जो कलाम आपने पढ़कर सुनाया है, उससे उ़म्दह कोई कलाम नहीं हो सकता। अगरचे ये कलाम बहुत अच्छा है, फिर भी हमारी मज्लिसों में आ आकर आप हमें तकलीफ़ न दिया करें, अपने घर बैठें, अगर कोई आपके पास जाए तो उसे अपनी बातें सुनाया करें। (ये सुनकर) अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (रज़ि.) ने

مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُشْرِكِينَ قَوْلِهِ عَبدَةِ الأَوْثَانِ وَالْيَهُودِ وَالْمُسْلِمِينَ وَفِي الْمَجْلِسِ عَبْدُ الله بْنُ رَوَاحَةَ، فَلَمَّا غَشِيَتِ الْمَجْلِسَ عَجَاجَةُ الدَّابَّةِ، خَمَّرَ عَبْدُ الله بْنُ أَبِي أَنْفَهُ بِرِدَائِهِ ثُمَّ قَالَ: لاَ تُغَبِّرُوا عَلَيْنَا فَسَلَّمَ رَسُولُ الله ﷺ عَلَيْهِمْ ثُمَّ وَقَفَ فَنَزَلَ فَدَعَاهُمْ إِلَى الله وَقَرَأَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ فَقَالَ عَبْدُ الله بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ أَيُّهَا الْمَرْءُ إِنَّهُ لاَ أَحْسَنَ مِمَّا تَقُولُ إِنْ كَانَ حَقًّا فَلاَ تُؤْذِينَا بِهِ فِي مَجْلِسِنَا

तरह के लोग थे, उन्हीं में अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) भी थे। सवारी की (टापों से गर्द उड़ी और) मज्लिस वालों पर पड़ी तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने चादर से अपनी नाक बन्द कर ली और बतौरे तहक़ीर कहने लगा कि हम पर गर्द न उड़ाओ, इतने में रसूलुल्लाह (ﷺ) भी क़रीब पहुँच गये और उन्हें सलाम किया, फिर आप सवारी से उतर गये और मज्लिस वालों को अल्लाह की तरफ़ बुलाया और क़ुर्आन की आयतें पढ़कर सुनाईं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल कहने लगा, जो कलाम आपने पढ़कर सुनाया है, उससे उम्दह कोई कलाम नहीं हो सकता। अगरचे ये कलाम बहुत अच्छा है, फिर भी हमारी मज्लिसों में आ आकर आप हमें तकलीफ़ न दिया करें, अपने घर बैठें, अगर कोई आपके पास जाए तो उसे अपनी बातें सुनाया करें। (ये सुनकर) अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा (रज़ि.) ने कहा, ज़रूर या रसूलल्लाह! आप हमारी मज्लिसों में तशरीफ़ लाया करें, हम उसी को पसन्द करते हैं। उसके बाद मुसलमान, मुश्रिकीन और यहूदी आपस में एक–दूसरे को बुरा–भला कहने लगे और क़रीब था कि फ़साद और लड़ाई तक नौबत पहुँच जाती लेकिन आपने उन्हें ख़ामोश और ठण्डा कर दिया और आख़िर सब लोग ख़ामोश हो गये, फिर आप (ﷺ) अपनी सवारी पर सवार होकर वहाँ से चले आए और सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ ले गये। हुज़ूर (ﷺ) ने सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) से भी इसका ज़िक्र किया कि सअ़द! तुमने नहीं सुना, अबू हुबाब! आपकी मुराद अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल से थी, क्या कह रहा था? उसने इस तरह की बातें की हैं। सअ़द बिन उ़बादा (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप उसे मुआ़फ़ फ़र्मा दें और उससे दरगुज़र करें। उस ज़ात की क़सम! जिसने आप पर किताब नाज़िल की है अल्लाह आप (ﷺ) के ज़रिये वो हक़ भेजा है जो उसने आप पर नाज़िल किया है, इस शहर (मदीना) के लोग (पहले) इस पर मुत्तफ़िक़ हो चुके थे कि इस (अ़ब्दुल्लाह बिन उबई) को ताज पहना दें और (शाही) अ़मामा उसके सर पर बाँध दें लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने उस हक़ के ज़रिये जो आपको उसने अ़ता किया है, उस बातिल को रोक दिया तो अब वो चिढ़ गया है और इस वजह से वो मामला उसने आपके साथ किया जो आपने

مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُشْرِكِينَ قَوْلِهِ عَبَدَةِ الأَوْثَانِ وَالْيَهُودِ وَالْمُسْلِمِينَ وَفِي الْمَجْلِسِ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ، فَلَمَّا غَشِيَتِ الْمَجْلِسَ عَجَاجَةُ الدَّابَّةِ، خَمَّرَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ أَنْفَهُ بِرِدَائِهِ ثُمَّ قَالَ: لاَ تُغَبِّرُوا عَلَيْنَا فَسَلَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَيْهِمْ ثُمَّ وَقَفَ فَنَزَلَ فَدَعَاهُمْ إِلَى اللهِ وَقَرَأَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنَ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ ابْنُ سَلُولَ أَيُّهَا الْمَرْءُ إِنَّهُ لاَ أَحْسَنَ مِمَّا تَقُولُ إِنْ كَانَ حَقًّا فَلاَ تُؤْذِينَا بِهِ فِي مَجْلِسِنَا ارْجِعْ إِلَى رَحْلِكَ فَمَنْ جَاءَكَ فَاقْصُصْ عَلَيْهِ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَوَاحَةَ: بَلَى. يَا رَسُولَ اللهِ فَاغْشَنَا بِهِ فِي مَجَالِسِنَا فَإِنَّا نُحِبُّ. ذَلِكَ فَاسْتَبَّ الْمُسْلِمُونَ وَالْمُشْرِكُونَ وَالْيَهُودُ، حَتَّى كَادُوا يَتَثَاوَرُونَ فَلَمْ يَزَلِ النَّبِيُّ ﷺ يُخَفِّضُهُمْ حَتَّى سَكَنُوا ثُمَّ رَكِبَ النَّبِيُّ ﷺ دَابَّةً فَسَارَ حَتَّى دَخَلَ عَلَى سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا سَعْدُ أَلَمْ تَسْمَعْ مَا قَالَ أَبُو حُبَابٍ - يُرِيدُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ - قَالَ كَذَا وَكَذَا)) قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ: يَا رَسُولَ اللهِ اعْفُ عَنْهُ وَاصْفَحْ عَنْهُ فَوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ لَقَدْ جَاءَ اللهُ بِالْحَقِّ الَّذِي أُنْزِلَ عَلَيْكَ لَقَدِ اصْطَلَحَ أَهْلُ هَذِهِ الْبُحَيْرَةِ عَلَى أَنْ يُتَوِّجُوهُ فَيُعَصِّبُونَهُ بِالْعِصَابَةِ، فَلَمَّا أَبَى اللهُ ذَلِكَ بِالْحَقِّ الَّذِي أَعْطَاكَ اللهُ شَرِقَ بِذَلِكَ

तो आपने फ़र्माया कि ठहर जाओ। मैंने देखा तो आप (ﷺ) की आँखों से आंसू बह रहे थे। (दीगर मक़ाम: 5049, 5050, 5055, 5056)

تذرفان. [أطرافه في : ٥٠٤٩، ٥٠٥٠، ٥٠٥٥، ٥٠٥٦].

आप इस वजह से रो रहे थे कि कि उम्मत ने जो कुछ किया है उस पर गवाही देनी होगी। कुछ ने कहा आपका ये रोना ख़ुशी का रोना था चूँकि आप तमाम पैग़म्बरों के गवाह बनेंगे। आयत का तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है।

बाब 10 : आयत 'इनकुन्तुम मर्ज़ा औ अला सफ़रिन'

की तफ़्सीर या'नी, और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई क़ज़ा-ए-हाजत से आया हो और पानी न हो तो पाक मिट्टी पर तयम्मुम करे। सईदा ज़मीन की ज़ाहिर सतह को कहते हैं। जाबिर ने कहा कि, ताग़ूत बड़े ज़ालिम मुश्रिक क़िस्म के सरदार लोग जिनके यहाँ जाहिलियत में लोग मुक़द्दमात ले जाते थे। एक ऐसा सरदार क़बीला जुहैना में था, एक क़बीला असलम में था और हर क़बीले में ही एक ऐसा ताग़ूत होता था। ये वही काहिन थे जिनके पास शैतान (ग़ैब की ख़बरें लेकर) आया करते थे। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने कहा कि, अल् जिब्तु से मुराद जादू है और अत् ताग़ूत से मुराद शैतान है और इक्रिमा ने कहा कि अल् जिब्तु हब्शी ज़ुबान में शैतान को कहते हैं और अत् ताग़ूत बमा'नी काहिन के आता है।

١٠ - باب قوله

قَوْلِه: ﴿وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَى أَوْ عَلَى سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ﴾ صَعِيدًا: وَجْهَ الأَرْضِ. وَقَالَ جَابِرٌ كَانَتِ الطَّوَاغِيتُ الَّتِي يَتَحَاكَمُونَ إِلَيْهَا فِي جُهَيْنَةَ وَاحِدٌ وَفِي أَسْلَمَ وَاحِدٌ وَفِي كُلِّ حَيٍّ وَاحِدٌ كُهَّانٌ، يَنْزِلُ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ وَقَالَ عُمَرُ: الْجِبْتُ: السِّحْرُ، وَالطَّاغُوتُ : الشَّيْطَانُ. وَقَالَ عِكْرِمَةُ: الْجِبْتُ بِلِسَانِ الْحَبَشَةِ شَيْطَانٌ. وَالطَّاغُوتُ : الْكَاهِنُ.

4583. हमसे मुहम्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अब्दह बिन सुलैमान ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उर्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि (मुझसे) हज़रत अस्मा (रज़ि.) का एक हार गुम हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने चन्द सहाबा (रज़ि.) को उसे तलाश करने के लिये भेजा। इधर नमाज़ का वक़्त हो गया, न लोग वुज़ू से थे और न पानी मौजूद था। इसलिये वुज़ू के बग़ैर नमाज़ पढ़ी गई इस पर अल्लाह तआला ने तयम्मुम की आयत नाज़िल की।

٤٥٨٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: هَلَكَتْ قِلاَدَةٌ لأَسْمَاءَ فَبَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ فِي طَلَبِهَا رِجَالاً فَحَضَرَتِ الصَّلاَةُ، وَلَيْسُوا عَلَى وُضُوءٍ وَلَمْ يَجِدُوا مَاءً فَصَلَّوْا وَهُمْ عَلَى غَيْرِ وُضُوءٍ فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى يَعْنِي آيَةَ التَّيَمُّمِ. [راجع: ٣٣٤]

तश्रीह : तयम्मुम का मा'नी क़स्द करना, इस्तिलाह में पानी न होने पर पाकी हासिल करने के लिये पाक मिट्टी का क़स्द करना जिसकी तफ़्सीलात मज़्कूर हो चुकी है।

बाब 11 : आयत 'व उलिल्अम्रि मिन्कुम'

की तफ़्सीर ऊलुल अम्र से बाइख़्तियार हाकिम लोग मुराद हैं।

١١ - باب قوله ﴿وأولي الأمر منكم﴾ ذوي الأمر

या'नी, ऐ ईमानवालों! अल्लाह की इताअत करो और रसूल की और अपने में से उलिल अम्र की, आगे आयत यूँ है, **फ़इन**

तनाज़अतुम फ़ी शैइन फरुद्दूहू इलल्लाहि वर्रसूलि इन्कुन्तुम तूमिनून बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि ज़ालिक ख़ैरुव्व अहसनु तावीला (अन् निसा : 59) या'नी अगर तुममें आपस में कोई इख़्तिलाफ़ पैदा हो तो इस मसले को अल्लाह और उसके रसूल की त़रफ़ लौटा दो, अगर अल्लाह और पिछले दिन पर तुम ईमान रखते हो, उसी में ख़ैर है और फ़ैसले के लिहाज़ से यही त़रीक़ा बेहतर है। इस आयत से मुक़ल्लिदीन ने तक़्लीदे शख़्सी का वुजूब षाबित किया है लेकिन दरहक़ीक़त उसमें तक़्लीदे शख़्सी की तर्दीद है जबकि इख़्तिलाफ़ के वक़्त अल्लाह व रसूल की त़रफ़ रुजूअ करने का हुक्म दिया गया है। अल्लाह की त़रफ़ से मुराद क़ुर्आन मजीद है और रसूल की त़रफ़ रुजूअ से मुराद ह़दीष़ शरीफ़ है। किसी भी इख़्तिलाफ़ के वक़्त क़ुर्आन व ह़दीष़ से फ़ैसला होगा जिसके आगे न किसी ह़ाकिम की बात चलेगी न किसी इमाम की। सिर्फ़ क़ुर्आन व ह़दीष़ को ह़ाकिमे मुत़्लक़ माना जाएगा। अइम्म-ए-मुज्तहिदीन की भी यही हिदायत है अल्लाह तआला जामिद मुक़ल्लिदों को नेक समझ अ़त़ा करे, आमीन।

4584. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको ह़ज्जाज बिन मुह़म्मद ने ख़बर दी, उन्हे इब्ने जुरैज ने, उन्हें यअ़ला बिन मुस्लिम ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत, अल्लाह की इत़ाअ़त करो और रसूल (ﷺ) की और अपने में से ह़ाकिमों की। अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा बिन क़ैस बिन अ़दी (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई थी। जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें एक मुहिम पर बत़ौरे अफ़सर रवाना किया था।

٤٥٨٤- حدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا حَجَّاجُ بْنُ مُحَمَّدٍ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ يَعْلَى بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿أَطِيعُوا اللهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الأَمْرِ مِنْكُمْ﴾ قَالَ: نَزَلَتْ فِي عَبْدِ اللهِ بْنِ حُذَافَةَ بْنِ قَيْسِ بْنِ عَدِيٍّ، إِذْ بَعَثَهُ النَّبِيُّ ﷺ فِي سَرِيَّةٍ.

तशरीह़ : रास्ते में उनको किसी बात पर ग़ुस्सा आ गया, उन्होंने अपने लोगों से कहा आग सुलगाओ, जब आग रोशन हुई तो कहा उसमें कूद जाओ। कुछ ने कहा उनकी इत़ाअ़त करनी चाहिये, कुछ ने कहा कि उनका ये हुक्म शरीअ़त के ख़िलाफ़ है। इसका मानना ज़रूरी नहीं। आख़िर ये आयत, **फ़इन तनाज़अतुम फ़ी शैइन** (अन् निसा : 59) नाज़िल हुई। ह़ाफ़िज़ ने कहा मत़लब ये है कि जब किसी मसले में इख़्तिलाफ़ हो तो किताबुल्लाह व ह़दीषे़ रसूलुल्लाह (ﷺ) की त़रफ़ रुजूअ करो इससे तक़्लीदे शख़्सी की जड़ कट गई।

बाब 12 : आयत 'फला व रब्बिक ला यूमिनून हत्ता युहक्किमूक' की तफ़्सीर या'नी,

١٢- باب قوله ﴿فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم﴾

तेरे रब की क़सम! ये लोग हरगिज़ ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक ये लो उस झगड़े में जो उनके आपस में हों, तुझको अपना ह़ाकिम न बना लें, फिर तेरे फ़ैसले को ब रज़ा व रग़बत के साथ तस्लीम कर लें।

4585. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने और उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) का एक अंसारी (षा़बित बिन क़ैस रज़ि.) स़ह़ाबी से मुक़ामे ह़र्रह की एक नाली के बारे में झगड़ा हो गया (कि उससे कौन अपने बाग़ को पहले सींचने का ह़क़ रखता

٤٥٨٥- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ. حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ. أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ قَالَ: خَاصَمَ الزُّبَيْرُ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ فِي شَرِيجٍ مِنَ الْحَرَّةِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اسْقِ

है) नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़ुबैर (रज़ि.) पहले तुम अपना बाग़ सींच लो फिर अपने पड़ौसी को जल्द पानी दे देना। इस पर उस अंसारी सहाबी (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह! इसलिये कि ये आपके फूफीज़ाद भाई हैं? ये सुनकर आँहुज़ूर (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक का रंग बदल गया और आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ज़ुबैर! अपने बाग़ को सींचो और पानी उस वक़्त तक रोके रखो कि मुँडेर भर जाए, फिर अपने पड़ौसी के लिये उसे छोड़ो। (पहले हुज़ूर ﷺ ने अंसारी के साथ अपने फ़ैसले में रिआयत रखी थी) लेकिन इस बार आप (ﷺ) ने हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) को साफ़ तौर पर उनका पूरा हक़ दे दिया क्योंकि अंसारी ने ऐसी बात कही थी कि जिससे आपका गुस्सा होना क़ुदरती था। हज़रत (ﷺ) ने अपने पहले फ़ैसले में दोनों के लिये रिआयत रखी थी। ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरा ख़याल है, ये आयात इसी सिलसिले में नाज़िल हुई थीं। तेरे परवरदिगार की क़सम! कि ये लोग तब तक ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि ये उस झगड़े में जो इनके आपस में हों आपको हाकिम न बना लें और आपके फ़ैसले को खुले दिल के साथ ब रज़ा व रग़बत तस्लीम करने के लिये तैयार न हों। (राजेअ : 2360)

- زُبَيْرُ ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ)) فَقَالَ الأَنْصَارِيُّ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ كَانَ ابْنَ عَمَّتِكَ فَتَلَوَّنَ وَجْهُهُ ثُمَّ قَالَ: ((اسْقِ يَا زُبَيْرُ ثُمَّ احْبِسِ الْمَاءَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى الْجَدْرِ. ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ)) وَاسْتَوْعَى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلزُّبَيْرِ حَقَّهُ فِي صَرِيحِ الْحُكْمِ حِينَ أَحْفَظَهُ الأَنْصَارِيُّ وَكَانَ أَشَارَ عَلَيْهِمَا بِأَمْرٍ لَهُمَا فِيهِ سَعَةٌ قَالَ الزُّبَيْرُ: فَمَا أَحْسِبُ هَذِهِ الآيَاتِ إِلاَّ نَزَلَتْ فِي ذَلِكَ ﴿فَلاَ وَرَبِّكَ لاَ يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ﴾.

[راجع: ٢٣٦٠]

तश्रीह : इस आयत में अल्लाह तआला अपनी ज़ात की क़सम खाकर इर्शाद फ़र्माता है कि उन लोगों का ईमान कभी पूरा नहीं होने वाला जब तक ये अपने आपस के झगड़ों में आपको अपना हाकिम न बना लें फिर आपके फ़ैसले को सुनकर ख़ुशी ख़ुशी तस्लीम न कर लें। मोमिन की यही निशानी है कि जिस मसले मे अगर सहीह हदीष मिल जाए बस ख़ुशी ख़ुशी उस पर अमल शुरू कर दे। अगर तमाम जहाँ के मौलवी व मुज्तहिद मिलकर उसके ख़िलाफ़ बयान करें तो करते रहें, ज़रा भी दिल में ये ख़याल न लाए कि मुज्तहिदों का मज़हब जो हम छोड़ते हैं अच्छी बात नहीं है, बल्कि दिल में बहुत ख़ुशी और सुरूर पैदा हो कि हक़ तआला ने हदीष शरीफ़ की पैरवी की तौफ़ीक़ दी और कैदानी और क़हिस्तानी के फंदे से नजात दिलवाई। (वहीदी)

बाब 13 : आयत 'फउलाइक मअ़ल्लज़ीन अन्अमल्लाहु अलैहिम' की तफ़्सीर या'नी,

١٣- باب قوله ﴿فَأُولَئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ﴾

तश्रीह : तो ऐसे लोग जिन पर अल्लाह तआला ने (अपना ख़ास) इन्आम किया है। जैसे नबियों और सिद्दीक़ीन और शुहदा और सालिहीन, उनके साथ उनका हश्र होगा। ये आयत उस वक़्त उतरी जब एक शख़्स ने आँहज़रत (ﷺ) से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझको आपसे बेहद मुहब्बत है। घर में रहूँ तो चैन नहीं आता। जब आप (ﷺ) की सूरत आकर देख लेता हूँ तो तसल्ली होती है। अब मुझको ये फ़िक्र है कि आख़िरत में आप तो आला दर्जे पर होंगे मैं अल्लाह जाने कहाँ होऊँगा। आपका जमाले मुबारक वहाँ कैसे देख सकूँगा? उसकी तसल्ली के लिये ये आयत नाज़िल हुई। हुक्म आम है और हर मुहिब्बे रसूल (ﷺ) मुसलमान इस बशारत का मिस्दाक़ है। **जअ़ल्नल्लाहु मिन्कुम**

4586. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हौशब ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो नबी मर्ज़ुल मौत में बीमार होता है तो उसे दुनिया और आख़िरत का इख़्तियार दिया जाता है। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) की मर्ज़ुल वफ़ात में जब आवाज़ गले में फंसने लगी तो मैंने सुना कि आप फ़र्मा रहे थे। उन लोगों के साथ जिन पर अल्लाह ने इन्आ़म किया है या'नी अंबिया, स़िद्दीक़ीन, शुहदा और स़ालेह़ीन के साथ, इसलिये मैं समझ गई कि आपको भी इख़्तियार दिया गया है (और आपने अल्लाहुम्म बिर्रफ़ीक़िल आ़ला) कहकर आख़िरत को पसन्द फ़र्माया (ﷺ). (राजेअ़ : 4435)

٤٥٨٦– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَوْشَبٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَا مِنْ نَبِيٍّ يَمْرَضُ إِلاَّ خُيِّرَ بَيْنَ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ))، وَكَانَ فِي شَكْوَاهُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ أَخَذَتْهُ بُحَّةٌ شَدِيدَةٌ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ)) فَعَلِمْتُ أَنَّهُ خُيِّرَ. [راجع: ٤٤٣٥]

बाब 14 : आयत 'वमा लकुम ला तुक़ातिलून फ़ी सबीलिल्लाह' अल्ख़ की तफ़्सीर या'नी,

١٤– بَابُ قَوْلِهِ: ﴿وَمَا لَكُمْ لاَ تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ إِلَى الظَّالِمِ أَهْلُهَا﴾ الآيَةَ.

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में जिहाद नहीं करते और उन लोगों की मदद के लिये नहीं लड़ते जो कमज़ोर हैं, मर्दों में से और औ़रतों और बच्चों में से,

तश्रीह़ : मक्का में जो कमज़ोर लोग क़ैद में रह गये थे उनको आज़ाद कराने की तर्ग़ीब में ये आयत नाज़िल हुई।

4587. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कि मैंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैं और मेरी वालिदा मुस्तज़्अ़फ़ीन (कमज़ोरों) में से थे। (राजेअ़ : 1357)

٤٥٨٧– حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ. قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ قَالَ: كُنْتُ أَنَا وَأُمِّي مِنَ الْمُسْتَضْعَفِينَ. [راجع: ١٣٥٧]

उनकी वालिदा का नाम लुबाबा बिन्ते ह़ारिष़ (रज़ि.) था जो ह़ज़रत मैमूना (रज़ि.) की बहन थीं। ये दोनों दिल से मुसलमान हो गये थे मगर मक्का में काफ़िरों के हाथों में फंसे हुए थे, हिजरत नहीं कर सकते थे, उनके बारे में ये आयत नाज़िल हुई।

4588. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैयका ने कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने आयत 'इल्लल्मुस्तज़्अ़फ़ीन मिनर्रिजालि वन्निसाइ वल्वालिदानि' की तिलावत की और फ़र्माया कि मैं और मेरी वालिदा भी उन लोगों में से थीं, जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने मा'ज़ूर रखा था। और ह़ज़रत

٤٥٨٨– حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ. أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ تَلاَ: ﴿إِلاَّ الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ﴾ قَالَ: كُنْتُ أَنَا وَأُمِّي مِمَّنْ عَذَرَ اللهُ. وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ حَصِرَتْ

तश्रीह : क़ैस बिन मुस्लिम की दूसरी रिवायत में बिल यक़ीन मज़्कूर है कि वो जुम्आ ही का दिन था। ये आयत हज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर नाज़िल हुई थी जो पैग़म्बर (ﷺ) का आख़िरी हज्ज था जिसके तीन माह बाद आप (ﷺ) दुनिया से तशरीफ़ ले गये। हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ये आयत अ़रफ़ा की शाम को जुम्अ़े के रोज़ उतरी थी। उसके बाद हलाल हराम का कोई हुक्म नहीं उतरा। आप (ﷺ) की वफ़ात से नौ रात पहले आख़िरी आयत **वत्तक़ू यौमन तुरजऊ़ना फ़ीही इलल्लाह** नाज़िल हुई जिस दिन ये आयत उतरी उस दिन पाँच ईदें जमा थीं। जुम्अ़े का दिन, अ़रफ़ा का दिन, यहूद की ईद, नस़ारा की ईद, मजूस की ईद। इस आयत से उन लोगों को सबक़ लेना चाहिये जो राय और क़यास पर चलते हैं और नस़ को छोड़ते हैं गोया उनके नज़दीक दीन कामिल नहीं हुआ। नऊ़ज़ुबिल्लाह।

बाब 3 : आयत 'फलम् तजिदू माअन फतयम्ममू सइदन तय्यिबा' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قَوْلِهِ :

﴿فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا﴾ تَيَمَّمُوا تَعَمَّدُوا. آمِّينَ عَامِدِينَ أَمَّمْتُ وَتَيَمَّمْتُ وَاحِدٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَمَسْتُمْ وَتَمَسُّوهُنَّ وَاللاَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ، وَالإِفْضَاءُ : النِّكَاحُ.

फिर अगर तुमको पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो, तयम्ममू या'नी तअ़म्मदु इसीलिये आता है या'नी क़स्द करो आमीन या'नी आ़मिदीन क़स्र करने वाले अम्ममतु और तयम्ममतु एक ही मा'नी में है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि लमस्तुम, तम्सूहुन्ना, वल्लाती दख़लतुम बिहिन्ना और वल् इफ़्ज़ाऊ सबके मा'नी औरत से हमबिस्तरी करने के हैं।

٤٦٠٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ - أَوْ بِذَاتِ الْجَيْشِ - إِنْقَطَعَ عِقْدٌ لِي فَأَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلَى الْتِمَاسِهِ وَأَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ فَأَتَى النَّاسُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ فَقَالُوا: أَلاَ تَرَى مَا صَنَعَتْ عَائِشَةُ أَقَامَتْ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَبِالنَّاسِ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ فَجَاءَ أَبُوبَكْرٍ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ وَاضِعٌ رَأْسَهُ عَلَى فَخِذِي قَدْ نَامَ فَقَالَ : حَبَسْتِ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَالنَّاسَ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ

4607. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद क़ासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सफ़र मे हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ रवाना हुए। जब हम मुक़ामे बैदा या ज़ातुल जैश तक पहुँचे तो मेरा हार गुम हो गया। इसलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे तलाश करवाने के लिये वहीं क़याम किया और सहाबा (रज़ि.) ने भी आप (ﷺ) के साथ क़याम किया। वहाँ कहीं पानी नहीं था और सहाबा (रज़ि.) के साथ भी पानी नहीं था। लोग अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास आए और कहने लगे कि, मुलाहिज़ा नहीं फ़र्माते, आइशा (रज़ि.) ने क्या कर रखा है और हुज़ूर (ﷺ) को यहीं ठहरा लिया और हमें भी, हालाँकि यहाँ कहीं पानी नहीं है और न किसी के पास पानी है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) (मेरे यहाँ) आए। हुज़ूर (ﷺ) सरे मुबारक मेरी रान पर रखकर सो गये थे और कहने लगे तुमने आँहज़रत (ﷺ) को और सबको रोक लिया, हालाँकि यहाँ कहीं पानी नहीं है। और न ही किसी के साथ पानी है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि

أجفَاتِ الْقِدْرِ: إِذَا غَلَتْ فَعَلاهَا الزَّبَدُ ثُمَّ تَسْكُنُ فَيَذْهَبُ الزَّبَدُ بِلاَ مَنْفَعَةٍ فَكَذَلِكَ يُمَيِّزُ الْحَقُّ مِنَ الْبَاطِلِ. ﴿الْمِهَادُ﴾ الْفِرَاشُ ﴿يَدْرَؤُونَ﴾: يَدْفَعُونَ دَرَأْتُهُ عَنِّي دَفَعْتُهُ. ﴿سَلاَمٌ عَلَيْكُمْ﴾ : أَيْ يَقُولُونَ : سَلاَمٌ عَلَيْكُمْ. ﴿وَإِلَيْهِ مَتَابِ﴾ تَوْبَتِي. ﴿أَفَلَمْ يَيْأَسْ﴾: لَمْ يَتَبَيَّنْ. ﴿قَارِعَةٌ﴾ : دَاهِيَةٌ. ﴿فَأَمْلَيْتُ﴾ : أَطَلْتُ مِنَ الْمَلِيِّ وَالْمِلاَوَةِ وَمِنْهُ. ﴿مَلِيًّا﴾: وَيُقَالُ لِلْوَاسِعِ الطَّوِيلِ مِنَ الأَرْضِ مَلًى مِنَ الأَرْضِ. ﴿أَشَقُّ﴾ : أَشَدُّ مِنَ الْمَشَقَّةِ. ﴿مُعَقِّبَ﴾: مُغَيِّرٌ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿مُتَجَاوِرَاتٌ﴾ : طَيِّبُهَا وَخَبِيثُهَا السِّبَاخُ. ﴿صِنْوَانٌ﴾ : النَّخْلَتَانِ : أَوْ أَكْثَرُ فِي أَصْلٍ وَاحِدٍ. ﴿وَغَيْرُ صِنْوَانٍ﴾ : وَحْدَهَا. ﴿بِمَاءٍ وَاحِدٍ﴾ : كَصَالِحِ بَنِي آدَمَ وَخَبِيثِهِمْ أَبُوهُمْ وَاحِدٌ. ﴿السَّحَابَ الثِّقَالَ﴾ : الَّذِي فِيهِ الْمَاءُ. ﴿كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ﴾ : يَدْعُو الْمَاءَ بِلِسَانِهِ وَيُشِيرُ إِلَيْهِ بِيَدِهِ فَلاَ يَأْتِيهِ أَبَدًا. ﴿سَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا﴾ تَمْلأُ بَطْنَ وَادٍ. ﴿زَبَدًا رَابِيًا﴾: زَبَدُ السَّيْلِ: خَبَثُ الْحَدِيدِ وَالْحِلْيَةِ.

हक़ बातिल से इसी तरह जुदा हो जाता है अल्मिदाह बिछौना। यदरून धकेलते हैं दूर करते हैं ये दरातुहू से निकला है या'नी मैंने उसको दूर किया दफ़ा कर दिया। सलाम अलैकुम या'नी फ़रिश्ते मुसलमानों को कहते जाएँगे तुम सलामत रहो। व इलैहि मताब में उसी की दरगाह में तौबा करता हूँ। अ फ़लम यब्अस किया उन्होंने नहीं जाना। क़ारिअत आफ़त मुसीबत। फ़अम्लयता मैंने ढीला छोड़ा मुह्लत दी ये लफ़्ज़ मल्ली और मिलावत से निकला है। उसी से निकला है जो जिब्राईल की हदीष में है। फ़लबिस्तु मलिय्या (या क़ुर्आन में है) वहजुर्नी मलिय्या और कुशादा लम्बी ज़मीन को मल्ली कहते हैं। अशुक्कु अफ़्अलुल तफ़्ज़ील का सैग़ा है मुशक्क़त से या'नी बहुत सख़्त। मुअक़्क़ब ला मुअक़्क़ब लिहुक्मिही में या'नी नहीं बदलने वाला और मुजाहिद ने कहा। मुतजाविरात का मा'नी ये है कि कुछ क़िर्'अे उम्दह क़ाबिले ज़राअत हैं कुछ ख़राब शुर खारे हैं। सिन्वान वो खजूर के पेड़ जिनकी जड़ मिली हुई हो (एक ही जड़ पर खड़े हों) ग़ैरा सिन्वान अलग अलग जड़ पर सब एक ही पानी से उगते हैं (एक ही हवा से एक ही ज़मीन में आदमियों की भी यहो मिषाल है कोई अच्छा कोई बुरा हालाँकि सब एक बाप आदम (अलैहि.) की औलाद हैं। अस्सिहाबुल षिक़ाल वो बादल जिनमें पानी भरा हुआ हो और वो पानी के बोझ से भारी–भरकम हों। कबासिति कफ़्फ़ैहि या'नी उस शख़्स की तरह जो दूर से हाथ फैलाकर पानी को ज़ुबान से बुलाए हाथ से उसकी तरफ़ इशारा करे इस सूरत में पानी कभी उसकी तरफ़ नहीं आएगा। सालत औदियतुन बिकदरिहा या'नी नाले अपने अंदाज़ से बहते हैं। या'नी पानी भरकर ज़ब्दा राबिया से मुराद बहते पानी का फैन झाग ज़बद मिष्लुहू से लोहे, ज़ेवरात वग़ैरह का फैन झाग मुराद है। लफ़्ज़े मुअक़्क़िबात से मुराद ये है कि रात के फ़रिश्ते अलग और दिन के अलग हैं।

जैसे दूसरी हदीष में है कि रात दिन के फ़रिश्ते अस्र और सुबह की नमाज़ में जमा हो जाते हैं। तबरी ने निकाला कि हज़रत उष्मान ने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा आदमी पर कितने फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। आपने फ़र्माया कि हर आदमी पर दस फ़रिश्ते सुबह को और दस रात को मुतअय्यन रहते हैं।

١ – بَاب قَوْلِهِ : ﴿اللهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَى وَمَا تَغِيضُ

बाब 1 : आयत 'अल्लाहु यअलमु मा तहमिलु' की तफ़्सीर या'नी,

अल्लाह को इल्म है उसका जो कुछ किसी मादा के हमल

में होता है और जो कुछ उनके रह्म में कमी-बेशी होती रहती है। ग़ीज़ अय नुक़िस कम किया गया।

الأَرْحَامُ﴾ غِيضَ : نُقِصَ

4697. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मअ़न बिन ईसा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ग़ैब की पाँच कुँजियाँ हैं जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि कल क्या होने वाला है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि औरतों के रह्म में क्या कमी बेशी होती रहती है, अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि बारिश कब बरसेगी, कोई शख़्स नहीं जानता कि उसकी मौत कहाँ होगी और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब क़ायम होगी। (राजेअ : 1039)

٤٦٩٧- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا مَعْنٌ، قَالَ : حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ، لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ اللهُ لاَ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الأَرْحَامُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ. وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلاَّ اللهُ)). [راجع: ١٠٣٩]

तश्रीह : इस आयत से षाबित हुआ कि इल्मे ग़ैब ख़ास अल्लाह के लिये है जो किसी ग़ैर के लिये इल्मे ग़ैब का अ़क़ीदा रखता है वो झूठा है। पैग़म्बरों को भी इल्मे ग़ैब ह़ासिल नहीं उनको जो कुछ अल्लाह चाहता है वह्य के ज़रिये मा'लूम करा देता है। इसे ग़ैब दानी नहीं कहा जा सकता। ह़मल की कमी बेशी का मत़लब ये है कि पेट में एक बच्चा है या दो बच्चे या तीन या चार।

सूरह इब्राहीम की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

[١٤] سُورَةُ إِبْرَا ــ ـ ـَ عَلَيْهِ الصَّلاَةُ وَالسَّلاَمُ (بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ).

तश्रीह : सूरह इब्राहीम मक्की है जिसमें बावन (52) आयात सात (7) रुकूअ़ और 831 कलिमात और 3434 ह़ुरूफ़ हैं। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) दुनिया के अ़ज़ीमतरीन तारीख़ी इंसान हैं जिनसे दो बड़े ख़ानदान ज़ुहूर पज़ीर हुए जिनको बनी इस्राईल और बनी इस्माईल से याद किया जाता है। ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) को आदमे षालिष भी कहा गया है। यहूद और नस़ारा और मुसलमान तीनों इनको अपना जद्दे अमजद (पूर्वज) तस़व्वुर करते हैं।

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा ह़ाद का मा'नी बुलाने वाला, हिदायत करने वाला (नबी व रसूल मुराद हैं) और मुजाहिद ने कहा स़दीद का मा'नी पीप और लहू और सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा उज़्कुरू निअ़मतल्लाहि अ़लैकुम का मा'नी ये है कि अल्लाह की जो नेअ़मतें तुम्हारे पास हैं उनको याद करो और जो जो अगले वाक़ियात उसकी क़ुदरत के हुए हैं और मुजाहिद ने कहा मिन कुल्लि मा सअल्तुमूहु का मा'नी ये है कि जिन जिन चीज़ों की तुमने रग़्बत की यब्ग़ूनहा इवजा इसमें कजी पैदा करने की तलाश करते रहते हैं वइज़ तअज़्ज़ना

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ هَادٍ : دَاعٍ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ صَدِيدٌ : قَيْحٌ وَدَمٌ. وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ : اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ أَيَادِيَ اللهِ عِنْدَكُمْ وَأَيَّامَهُ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ : مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ رَغِبْتُمْ إِلَيْهِ فِيهِ، يَبْغُونَهَا عِوَجًا : يَلْتَمِسُونَ لَهَا عِوَجًا. وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ : أَعْلَمَكُمْ آذَنَكُمْ. رَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي

4721. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने, कहा हमसे आ'मश ने, कहा कि मुझसे इब्राहीम नख़ई ने बयान किया, उनसे अ़ल्क़मा ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक खेत में हाज़िर था। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त खजूर के एक तने पर टेक लगाये हुए थे कि कुछ यहूदी उस त़रफ़ से गुज़रे। किसी यहूदी ने अपने दूसरे साथी से कहा कि इनसे रूह़ के बारे में पूछो। उनमें से किसी ने इस पर कहा कि ऐसा क्यूँ करते हो? दूसरा यहूदी बोला, कहीं वो कोई ऐसी बात न कह दें, जो तुमको नापसंद हो राय इस पर ठहरी कि रूह़ के बारे में पूछना ही चाहिये। चुनाँचे उन्होंने आपसे इसके बारे में सवाल किया। आँह़ज़रत (ﷺ) थोड़ी देर के लिये ख़ामोश हो गये और उनकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। मैं समझ गया कि इस वक़्त आप (ﷺ) पर वह़्य उतर रही है। इसलिये मैं वहीं खड़ा रहा। जब वह़्य ख़त्म हुई तो आप (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की, और ये आपसे रूह़ के बारे में सवाल करते हैं। आप कह दें कि रूह़ मेरे परवरदिगार के हुक्म ही से है और तुम्हें इ़ल्म तो थोड़ा ही दिया गया है। (राजेअ़ : 125)

٤٧٢١- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَا أَنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَرْثٍ وَهُوَ مُتَّكِئٌ عَلَى عَسِيبٍ، إِذْ مَرَّ الْيَهُودُ فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: سَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ؟ فَقَالَ: مَا رَابَكُمْ إِلَيهِ؟ وَقَالَ بَعْضُهُمْ لاَ يَسْتَقْبِلُكُمْ بِشَيْءٍ تَكْرَهُونَهُ فَقَالُوا سَلُوهُ فَسَأَلُوهُ عَنِ الروحِ فَأَمْسَكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِمْ شَيْئًا فَعَلِمْتُ أَنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ فَقُمْتُ مَقَامِي فَلَمَّا نَزَلَ الْوَحْيُ قَالَ: ﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً﴾.

[راجع: ١٢٥]

तश्रीह : रूह़ को अम्रे रब या'नी परवरदिगार का हुक्म फ़र्माया और उसकी ह़क़ीक़त बयान नहीं की क्योंकि अगले पैग़म्बरों ने भी उसकी ह़क़ीक़त बयान नहीं की और यहूदियों ने बाहम यही कहा कि अगर रूह़ की ह़क़ीक़त बयान न करें तो ये बेशक पैग़म्बर है। अगर बयान करें तो हम समझ लेंगे कि ह़कीम हैं पैग़म्बर नहीं। इब्ने कष़ीर ने कहा रूह़ एक माद्दा है लत़ीफ़ हवा की त़रह़ और बदन के हर जुज़ में इस त़रह़ हुलूल किये हुए है जैसे पानी हरी भरी शाख़ों में। ये रूह़े ह़ैवानी की ह़क़ीक़त है और रूह़े इंसानी या'नी नफ़्से नात़िक़ा वो बदन से मुता'ल्लिक़ है हुक्मे इलाही से जब मौत आती है तो ये ता'ल्लुक़ टूट जाता है। तफ़्सील के लिये ह़ज़रत इमाम इब्ने क़य्यिम (रह़) की किताबुर्रूह़ का मुत़ालआ किया जाए। सनद में मज़्कूर अ़ल्क़मा ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के आज़ादकर्दा गुलाम हैं। अनस बिन मालिक (रज़ि.) और अपनी वालिदा से रिवायत करते हैं। उनसे मालिक बिन अनस (रज़ि.) और सुलैमान बिन हिलाल ने रिवायत की है।

बाब 14 : आयत 'व ला तज्हर बिस़लातिक' की तफ़्सीर या'नी,

١٤- باب قوله ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾

और आप नमाज़ में न तो बहुत पुकारकर पढ़ें और न (बिल्कुल) चुपके ही चुपके पढ़ें।

नस़रानी या मजूसी बना लेते हैं। उसकी मिस़ाल ऐसी है जैसी जानवर का बच्चा स़हीह़ सालिम पैदा होता है क्या तुमने उन्हें नाक कान कटा हुआ कोई बच्चा देखा है। उसके बाद आपने इस आयत की तिलावत की, अल्लाह की इस फ़ितरत का इत्तिबाअ़ करो जिस पर उसने इंसान को पैदा किया है, अल्लाह की बनाई हुई फ़ितरत में कोई तब्दीली मुम्किन नहीं। यही सीधा दीन है। (राजेअ़: 1358)

فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ أَوْ يُنَصِّرَانِهِ أَوْ يُمَجِّسَانِهِ، كَمَا تُنْتَجُ الْبَهِيمَةُ بَهِيمَةً جَمْعَاءَ، هَلْ تُحِسُّونَ فِيهَا مِنْ جَدْعَاءَ؟ ثُمَّ يَقُولُ: ﴿فِطْرَةَ اللهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا، لاَ تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللهِ، ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ﴾)). [راجع: ١٣٥٨]

सूरह लुक़्मान की तफ़्सीर

[٣١] سُورَةُ لُقْمَانَ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ये सूरत मक्की है। इसमें तीस आयात और तीन रुकूअ़ हैं।

बाब 1 : आयत 'ला तुश्रिक बिल्लाहि' की तफ़्सीर

١- باب قوله ﴿لاَ تُشْرِكْ بِاللهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

या'नी अल्लाह का शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क करना बहुत बड़ा ज़ुल्म है।

4776. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत, जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान के साथ ज़ुल्म की मिलावट नही की, नाज़िल हुई तो अस़्ह़ाबे रसूल (ﷺ) बहुत घबराए और कहने लगे कि हम में कौन ऐसा होगा जिसने अपने ईमान के साथ ज़ुल्म की मिलावट नहीं की होगी? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि आयत में ज़ुल्म से ये मुराद नहीं है। तुमने लुक़्मान (अ़लैहि.) की वो नस़ीह़त नहीं सुनी जो उन्होंने अपने बेटे को की थी कि, बेशक शिर्क करना बड़ा भारी ज़ुल्म है। (राजेअ़ : 32)

٤٧٧٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ ﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ شَقَّ ذَلِكَ عَلَى أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَقَالُوا: أَيُّنَا لَمْ يَلْبِسْ إِيمَانَهُ بِظُلْمٍ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((إِنَّهُ لَيْسَ بِذَاكَ، أَلاَ تَسْمَعُ إِلَى قَوْلِ لُقْمَانَ لاِبْنِهِ ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾. [راجع: ٣٢]

बाब 2 : आयत 'इन्नल्लाह इन्दहू इल्मुस्साअ़ति' की तफ़्सीर

٢- باب قَوْلِهِ : ﴿إِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾

या'नी क़यामत (के वाक़ेअ़ होने की तारीख़) की ख़बर स़िर्फ़ अल्लाह पाक ही को है।

4777. मुझसे इस्ह़ाक़ ने बयान किया, उनसे जरीर ने, उनसे अबू ह़य्यान ने, उनसे अबू ज़ुरआ़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह

٤٧٧٧- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ عَنْ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي حَيَّانَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

है तअज्जुबम्मिन्ना कालहुल्हिबरू व तस्दीक़ल्लहू मा मिन कल्बिन इल्ला व हुव बैन इस्बअयनि मिन अस़ाबिइर्रहमान अतानिल्लैलत रब्बी फ़ी अहसिन स़ूरतिन फवज़अ यदहू बैन कतफ़य हत्ता वजत्तु बुर्द अनामिलिही बैन षदई अनामिल उँगलियों की पोरें। ग़र्ज़ उँगलियों का इष्बात परवरदिगार के लिये ऐसा ही है जैसे वज्हुन और यदैनि और क़दमुन और रजुलुन और जम्बुन वग़ैरह का और अहले ह़दीष़ का अ़क़ीदा उनकी निस्बत ये है कि ये सब अपने मा'नी ज़ाहिरी पर मह़मूल हैं लेकिन उनकी ह़क़ीक़त अल्लाह ही जानता है और मुतकल्लिमीन उन चीज़ों की तावील करते हैं क़ुदरत वग़ैरह से। मैं कहता हूँ मुह़म्मद बिन स़ल्त रावी ने इस ह़दीष़ के रिवायत करते वक़्त छुँगलिया की त़रफ़ इशारा किया फिर पास वाली उँगली की त़रफ़ फिर उसके पास वाली उँगली की त़रफ़, यहाँ तक कि अंगूठे तक पहुँचे और उससे अहले तावील का मज़हब रद्द होता है। (वह़ीदी)

बाब आयत 'वल्अर्ज़ु जमीअन क़बज़्तुहू यौमल्क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुन बियमीनिही सुब्हानहू व तआला अम्मा युश्रिकून' की तफ़्सीर,

باب ﴿وَالأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾.

4812. हमसे सईद बिन ऊ़फ़ैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ालिद बिन मुसाफ़िर ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे अबू सलमा और ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना आप फ़र्मा रहे थे कि क़यामत के दिन अल्लाह सारी ज़मीन को अपनी मुट्ठी में लेगा और आसमान को अपने दाहिने हाथ में लपेट लेगा। फिर फ़र्माएगा, आज हुकूमत स़िर्फ़ मेरी है। दुनिया के बादशाह आज कहाँ हैं? (दीगर मक़ाम : 6519, 7382, 7413)

٤٨١٢- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدِ بْنِ مُسَافِرٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((يَقْبِضُ اللهُ الأَرْضَ، وَيَطْوِي السَّمَاوَاتِ بِيَمِينِهِ، ثُمَّ يَقُولُ : أَنَا الْمَلِكُ، أَيْنَ مُلُوكُ الأَرْضِ؟)).

[أطرافه في : ٦٥١٩، ٧٣٨٢، ٧٤١٣].

बाब 4 : आयत 'व नुफ़िख़ फिस्सूरि फ़स़इक़ मन फिस्समावात' की तफ़्सीर में,

٤- باب قَوْلِهِ:

﴿وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الأَرْضِ إِلاَّ مَنْ شَاءَ اللهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ﴾.

और स़ूर फूँका जाएगा तो सब बेहोश हो जाएँगे जो आसमानों और ज़मीनों में हैं सिवा उसके जिसको अल्लाह चाहे, फिर दोबारा स़ूर फूँका जाएगा तो फिर अचानक सबके सब देखते हुए उठ खड़े होंगे।

4813. मुझसे ह़सन ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रह़ीम ने ख़बर दी, उन्हें ज़करिया बिन अबी ज़ायदा ने, उन्हें आ़मिर ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आख़िरी मर्तबा स़ूर फूँके जाने के बाद सबसे पहले अपना सर

٤٨١٣- حدثني الْحَسَنُ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ خَلِيلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحِيمِ عَنْ زَكَرِيَّا بْنِ أَبِي زَائِدَةَ عَنْ عَامِرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ

उठाने वाला मैं होऊँगा लेकिन उस वक़्त मैं ह़ज़रत मूसा (अ़लैहि.) को देखूँगा कि अ़र्श के साथ लिपटे हुए हैं, अब मुझे नहीं मा'लूम कि वो पहले ही से इसी त़रह़ थे या दूसरे सूर के बाद (मुझसे पहले उठकर अ़र्शे इलाही को थाम लेंगे) (राजेअ़ : 2411)

قَالَ: ((إِنِّي أَوَّلُ مَنْ يَرْفَعُ رَأْسَهُ بَعْدَ النَّفْخَةِ الآخِرَةِ، فَإِذَا أَنَا بِمُوسَى مُتَعَلِّقٌ بِالْعَرْشِ فَلاَ أَدْرِي، أَكَذَلِكَ كَانَ أَمْ بَعْدَ النَّفْخَةِ)). [راجع: ٢٤١١]

4814. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने अबू स़ालेह से सुना और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, दोनों सूरों के फूँके जाने का दरम्यानी अ़र्सा चालीस है। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के शागिर्दों ने पूछा, क्या चालीस दिन मुराद हैं? उन्होंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं फिर उन्होंने पूछा चालीस साल? उस पर भी उन्होंने इंकार किया। फिर उन्होंने पूछा चालीस महीने? उसके बारे में भी उन्होंने कहा कि मुझको ख़बर नहीं और हर चीज़ फ़ना हो जाएगी, सिवा रीढ़ की हड्डी के कि उसी से सारी मख़्लूक़ दोबारा बनाई जाएगी। (दीगर मक़ाम : 4935)

٤٨١٤ - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي. قَالَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ سَمِعْتُ أَبَا صَالِحٍ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَ النَّفْخَتَيْنِ أَرْبَعُونَ))، قَالُوا: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ أَرْبَعُونَ يَوْمًا؟ قَالَ أَبَيْتُ قَالَ: أَرْبَعُونَ سَنَةً قَالَ أَبَيْتُ قَالَ : أَرْبَعُونَ شَهْرًا : قَالَ أَبَيْتُ، وَيَبْلَى كُلُّ شَيْءٍ مِنَ الإِنْسَانِ إِلاَّ عَجْبَ ذَنَبِهِ فِيهِ يُرَكَّبُ الْخَلْقُ.

[طرفه في : ٤٩٣٥].

इस रिवायत में यूँ ही है लेकिन इब्ने मर्वदवैह की रिवायत में चालीस साल मज़्कूर हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से भी ऐसा ही मन्क़ूल है। ह़लीमी ने कहा अकष़र रिवायतें इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि दोनों नफ़्ख़ों में चालीस बरस का फ़ास़ला होगा।

सूरतुल मोमिन

[٤٠] سورة ﴿الْمُؤْمِنُ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुजाहिद ने कहा ह़ामीम का मा'नी अल्लाह को मा'लूम है जैसे दूसरी सूरतों में जो ह़ुरूफ़े मुक़त्तआत शुरू में आए हैं उनके बारे मे ह़क़ीक़ी मआनी स़िर्फ़ अल्लाह ही को मा'लूम हैं। कुछ ने कहा ह़ामीम क़ुर्आन या सूरत का नाम है जैसे शुरैह़ इब्ने अबी औफ़ा अ़ब्सी इस शेअ़र में कहता है जबकि नेज़ा जंग में चलने लगा। पढ़ता है ह़ामीम पहले पढ़ना था। अत्तौल के मा'नी एह़सान और फ़ज़्ल करना। दाख़िरीन के मा'नी ज़लील व ख़्वार होकर। ह़ज़रत मुजाहिद (रह़) ने कहा उदऊकुम इलन्नजात से ईमान मुराद है। लयसा लहू दअ़वह् या'नी बुत किसी की दुआ क़ुबूल नहीं कर सकता। यस्जरून के मा'नी वो दोज़ख़ के ईंधन बनेंगे। तम्रहून के मा'नी तुम इतराते थे। और अ़लाअ बिन ज़ियाद

قَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿حم﴾ مَجَازُهَا مَجَازُ أَوَائِلِ السُّوَرِ، وَيُقَالُ : بَلْ هُوَ اسْمٌ لِقَوْلِ شُرَيْحِ بْنِ أَبِي أَوْفَى الْعَبْسِيِّ.

يُذَكِّرُنِي حَامِيمَ وَالرُّمْحُ شَاجِرُ
فَهَلاَّ تَلاَ حَامِيمَ قَبْلَ التَّقَدُّمِ

الطَّوْلُ: التَّفَضُّلُ. دَاخِرِينَ خَاضِعِينَ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ : ﴿إِلَى النَّجَاةِ﴾ الإِيمَانُ. لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ يَعْنِي الْوَثَنَ. ﴿يُسْجَرُونَ﴾ تُوقَدُ بِهِمُ النَّارُ ﴿تَمْرَحُونَ﴾ تَبْطَرُونَ. وَكَانَ

रोये। आँहज़रत (ﷺ) से तुमने तीन मर्तबा सवाल में इसरार किया, लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने तुम्हें किसी मर्तबा जवाब नहीं दिया। हज़रत उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने अपने ऊँट को हरकत दी और लोगों से आगे बढ़ गया। मुझे डर था कि कहीं मेरे बारे में क़ुर्आन मजीद की कोई आयत न नाज़िल हो। अभी थोड़ी देर ही हुई थी कि एक पुकारने वाले की आवाज़ मैंने सुनी जो मुझे ही पुकार रहा था। मैंने कहा कि मुझे तो डर था ही कि मेरे बारे में कोई आयत न नाज़िल हो जाए। मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सलाम किया, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुझ पर आज रात एक सूरत नाज़िल हुई है जो मुझे इस सारी कायनात से ज़्यादा अज़ीज़ है जिस पर सूरज तुलूअ होता है फिर आपने सूरह फ़तह की तिलावत फ़र्माई। (राजेअ : 4177)

الْخَطَّابِ: ثَكِلَتْ أُمُّ عُمَرَ نَزَرْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ كُلُّ ذَلِكَ لاَ يُجِيبُكَ، قَالَ عُمَرُ: فَحَرَّكْتُ بَعِيرِي ثُمَّ تَقَدَّمْتُ أَمَامَ النَّاسِ وَخَشِيتُ أَنْ يُنْزَلَ فِيَّ الْقُرْآنُ فَمَا نَشِبْتُ أَنْ سَمِعْتُ صَارِخًا يَصْرُخُ بِي فَقُلْتُ لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ يَكُونَ نَزَلَ فِيَّ قُرْآنٌ، فَجِئْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ، فَقَالَ: ((لَقَدْ أُنْزِلَتْ عَلَيَّ اللَّيْلَةَ سُورَةٌ لَهِيَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ. ثُمَّ قَرَأَ : ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا﴾)). [راجع: ٤١٧٧]

4834. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने क़तादा से सुना और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि सूरह फ़तह सुलह हुदैबिया के बारे में नाज़िल हुई। (राजेअ : 4182)

٤٨٣٤ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ﴿إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا﴾ قَالَ: الْحُدَيْبِيَةُ. [راجع: ٤١٧٢]

4835. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे मुआविया बिन क़ुर्रह ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़तह मक्का के दिन सूरह फ़तह ख़ूब ख़ुश इल्हानी से पढ़ी। मुआविया बिन क़ुर्रह ने कहा कि अगर मैं चाहूँ कि तुम्हारे सामने आँहज़रत (ﷺ) की इस मौक़े पर तर्ज़े क़िरात की नक़ल करूँ तो कर सकता हूँ। (राजेअ : 4281)

٤٨٣٥ - حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ قُرَّةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ قَالَ: قَرَأَ النَّبِيُّ ﷺ، يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ سُورَةَ الْفَتْحِ فَرَجَّعَ فِيهَا، قَالَ مُعَاوِيَةُ: لَوْ شِئْتُ أَنْ أَحْكِيَ لَكُمْ قِرَاءَةَ النَّبِيِّ ﷺ لَفَعَلْتُ. [راجع: ٤٢٨١]

बाब 2 : आयत 'लियग़्फ़िरुल्लाहु लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन ज़म्बिक व मा तअख़्ख़र' की तफ़्सीर

٢- باب

﴿لِيَغْفِرَ لَكَ اللهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا﴾

या'नी, ताकि अल्लाह आपकी सब अगली पिछली ख़ताएँ मुआफ़ कर दे और आप पर एहसानात की तकमील कर दे और आपको सीधे रास्ते पर ले चले।

4836. हमसे सदक़ा बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, उन्हें इब्ने उयैना ने ख़बर दी, उनसे ज़ियाद ने बयान किया और उन्होंने मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ मे रात भर खड़े रहे यहाँ तक कि आपके दोनों पैर सूज गये। आपसे अ़र्ज़ किया गया कि अल्लाह तआ़ला ने तो आपकी अगली पिछली तमाम ख़ताएँ मुआ़फ़ कर दी हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ? (राजेअ: 1130)

٤٨٣٦- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، حَدَّثَنَا زِيَادٌ أَنَّهُ سَمِعَ الْمُغِيرَةَ يَقُولُ: قَامَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى تَوَرَّمَتْ قَدَمَاهُ، فَقِيلَ لَهُ غَفَرَ اللهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ؟ قَالَ : ((أَفَلاَ أَكُونُ عَبْدًا شَكُورًا)). [راجع: ١١٣٠]

4837. हमसे हसन बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यह्या ने बयान किया, उन्हें हयवह ने ख़बर दी, उन्हें अबुल अस्वद ने, उन्होंने उ़र्वा से सुना और उन्होंने हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) रात की नमाज़ में इतना लम्बा क़याम करते कि आपके क़दम फट जाते। हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने एक बार अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप इतनी ज़्यादा मुशक़्क़त क्यूँ उठाते हैं। अल्लाह तआ़ला ने तो आपकी अगली पिछली सारी ख़ताएँ मुआ़फ़ कर दी हैं। आपने फ़र्माया क्या फिर मैं शुक्रगुज़ार बन्दा बनना पसंद न करूँ। उम्र की आख़िरी हिस्सा में (जब लम्बा क़याम दुश्वार हो गया तो) आप बैठकर रात की नमाज़ पढ़ते और जब रुकूअ का वक़्त आता तो खड़े हो जाते (और तक़रीबन तीस या चालीस आयतें और पढ़ते) फिर रुकूअ करते। (राजेअ: 1118)

٤٨٣٧- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا حَيْوَةُ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ سَمِعَ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: أَنَّ نَبِيَّ اللهِ كَانَ يَقُومُ مِنَ اللَّيْلِ حَتَّى تَتَفَطَّرَ قَدَمَاهُ، فَقَالَتْ عَائِشَةُ : لِمَ تَصْنَعُ هَذَا يَا رَسُولَ اللهِ وَقَدْ غَفَرَ اللهُ لَكَ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ؟ قَالَ : ((أَفَلاَ أُحِبُّ أَنْ أَكُونَ عَبْدًا شَكُورًا)). فَلَمَّا كَثُرَ لَحْمُهُ صَلَّى جَالِسًا فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْكَعَ قَامَ فَقَرَأَ ثُمَّ رَكَعَ.

[راجع: ١١١٨]

बाब 3 : आयत 'इन्ना अर्सल्नाक शाहिदव्वं मुबश्शिरंव्वनज़ीरा' की तफ़्सीर या'नी,

٣- باب قوله ﴿إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا﴾

4838. हमसे अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी सलमा ने बयान किया, उनसे हिलाल बिन अबी हिलाल ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ने कि ये आयत जो क़ुर्आन में है, ऐ नबी! बेशक मैंने आपको गवाही देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। तो आँहज़रत (ﷺ) के बारे में यही अल्लाह तआ़ला ने तोरियत मे भी फ़र्माया था, ऐ नबी! बेशक हमने आपको गवाही देने वाला और बशारत देने वाला और अनपढ़ों (अरबों) की हिफ़ाज़त करने वाला बनाकर भेजा है। आप मेरे

٤٨٣٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ هَذِهِ الآيَةَ الَّتِي فِي الْقُرْآنِ ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا﴾ قَالَ فِي التَّوْرَاةِ : يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ

(हमज़ाद) मुराद है जो हर आदमी के साथ लगा हुआ है फ़नक़्क़बू फ़िल् बिलाद या'नी शहरों में फिरे दौरा किया। अव अल्क़स् सम्अ़ा का ये मतलब है कि दिल में दूसरा कुछ ख़याल न करे कान लगाकर सुने अफ़अयना बिल ख़ल्क़िल् अव्वल या'नी जब तुमको शुरू में पैदा किया तो क्या उसके बाद हम आजिज़ बन गये अब दोबारा पैदा नहीं कर सकते? साइक़ु और शहीदा दो फ़रिश्ते हैं एक लिखने वाला दूसरा गवाह। शहीद से मुराद ये है कि दिल लगाकर सुने। लुग़ूब थकन। मुजाहिद के सिवा ओरों ने कहा नज़ीद वो गाभा है, जब तक वो पत्तों के ग़िलाफ़ में छिपा रहे। नज़ीदा उसको इसलिये कहते हैं कि वो तह ब तह होता है जब पेड़ का गाभा ग़िलाफ़ से निकल आए तो फिर उसको नज़ीद नहीं कहेंगे। अदबारन् नुजूम (जो सूरह तूर में है) और अदबारस्सुजूद जो इस सूरत में है। तो आसिम सूरह क़ाफ़ मे (अदबार को) बरफ़त्हा अलिफ़ और सूरह तूर में बकसरा अलिफ़ पढ़ते हैं। कुछ ने दोनों जगह बकसरा अलिफ़ पढ़ा है कुछ ने दोनों जगह बर फ़त्ह अलिफ़ पढ़ा है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा यौमल ख़ुरूज से वो दिन मुराद है जिस दिन क़ब्रों से निकलेंगे।

عَلَيْنَا. ﴿وَقَالَ قَرِينُهُ﴾ الشَّيْطَانُ الَّذِي قُيِّضَ لَهُ. ﴿فَنَقَّبُوا﴾ ضَرَبُوا. ﴿أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ﴾ لاَ يُحَدِّثُ نَفْسَهُ بِغَيْرِهِ. ﴿حِينَ أَنْشَأَكُمْ﴾ وَأَنْشَأَ خَلْقَكُمْ. ﴿رَقِيبٌ عَتِيدٌ﴾ رَصَدٌ. ﴿سَائِقٌ وَشَهِيدٌ﴾ الْمَلَكَانِ ﴿كَاتِبٌ وَشَهِيدٌ﴾. شَهِيدٌ شَاهِدٌ بِالْقَلْبِ. ﴿لُغُوبٍ﴾ النَّصَبُ. وَقَالَ غَيْرُهُ: نَضِيدٌ الْكُفُرَّى مَا دَامَ فِي أَكْمَامِهِ وَمَعْنَاهُ مَنْضُودٌ بَعْضُهُ عَلَى بَعْضٍ فَإِذَا خَرَجَ مِنْ أَكْمَامِهِ فَلَيْسَ بِنَضِيدٍ. فِي أَدْبَارِ النُّجُومِ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ، كَانَ عَاصِمٌ يَفْتَحُ الَّتِي فِي ق وَيَكْسِرُ الَّتِي فِي الطُّورِ وَيُكْسَرَانِ جَمِيعًا وَيُنْصَبَانِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: يَوْمَ الْخُرُوجِ يَخْرُجُونَ مِنَ الْقُبُورِ.

तश्रीह : सूरह क़ाफ़ मक्की है जिसमें 45 आयात और तीन रुकूअ़ हैं जिन सूरतों को मुफ़स्सल की सूरत कहा जाता है। उनमें से पहली सूरत यही है आँहज़रत (ﷺ) नमाज़े ईदैन की पहली रकअ़त में ज़्यादातर सूरह सूरह क़ाफ़ और दूसरी रकअ़त में सूरह इक़्तरबतिस्साअ़त पढ़ा करते थे। जुम्आ़ के ख़ुत्बा में ज़्यादातर आपका उ़न्वान यही मुबारक सूरत हुआ करती थी। मुश्रिकीने मक्का को क़यामत और हश्र अज्साद में सख़्त इंकार था उनके जवाब में ये सूरह शरीफ़ा नाज़िल हुई।

बाब 1 : आयत 'व तक़ूलु हल मिम्मज़ीद' की तफ़्सीर या'नी,

١ - باب قَوْلِهِ: ﴿وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ﴾

अल्लाह का इर्शाद, और वो जहन्नम कहेगी कि कुछ और भी है।

4848. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अल अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे हरमी ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जहन्नम में दोज़ख़ियों को डाला जाएगा और वो कहे कि कुछ और भी है? यहाँ तक कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपना क़दम उस पर रखेगा और वो कहेगी कि बस बस। (दीगर मक़ाम : 1343, 6661)

٤٨٤٨ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا حَرَمِيٌّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يُلْقَى فِي النَّارِ، وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ، حَتَّى يَضَعَ قَدَمَهُ فَتَقُولُ: قَطْ قَطْ)).

[طرفاه في: ٦٦٦١، ١٣٨٤].

4849. हमसे मुहम्मद बिन मूसा क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे अबू सुफ़यान हिम्यरी सईद बिन यह्या बिन मह्दी ने बयान किया, उनसे औफ़ ने, उनसे मुहम्मद ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) के हवाले से अबू सुफ़यान हिम्यरी अकष़र इस ह़दीष़ को आँह़ज़रत (ﷺ) से मौक़ूफ़न ज़िक्र करते थे कि जहन्नम से पूछा जाएगा तू भर भी गई? वो कहेगी कि कुछ और भी है? फिर अल्लाह तबारक व तआला अपना क़दम उस पर रखेगा और कहेगी कि बस बस।

(दीगर मक़ाम: 7449, 4750)

٤٨٤٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُوسَى الْقَطَّانُ، حَدَّثَنَا أَبُو سُفْيَانَ الْحِمْيَرِيُّ سَعِيدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَفَعَهُ، وَأَكْثَرُ مَا كَانَ يُوقِفُهُ أَبُو سُفْيَانَ يُقَالُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلأْتِ؟ وَتَقُولُ : هَلْ مِنْ مَزِيدٍ؟ فَيَضَعُ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَدَمَهُ عَلَيْهَا فَتَقُولُ : قَطْ قَطْ. [طرفاه في : ٤٨٥٠، ٧٤٤٩].

तश्रीह़ : क़स्तलानी (रह़) ने इस मुक़ाम पर पिछले मुतकल्लिमीन की पैरवी से तावील की है और कहा है क़दम रखने से इसका ज़लील करना मुराद है या किसी मख़्लूक़ का क़दम मुराद है। अहले ह़दीष़ इस क़िस्म की तावीलें नहीं करते बल्कि क़दम और रिज्ल को इसी त़रह़ तस्लीम करते हैं जैसे समअ़ और बसर और ऐन और वज्ह वग़ैरह को और इब्ने फ़ौरक ने ला इल्मी से रिज्ल का इंकार किया और कहा रिज्ल का लफ़्ज़ ष़ाबित नहीं है ह़ालाँकि स़ह़ीह़ैन की रिवायत में रिज्ल का लफ़्ज़ भी मौजूद है। इन ह़दीष़ों से जहमियों की जान निकलती है और अहले ह़दीष़ को ह़याते ताज़ा ह़ासिल होती है। (वह़ीदी)

व क़ाल मुहियुस्सुन्नति अव तक़ूलु हल मिम्मज़ीद अल्क़दमु वरिज्लु फी हाज़ल्हदीषि मिन सिफ़ातिल्लाहि तआला फ़ल्ईमानु बिहा फर्ज़ुन वल्इम्तिनाउ अनिल्खौज़ि फ़ीहा वाजिबुन फल्मुहतदी मन सलक फीहिमा तरीक़त्तस्लीम व इन्नमा नस्सुन फ़ीहा ज़ाइउन वल्मुन्करू मुअत्तलुन वल्मुकीफ़ु मुशब्बहुन लैस कमिष्लिही शैउन

4850. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जन्नत और दोज़ख़ ने बह़ष़ की, दोज़ख़ ने कहा मैं मुतकब्बिरों और ज़ालिमों के लिये ख़ास़ की गई हूँ। जन्नत ने कहा मुझे क्या हुआ कि मेरे अंदर स़िर्फ़ कमज़ोर और कम रुत्बा वाले लोग दाख़िल होंगे। अल्लाह तआला ने इस पर जन्नत से कहा कि तू मेरी रह़मत है, तेरे ज़रिया में अपने बन्दो मे जिस पर चाहूं रह़म करूँ और दोज़ख़ से कहा कि तू अ़ज़ाब है तेरे ज़रिये में अपने बन्दों मे से जिसे चाहूँ अ़ज़ाब दूँ। जन्नत और दोज़ख़ दोनों भरेंगी। दोज़ख़ तो उस वक़्त तक नहीं भरेगी। जब तक अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपना क़दम उस पर नहीं रख देगा। उस वक़्त वो बोलेगी कि बस बस बस! और उस वक़्त भर जाएगी और उसका कुछ हिस़्सा कुछ दूसरे हिस़्से पर चढ़ जाएगा और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों में से किसी पर भी ज़ुल्म नहीं करेगा और जन्नत के

٤٨٥٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبرنا مَعْمَرٌ عَنْ هَمَّامٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تَحَاجَّتِ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ، فَقَالَتِ النَّارُ: أُوثِرْتُ بِالْمُتَكَبِّرِينَ وَالْمُتَجَبِّرِينَ، وَقَالَتِ الْجَنَّةُ: مَا لِي لاَ يَدْخُلُنِي إِلاَّ ضُعَفَاءُ النَّاسِ وَسَقَطُهُمْ؟ قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى : لِلْجَنَّةِ أَنْتِ رَحْمَتِي أَرْحَمُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي، وَقَالَ لِلنَّارِ: إِنَّمَا أَنْتِ عَذَابٌ أُعَذِّبُ بِكِ مَنْ أَشَاءُ مِنْ عِبَادِي. وَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مِلْؤُهَا، فَأَمَّا النَّارُ فَلاَ تَمْتَلِيءُ، حَتَّى يَضَعَ رِجْلَهُ فَتَقُولُ: قَطْ قَطْ قَطْ فَهُنَالِكَ تَمْتَلِيءُ

ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़िर्रा बिन हबीश से सुना और उन्होंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से आयत फ़कााना क़ाबा क़ौसैनि औ अदना या'नी सिर्फ़ दो कमानों का फ़ास़ला रह गया था बल्कि और भी कम। फिर अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य नाज़िल की जो कुछ भी नाज़िल किया, के बारे में बयान किया कि हमसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) को उनकी अस़ल सूरत में देखा था उनके छः सौ पर थे। (राजेअ़ : 3232)

الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ زِرًّا عَنْ عَبْدِ اللهِ ﴿فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى﴾ قَالَ: حَدَّثَنَا ابْنُ مَسْعُودٍ أَنَّهُ رَأَى جِبْرِيلَ لَهُ سِتُّمِائَةِ جَنَاحٍ.

[راجع: ٣٢٣٢]

बाब 'क़ौलुहू फऔहा इला अ़ब्दिही मा औहा' की तफ़्सीर या'नी,

باب قَوْلِهِ ﴿فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى﴾

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दे की त़रफ़ वह्य की जो भी वहय की।

4857. हमसे त़ल्क़ बिन ग़न्नाम ने बयान किया, उनसे ज़ायदा बिन क़ुदामा कूफ़ी ने बयान किया, उनसे सुलैमान शैबानी ने बयान किया कि मैंने ज़िर्र बिन हुबैश से इस आयत के बारे में पूछा फ़काना क़ाब क़वसैन अल्अख़ या'नी सो दो कमानों का फ़ास़ला रह गया बल्कि और भी कम। फिर अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य नाज़िल की जो कुछ भी नाज़िल किया तो उन्होंने बयान किया कि हमें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने ख़बर दी कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि) को देखा था जिनके छः सौ पर थे। (राजेअ़ : 3232)

٤٨٥٧- حَدَّثَنَا طَلْقُ بْنُ غَنَّامٍ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ قَالَ: سَأَلْتُ زِرًّا عَنْ قَوْلِهِ تَعَالَى ﴿فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى﴾ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَنَّ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى جِبْرِيلَ لَهُ سِتُّمِائَةِ جَنَاحٍ.

[راجع: ٣٢٣٢]

तश्रीह़ : तो फ़ओहा इला अ़ब्दिही वमा औहा में अ़ब्दुहू की ज़मीर अल्लाह की त़रफ़ फिरेगी और फ़ओहा की ज़मीर हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि) की त़रफ़ क़रीन-ए-कलाम भी उसी को मुक़्तज़ा है क्योंकि शदीदुल क़ुवा और ज़ुमिर्रत ये हज़रत जिब्रईल (अ़लैहि) के सिफ़ात हैं कुछ ने कहा ख़ुद परवरदिगार मुराद है इस सूरत में औहा और अ़ब्दहू दोनों की ज़मीर अल्लाह की त़रफ़ लौटेंगी।

बाब 'क़ौलुहू राअ मिन आयति रब्बिहिल्कुबरा' की तफ़्सीर या'नी,

باب قوله ﴿لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى﴾

तह़क़ीक़ आँहुज़ूर (ﷺ) ने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानियों को देखा।

4858. हमसे क़बीसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने आयत लक़द रआ मिन आयाति रब्बिहिल्कुबरा या'नी आपने अपने रब की अ़ज़ीम निशानियाँ

٤٨٥٨- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ﴿لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى﴾ قَالَ: رَأَى رَفْرَفًا أَخْضَرَ قَدْ سَدَّ الأُفُقَ.

[راجع: ٣٢٣٢]

हैं, जब वो बातें करते हैं तो तू उनकी बात सुनता है गोया वो बहुत बड़ी लकड़ी के खम्बे हैं जिनके साथ लोग तकिया लगाते हैं, हर एक ज़ोरदार आवाज़ को अपने ही बरख़िलाफ़ जानते हैं पस तुम ऐ नबी! इन दुश्मनों से बचते रहो। इन पर अल्लाह की मार हो कहाँ को बहके जाते हैं।

يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ قَاتَلَهُمُ اللهُ أَنَّى يُؤْفَكُونَ﴾.

4903. हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुआविया ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, कहा कि मैंने ह़ज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक सफ़र (ग़ज़्व-ए-तबूक़ या बनी अल् मुस्तलक़) में थे जिसमें लोगों पर बड़े तंग औक़ात आए थे। अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने अपने साथियों से कहा कि, जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास जमा हैं उन पर कुछ ख़र्च मत करो ताकि वो उनके पास से मुंतशिर हो जाएँ, उसने ये भी कहा कि, अगर हम अब मदीना लौटकर जाएँगे तो इ़ज़्ज़त वाला वहाँ से ज़लीलों को निकाल बाहर करेगा। मैंने हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर उनकी इस बातचीत की ख़बर दी तो आपने अ़ब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल को बुलाकर पूछा। उसने बड़ी क़समें खाकर कहा कि मैंने ऐसी कोई बात नहीं कही। लोगों ने कहा कि ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने झूठ बोला है। लोगों की इस त़रह़ की बातों से मैं बड़ा रंजीदा हुआ यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी तस्दीक़ फ़र्माई और ये आयत नाज़िल हुई इज़ा जाअकल मुनाफ़िक़ूना अल्अख़ या'नी जब आपके पास मुनाफ़िक़ आए फिर आप (ﷺ) ने उन्हें बुलाया ताकि उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करें लेकिन उन्होंने अपने सर फेर लिये। ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआ़ला के इर्शाद ख़ुशुबुम् मुसन्नदह् गोया वो बहुत बड़े लकड़ी के खम्बे हैं (उनके बारे में इसलिये कहा गया कि) वो बड़े ख़ूबसूरत और डील डोल मअ़क़ूल मगर दिल में निफ़ाक़ था। (राजेअ़: 4900)

٤٩٠٣ - حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ أَرْقَمَ قَالَ : خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ أَصَابَ النَّاسَ فِيهِ شِدَّةٌ، فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ أُبَيٍّ لأَصْحَابِهِ: لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى يَنْفَضُّوا مَنْ حَوْلَهُ، وَقَالَ : لَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ، فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَأَرْسَلَ إِلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ فَسَأَلَهُ، فَاجْتَهَدَ يَمِينَهُ مَا فَعَلَ قَالُوا كَذَبَ زَيْدٌ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَقَعَ فِي نَفْسِي مِمَّا قَالُوا شِدَّةٌ، حَتَّى أَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ تَصْدِيقِي فِي ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ﴾ فَدَعَاهُمُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَغْفِرَ لَهُمْ فَلَوَّوْا رُؤُوسَهُمْ. وَقَوْلُهُ ﴿خُشُبٌ مُسَنَّدَةٌ﴾ قَالَ: كَانُوا رِجَالاً أَجْمَلَ شَيْءٍ.

[راجع: ٤٩٠٠]

बाब 4 : आयत 'व इज़ा क़ील लहुम तआ़लौ यस्तग़्फ़िर लकुम रसूलुल्लाहि लव्वव रूऊसहुम ...'

٤- باب قَوْلِهِ

﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ

की तफ़्सीर या'नी, और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह के रसूल (ﷺ) तुम्हारे लिये इस्तिग़्फ़ार फ़र्माए तो वो अपना सर फेर लेते हैं और आप उन्हें देखेंगे कि घमण्ड करते हुए वो किस क़द्र बेरुख़ी बरत रहे हैं। लव्वव का मा'नी ये है कि अपने सर हंसी ठट्ठे की राह से हिलाने लगे। कुछ ने लव्वव बर तख़्फ़ीफ़ वाव लवयत से पढ़ा है या'नी सर फेर लिया।

﴿لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ﴾

حَرَّكُوا اسْتَهْزَءُوا بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيُقْرَأُ بِالتَّخْفِيفِ مِنْ لَوَيْتُ.

4904. हमसे ज़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अपने चचा के साथ था। मैंने अब्दुल्लाह बिन उबई इब्ने सलूल को कहते सुना कि, जो लोग रसूल (ﷺ) के पास हैं उन पर कुछ ख़र्च न करो ताकि वह बिखर जाएँ और अगर अब हम मदीना वापस लौटेंगे तो हमम में से जो इज़्ज़त वाले हैं वो ज़लीलों को बाहर कर देंगे। मैंने उसका ज़िक्र अपने चचा से किया और उन्होंने रसूल (ﷺ) से कहा जब आँहज़रत (ﷺ) ने उन ही की तस्दीक़ कर दी तो मुझे उसका इतना अफ़सोस हुआ कि पहले कभी किसी बात पर न हुआ होगा, मैं ग़म से अपने घर मे बैठ गया। मेरे चचा ने कहा कि तुम्हारा क्या ऐसा ख़्याल था कि आँहज़रत (ﷺ) ने तुम्हें झुठलाया और तुम पर ख़फ़ा हुए हैं? फिर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की इज़ा जाअकल मुनाफ़िक़ूना.. अल आयत जब मुनाफ़िक़ आपके पास आते हैं तो कहते कि आप बेशक अल्लाह के रसूल (ﷺ) हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझे बुलवाकर इस आयत की तिलावत फ़र्माई और फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी तस्दीक़ नाज़िल कर दी है। (राजेअ : 4900)

٤٩٠٤- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ: كُنْتُ مَعَ عَمِّي فَسَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أُبَيٍّ ابْنَ سَلُولٍ يَقُولُ: لاَ تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ حَتَّى يَنْفَضُّوا، وَلَئِنْ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الأَعَزُّ مِنْهَا الأَذَلَّ، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِعَمِّي فَذَكَرَ عَمِّي لِلنَّبِيِّ ﷺ وَصَدَّقَهُمْ، فَأَصَابَنِي هَمٌّ لَمْ يُصِبْنِي مِثْلُهُ قَطُّ، فَجَلَسْتُ فِي بَيْتِي وَقَالَ عَمِّي: مَا أَرَدْتَ إِلَى أَنْ كَذَّبَكَ النَّبِيُّ ﷺ وَمَقَتَكَ، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللهِ﴾، وَأَرْسَلَ إِلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ فَقَرَأَهَا وَقَالَ: ((إِنَّ اللهَ قَدْ صَدَّقَكَ)).

[راجع: ٤٩٠٠]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ग़ैबदाँ नहीं थे, दिलों का हाल सिर्फ़ अल्लाह तआला जानता है। अब्दुल्लाह बिन उबई ने क़समें खा खाकर अपनी बराअत ज़ाहिर की। आँहज़रत (ﷺ) ने उसकी बातों का यक़ीन कर लिया बाद में वह्य इलाही ने अब्दुल्लाह बिन उबई का झूठ ज़ाहिर फ़र्माया और हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) के ब यान की तस्दीक़ फ़र्माई जिससे हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) का दिल मुत्मईन हो गया और मुनाफ़िक़ीन का सूरह मुनाफ़िक़ीन में सारा पोल खोल दिया गया।

बाब 5 : 'सवाउन अलैहिमुस्तग़्फ़र्त लहुम अम लम तस्तग़्फ़िर्लहुम लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम .... (अल्आयः)' की तफ़्सीर या'नी,

उनके लिये बराबर है ख़्वाह आप उनके लिये इस्तिग़्फ़ार करें या

٥- باب قَوْلِهِ:

﴿سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ اسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللهُ لَهُمْ إِنَّ اللهَ لاَ

नहीं है वो शवा है। इज़ून गिरोह गिरोह इसका मुफ़रद इज़तुन है।
ये सूरह मक्की है इसमें 44 आयात और दो रुकूअ हैं।

सूरह नूह की तफ़्सीर

[٧١] سُورَةُ ﴿إِنَّا أَرْسَلْنَا﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अत़्वार कभी कुछ कभी कुछ मष़लन मनी फिर गोश्त का लौथड़ा अरब लोग कहते हैं अदा त़ौरूहू अपने अंदाज़ से बढ़ गया। कुब्बार (बतशदीद बाअ) में कुबार से ज़्यादा मुबालग़ा है या'नी बहुत ही बड़ा, जैसे जमील ख़ूबसूरत जुम्माल बहुत ही ख़ूबसूरत ग़र्ज़ कुब्बार का मा'नी बड़ा कभी उसको कुब्बार तख़्फ़ीफ़ बाअ से भी पढ़ा है। अरब लोग कहते हैं हुस्सान और जुम्माल (तशदीद से) और हुसान और जुमाल (तख़्फ़ीफ़ से) दय्यारा दौर से निकला है। इसका वज़न फ़यआल है (अस़ल में दीवार था) जैसे ह़ज़रत उमर (रज़ि.) ने अल ह़य्युल् क़य्यूम को अल् ह़य्युल क़ियाम पढ़ा है। ये क़यामत क़ुम्तु से निकला है (तो अस़ल में क़यवाम था) औरों ने कहा दय्यारा के मअ नी किसी को तबारा हलाक़त। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा मिदरारा एक के पीछे दूसरा या'नी लगातार बारिश। वक़ारा अज़्मत बड़ाई मुराद है।

﴿أَطْوَارًا﴾ طَوْرًا كَذَا وَطَوْرًا كَذَا يُقَالُ عَدَا طَوْرَهُ أَيْ قَدْرَهُ. وَالْكُبَّارُ أَشَدُّ مِنَ الْكُبَارِ وَكَذَلِكَ جُمَّالٌ وَجَمِيلٌ لأَنَّهَا أَشَدُّ مُبَالَغَةً وَكُبَّارٌ الْكَبِيرُ وَكُبَارًا أَيْضًا بِالتَّخْفِيفِ وَالْعَرَبُ تَقُولُ رَجُلٌ حُسَّانٌ وَجُمَّالٌ وَحُسَانٌ مُخَفَّفٌ وَجُمَالٌ مُخَفَّفٌ. دَيَّارًا مِنْ دَوْرٍ وَلَكِنَّهُ فَيْعَالٌ مِنَ الدَّوَرَانِ كَمَا قَرَأَ عُمَرُ الْحَيُّ الْقَيَّامُ وَهِيَ مِنْ قُمْتُ وَقَالَ غَيْرُهُ ﴿دَيَّارًا﴾ أَحَدًا ﴿تَبَارًا﴾ هَلاَكًا. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ ﴿مِدْرَارًا﴾ يَتْبَعُ بَعْضُهَا بَعْضًا. ﴿وَقَارًا﴾ عَظَمَةً.

ये सूरत मक्की है इसमें 28 आयात और दो रुकूअ हैं।

बाब 'वद्दा वला सुवाअंव् वला यग़ूषवं् व यऊक़ व नस्र' की तफ़्सीर या'नी,

١- باب ﴿وَدًّا وَلاَ سُوَاعًا وَلاَ يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا﴾

4920. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उनसे इब्ने जुरैज ने और अ़ता ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जो बुत ह़ज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) की क़ौम मे पूजे जाते थे बाद मे वही अ़रब में पूजे जाने लगे। वद्दा दौमतुल जन्दल में बनी कल्ब का बुत था। सुवाअ बनी हुज़ैल का। यग़ूष़ बनी मुराद का और मुराद की शाख़ बनी ग़ुतैफ़ का जो वादी जौफ़ में क़ौमे सबा के पास रहते थे यऊक़ बनी हम्दान का बुत था। नस्र हिम्यर का बुत था जो ज़ुल कलाअ की आल

٤٩٢٠- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ وَقَالَ عَطَاءٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا : صَارَتِ الأَوْثَانُ الَّتِي كَانَتْ فِي قَوْمِ نُوحٍ فِي الْعَرَبِ بَعْدُ، أَمَّا وُدٌّ كَانَتْ لِكَلْبٍ بِدَوْمَةِ الْجَنْدَلِ، وَأَمَّا سُوَاعٌ كَانَتْ لِهُذَيْلٍ، وَأَمَّا يَغُوثُ فَكَانَتْ لِمُرَادٍ، ثُمَّ لِبَنِي غُطَيْفٍ

بِهِ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ وَهَّاجًا: مُضِيئًا. وَقَالَ غَيْرُهُ: غَسَاقًا: غَسَقَتْ عَيْنُهُ وَيَغْسِقُ الْجُرْحُ يَسِيلُ كَأَنَّ الْغَسَاقَ وَالْغَسِيقَ وَاحِدٌ. عَطَاءً حِسَابًا: جَزَاءً كَافِيًا، أَعْطَانِي مَا أَحْسَبَنِي، أَيْ كَفَانِي.

जिसने दुनिया में सच्ची बात कही थी उस पर अ़मल किया था। इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) ने कहा वह्हाजा रोशन चमकता हुआ। औरों ने कहा ग़स्साक़्स ग़सक़त अयनुहू से निकला है या'नी उसकी आँख तारीक हो गई, उसी से है। यग़्सिक़ुल जरह या'नी ज़ख़्म बह रहा है ग़साक़ और ग़सीक़ दोनों का एक ही मा'नी है या'नी दोज़ख़ियों का ख़ून पीप। अ़त़ाअन ह़िसाबा पूरा बदला अ़रब लोग कहते हैं। अअ़त़ानी मा अह़सबनी या'नी मुझको इतना दिया जो काफ़ी हो गया।

ये सूरत मक्की है इसमे चालीस आयात और 2 रुकूअ़ हैं।

١- باب ﴿يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا﴾ زُمَرًا

बाब 1 : आयत 'यौम युन्फ़खु फिस्सूरि अल्आय:' की तफ़्सीर या'नी,

वो दिन कि जब सूर फूँका जाएगा तो तुम गिरोह दर गिरोह होकर आओगे। अफ़्वाजा के मा'नी ज़ुमुरा या'नी गिरोह गिरोह के हैं।

٤٩٣٥ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا بَيْنَ النَّفْخَتَيْنِ أَرْبَعُونَ، قَالَ: أَرْبَعُونَ، يَوْمًا؟ قَالَ: أَبَيْتُ. قَالَ: أَرْبَعُونَ شَهْرًا؟ قَالَ: أَبَيْتُ. قَالَ: أَرْبَعُونَ سَنَةً؟ قَالَ: أَبَيْتُ. قَالَ: ثُمَّ يُنْزِلُ اللهُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً، فَيَنْبُتُونَ كَمَا يَنْبُتُ الْبَقْلُ، لَيْسَ مِنَ الإِنْسَانِ شَيْءٌ إِلاَّ يَبْلَى، إِلاَّ عَظْمًا وَاحِدًا وَهُوَ عَجْبُ الذَّنَبِ، وَمِنْهُ يُرَكَّبُ الْخَلْقُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).
[راجع: ٤٨١٤]

4935. हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, उन्हे आ'मश ने, उन्हें अबू स़ालेह़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि दो सूर फूँके जाने के दरम्यान चालीस फ़ास़ला होगा। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) के शागिर्दों ने पूछा क्या चालीस दिन मुराद हैं? उन्होंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं। शागिर्दों ने पूछा क्या चालीस महीने मुराद हैं? उन्होंने कहा कि मुझे मा'लूम नहीं। शागिर्दों ने पूछा क्या चालीस साल मुराद हैं? कहा कि मुझे मा'लूम नहीं। कहा कि फिर अल्लाह तआ़ला आसमान से पानी बरसाएगा। जिसकी वजह से तमाम मुर्दे जी उठेंगे जैसे सब्ज़ियाँ पानी से आग आती हैं। उस वक़्त इंसान का हर ह़िस़्सा गल चुका होगा। सिवा रीढ़ की हड्डी के और उससे क़यामत के दिन तमाम मख़्लूक़ दोबारा बनाई जाएगी। (राजेअ़ : 4814)

इब्ने मर्दवैह ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से निकाला कि दोनों नफ़्ख़ों में चालीस बरस का फ़ास़ला होगा।

[٧٩] سُورَةُ ﴿وَالنَّازِعَاتِ﴾

सूरह वन् नाज़िआत की तफ़्सीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूरह कौष़र की तफ़्सीर

[١٠٨] سُورَةُ ﴿إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

بسم الله الرحمن الرحيم

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा शानिअक तेरा दुश्मन।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : (شَانِئَكَ) عَدُوُّكَ

जिससे आ़स़ बिन वाइल या अबू जहल या उ़त्बा बल्कि क़यामत तक होने वाले तमाम दुश्मनाने रसूल (ﷺ) मुराद हैं जो हमेशा अंजाम के लिह़ाज़ से ख़ाइब व ख़ासिर व नामुराद रहे हैं। ये सूरत मक्की है इसमें तीन आयात हैं।

4964. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शैबान बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) को मेअ़राज हुई तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं एक नहर के किनारे पर पहुँचा जिसके दोनों किनारों पर ख़ोलदार मोतियों के डेरे लगे हुए थे। मैंने पूछा ऐ जिब्रईल! ये नहर कैसी है? उन्होंने बताया कि ये ह़ौज़े कौष़र है (जो अल्लाह ने आपको दिया है)

٤٩٦٤- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ. لَمَّا عُرِجَ بِالنَّبِيِّ ﷺ إِلَى السَّمَاءِ، قَالَ ((أَتَيْتُ عَلَى نَهَرٍ حَافَتَاهُ قِبَابُ اللُّؤْلُؤِ مُجَوَّفٌ، فَقُلْتُ : مَا هَذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ هَذَا الْكَوْثَرُ)).

4965. हमसे ख़ालिद बिन यज़ीद काहिली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया, उनसे अबू उ़बैदह ने कि मैंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से अल्लाह के इर्शाद इन्ना अअ़त़यनाक अल्अख़ या'नी मैंने आपको कौष़र अ़ता किया है के बारे में पूछा तो उन्होंने बतलाया कि ये (कौष़र) एक नहर है जो तुम्हारे नबी (ﷺ) को बख़्शी गई है, इसके दो किनारे हैं जिन पर ख़ोलदार मोतियों के डेरे हैं। उसके आबख़ोरे सितारों की त़रह़ अनगिनत हैं। इस ह़दीष़ की रिवायत ज़करिया और अबुल अह़वस़ और मुत़र्रिफ़ ने अबू इस्ह़ाक़ से की है।

٤٩٦٥- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ الْكَاهِلِيُّ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي عُبَيْدَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَ : سَأَلْتُهَا عَنْ قَوْلِهِ تَعَالَى ﴿إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ﴾ قَالَتْ: نَهَرٌ أُعْطِيَهُ نَبِيُّكُمْ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، شَاطِئَاهُ عَلَيْهِ دُرٌّ مُجَوَّفٌ آنِيَتُهُ كَعَدَدِ النُّجُومِ. رَوَاهُ زَكَرِيَّا وَأَبُو الأَحْوَصِ وَمُطَرِّفٌ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ.

4966. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कौष़र के बारे में कि वो ख़ैरे कष़ीर है जो अल्लाह तआ़ला ने नबी करीम (ﷺ) को दी है। अबू बिश्र ने बयान किया कि मैंने सईद बिन जुबैर से अ़र्ज़ की,

٤٩٦٦- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ حَدَّثَنَا أَبُو بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ فِي الْكَوْثَرِ : هُوَ الْخَيْرُ الَّذِي أَعْطَاهُ اللهُ إِيَّاهُ. قَالَ أَبُو بِشْرٍ قُلْتُ لِسَعِيدِ

बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) के कातिब का बयान

4989. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैद इब्ने सिबाक़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने बयान किया, कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अपने ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में मुझे बुलाया और कहा कि तुम रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने क़ुर्आन लिखते थे। इसलिये अब भी क़ुर्आन (जमा करने के लिये) तुम ही तलाश करो। मैंने तलाश की और सूरह तौबा की आख़री दो आयतें मुझे ह़जरत ख़ुज़ैमा अंस़ारी (रज़ि.) के पास लिखी हुई मिलीं, उनके सिवा और कहीं ये दो आयतें नहीं मिल रही थीं। वो आयतें ये थीं, लक़द जाअकुम रसूलुम्मिन अन्फ़ुसिकुम अज़ीज़ुन अ़लैहि मा अ़नित्तुम आख़िर तक। (राजेअ़ : 2807)

٤ - باب كَاتِبِ النَّبِيِّ ﷺ

٤٩٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ ابْنَ السَّبَّاقِ قَالَ : إِنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ قَالَ : أَرْسَلَ إِلَيَّ أَبُوبَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّكَ كُنْتَ تَكْتُبُ الْوَحْيَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَاتَّبِعِ الْقُرْآنَ. فَتَتَبَّعْتُ حَتَّى وَجَدْتُ آخِرَ سُورَةِ التَّوْبَةِ آيَتَيْنِ مَعَ أَبِي خُزَيْمَةَ الأَنْصَارِيِّ لَمْ أَجِدْهُمَا مَعَ أَحَدٍ غَيْرِهِ ﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ﴾ إِلَى آخِرِهِ. [راجع: ٢٨٠٧]

490. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आयत ला यस्तविल् क़ाइदूना मिनल् मोमिनीन वल् मुजाहिदून फ़ी सबीलिल्लाह नाज़िल हुई तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़ैद को मेरे पास बुलाओ और उनसे कहो कि तख़्ती, दवात और मूँढ़े की हड्डी (लिखने का सामान) लेकर आएं, या रावी ने इसके बजाय हड्डी और दवात (कहा) फिर (जब वो आ गये तो) आँह़ ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि लिखो ला यस्तविल्क़ाइदून अल्अख़ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के पीछे अ़म्र इब्ने उम्मे मक्तूम बैठे हुए थे जो नाबीना थे, उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर आपका मेरे बारे में क्या हुक्म है? मैं तो नाबीना हूँ (जिहाद में नहीं जा सकता अब मुझको भी मुजाहिदीन का दर्जा मिलेगा या नहीं) उस वक़्त ये आयत यूँ उतरी, ला यस्तविल्क़ाइदून मिनल्मूमिनीन वल्मुजाहिदून फ़ी सबीलिल्लाहि ग़ैर उलिज़्ज़ररि नाज़िल हुई। (राजेअ़ : 2831)

٤٩٩٠- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ : لَمَّا نَزَلَتْ ﴿لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللهِ﴾ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ادْعُ لِي زَيْدًا وَلْيَجِيءْ بِاللَّوْحِ وَالدَّوَاةِ، وَالْكَتِفِ أَوِ الْكَتِفِ وَالدَّوَاةِ، ثُمَّ قَالَ : اكْتُبْ ﴿لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ﴾)) وَخَلْفَ ظَهْرِ النَّبِيِّ ﷺ عَمْرُو بْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ الأَعْمَى قَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ فَمَا تَأْمُرُنِي؟ فَإِنِّي رَجُلٌ ضَرِيرُ الْبَصَرِ فَنَزَلَتْ مَكَانَهَا ﴿لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي سَبِيلِ اللهِ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ﴾. [راجع: ٢٨٣١]

बाब 5 : क़ुर्आन मजीद सात क़िरातों से नाज़िल हुआ है

٥- باب أُنْزِلَ الْقُرْآنُ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ

٤٩٩١- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ قَالَ:

में सूरह फ़ुरक़ान पढ़ते सुना। मैं उनकी क़िरात को ग़ौर से सुनने लगा तो मा'लूम हुआ कि वो ऐसे बहुत से त़रीक़ों मे तिलावत कर रहे थे जिन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें नहीं सिखाया था। मुम्किन था कि मैं नमाज़ ही में उनका सर पकड़ लेता लेकिन मैंने इंतिज़ार किया और जब उन्होंने सलाम फेरा तो मैंने उनके गले में चादर लपेट दी और पूछा ये सूरतें जिन्हें अभी अभी तुम्हें पढ़ते हुए मैंने सुना है तुम्हें किसने सिखाई हैं? उन्होंने कहा कि मुझे इस त़रह़ इन सूरतों को रसूले करीम (ﷺ) ने सिखाया है। मैंने कहा कि तुम झूठ बोल रहे हो। ख़ुद हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने मुझे भी ये सूरतें पढ़ाई हैं जो मैंने तुमसे सुनीं। मैं उन्हें खींचते हुए आप (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने ख़ुद सुना कि ये शख़्स़ सूरह फ़ुरक़ान ऐसी क़िरात से पढ़ रहा था। जिसकी ता'लीम आप (ﷺ) ने हमें नहीं दी है आप (ﷺ) मुझे भी सूरह फ़ुरक़ान पढ़ा चुके हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हिशाम! पढ़कर सुनाओ। उन्होंने इसी त़रह़ उसकी क़िरात की जिस त़रह़ मैं उनसे सुन चुका था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया इसी त़रह़ ये सूरत नाज़िल हुई है। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उ़मर! अब तुम पढ़ो। मैंने भी इसी त़रह़ क़िरात की जिस त़रह़ आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे सिखाया था। आप (ﷺ) ने फ़र्माया उसी त़रह़ ये सूरत नाज़िल हुई थी। फिर आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ुर्आन मजीद सात क़िस्म की क़िरातों पर नाज़िल हुआ है बस तुम्हारे लिये जो आसान हो उसके मुत़ाबिक़ पढ़ो। (राजेअ: 2419)

يَقُولُ : سَمِعْتُ هِشَامَ بْنَ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ فِي حَيَاةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَاسْتَمَعْتُ لِقِرَاءَتِهِ فَإِذَا هُوَ يَقْرَؤُهَا عَلَى حُرُوفٍ كَثِيرَةٍ لَمْ يُقْرِئْنِيهَا رَسُولُ اللهِ، فَكِدْتُ أُسَاوِرُهُ فِي الصَّلاَةِ، فَانْتَظَرْتُهُ حَتَّى سَلَّمَ فَلَبَّبْتُهُ فَقُلْتُ: مَنْ أَقْرَأَكَ هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ تَقْرَأُ؟ قَالَ: أَقْرَأَنِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ. فَقُلْتُ لَهُ : كَذَبْتَ، فَوَ اللهِ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَهُوَ أَقْرَأَنِي هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ، فَانْطَلَقْتُ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ أَقُودُهُ، فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ، إِنِّي سَمِعْتُ هَذَا يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ عَلَى حُرُوفٍ لَمْ تُقْرِئْنِيهَا، وَإِنَّكَ أَقْرَأْتَنِي سُورَةَ الْفُرْقَانِ. فَقَالَ: ((يَا هِشَامُ اقْرَأْهَا)). فَقَرَأَهَا الْقِرَاءَةَ الَّتِي سَمِعْتُهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَكَذَا أُنْزِلَتْ)). ثُمَّ قَالَ: ((اقْرَأْ يَا عُمَرُ)). فَقَرَأْتُهَا الَّتِي أَقْرَأَنِيهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَكَذَا أُنْزِلَتْ)). ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ الْقُرْآنَ أُنْزِلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ فَاقْرَؤُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ)). [راجع: ٢٤١٩]

इस ह़दीष़ शरीफ़ में सूरह फ़ुरक़ान का लफ़्ज़ है। बाब से यही वजहे मुत़ाबक़त है। इस ह़दीष़ से ये भी ज़ाहिर हुआ कि उमूरे मुख़्तलिफ़ा में इंशिक़ाक़ व इफ़्तिराक से बचना ज़रूरी है।

5042. हमसे बिश्र बिन आदम ने बयान किया, कहा हमको अ़ली बिन मिस्हर ने ख़बर दी, कहा हमको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक क़ारी को रात के वक़्त मस्जिद में क़ुर्आन मजीद पढ़ते हुए सुना तो फ़र्माया

٥٠٤٢ - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ آدَمَ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا فَقَالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ قَارِئًا يَقْرَأُ مِنَ اللَّيْلِ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ:

कि अल्लाह उस आदमी पर रहम करे उसने मुझे फ़लाँ फ़लाँ आयतें याद दिला दीं जिन्हें मैंने फ़लाँ फ़लाँ सूरतों में से छोड़ रखा था। (राजेअ़ : 2655)

((يَرْحَمُهُ اللهُ لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا، آيَةً اسْقَطْتُهَا مِنْ سُورَةِ كَذَا وَكَذَا)).

[راجع: ٢٦٥٥]

बाब 28 : क़ुर्आन मजीद की तिलावत साफ़ साफ़ और ठहर ठहरकर करना

٢٨- باب التَّرْتِيلِ فِي الْقِرَاءَةِ،

और अल्लाह तबारक व तआ़ला ने सूरत मुज़म्मिल में फ़र्माया, और क़ुर्आन मजीद को तरतील से पढ़। (या'नी हर एक ह़र्फ़ अच्छी त़रह निकालकर इत्मीनान के साथ) और सूरह बनी इस्राईल में फ़र्माया और हमने क़ुर्आन मजीद को थोड़ा थोड़ा करके इसलिये भेजा कि तू ठहर ठहरकर लोगों को पढ़कर सुनाए और शे'र व सुख़न की त़रह उसका जल्दी जल्दी पढ़ना मकरूह है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा इस सूरत में जो फ़रक़्ना का लफ़्ज़ है (व क़ुर्आनन फ़रक़्नाहू) उसका मा'नी ये है कि हमने उसे कई हिस्से करके उतारा।

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلاً﴾ وَقَوْلِهِ: ﴿وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْثٍ﴾ وَمَا يُكْرَهُ أَنْ يُهَذَّ كَهَذِّ الشِّعْرِ. يُفْرَقُ : يُفَصَّلُ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَرَقْنَاهُ : فَصَّلْنَاهُ.

5044. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे मह्दी बिन मैमून ने, कहा हमसे वासिल अह्दब ने, उनसे अबू वाइल ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से बयान किया कि हम उनकी ख़िदमत में सुबह सवेरे ह़ाज़िर हुए। ह़ाज़िरीन में से एक साहब ने कहा कि रात मैंने (तमाम) मुफ़स्सल सूरतें पढ़ डालीं। इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) बोले जैसे अश्आर जल्दी जल्दी पढ़ते हैं तुमने वैसे ही पढ़ ली होंगी। हमने क़िरात सुनी है और मुझे वो जोड़ वाली सूरतें भी याद हैं जिनको मिलाकर नमाज़ों म नबी करीम (ﷺ) पढ़ा करते थे। ये अठारह सूरतें मुफ़स्सल की हैं और वो दो सूरतें जिनके शुरू में ह़ामीम है। (राजेअ़ : 775)

٥٠٤٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ حَدَّثَنَا وَاصِلٌ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : غَدَوْنَا عَلَى عَبْدِ اللهِ، فَقَالَ رَجُلٌ : قَرَأْتُ الْمُفَصَّلَ الْبَارِحَةَ فَقَالَ: هَذًّا كَهَذِّ الشِّعْرِ إِنَّا قَدْ سَمِعْنَا الْقِرَاءَةَ، وَإِنِّي لأَحْفَظُ الْقُرَنَاءَ الَّتِي كَانَ يَقْرَأُ بِهِنَّ النَّبِيُّ ﷺ. ثَمَانِيَ عَشْرَةَ سُورَةً مِنَ الْمُفَصَّلِ وَسُورَتَيْنِ مِنْ آلِ حم.

[راجع: ٧٧٥]

5044. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे मूसा बिन अबी आइशा ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान, आप क़ुर्आन को जल्दी जल्दी लेने के लिये इस पर नाज़िल होते तो रसूले करीम (ﷺ) अपनी ज़ुबान और होंठ हिलाया करते थे। उसकी वजह से आपके लिये वह्य याद करने में बहुत बार पड़ता था और ये आपके चेहरे से भी ज़ाहिर हो जाता था। इसलिये अल्लाह

٥٠٤٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي عَائِشَةَ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي قَوْلِهِ: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ﴾. قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا نَزَلَ جِبْرِيلُ بِالْوَحْيِ،

((بِكُفْرِهِنَّ)) قِيلَ يَكْفُرْنَ بِاللهِ قَالَ: ((يَكْفُرْنَ الْعَشِيرَ وَيَكْفُرْنَ الإِحْسَانَ لَوْ أَحْسَنْتَ إِلَى إِحْدَاهُنَّ الدَّهْرَ ثُمَّ رَأَتْ مِنْكَ شَيْئًا قَالَتْ مَا رَأَيْتُ مِنْكَ خَيْرًا قَطُّ)).

इंकार करती हैं, अगर तुम उनमें से किसी एक के साथ ज़िंदगी भर भी हुस्ने सुलूक़ का मामला करो फिर भी तुम्हारी तरफ़ से कोई चीज़ उसके लिये नागवारी ख़ातिर हुई तो कह देगी कि मैंने तुमसे कभी भलाई देखी ही नहीं।

तश्रीह : ह़दीष़ में नमाज़े कुसूफ़ का बयान है आख़िर में दोज़ख़ का एक नज़ारा पेश किया गया है जो नाफ़र्मान औरतों के बारे में है। इसी से बाब का मतलब षाबित होता है औरतों की ये फ़ितरत है जो बयान हुई इल्ला माशाअल्लाह बहुत कम नेकबख़्त औरतें ऐसी होती हैं जो शुक्रगुज़ार और इताअत शिआर हों।

٥١٩٨ – حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ حَدَّثَنَا عَوْفٌ عَنْ أَبِي رَجَاءٍ عَنْ عِمْرَانَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اطَّلَعْتُ فِي الْجَنَّةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ وَاطَّلَعْتُ فِي النَّارِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ)). تَابَعَهُ أَيُّوبُ وَسَلْمُ بْنُ زَرِيرٍ. [راجع: ٣٢٤١]

5198. हमसे उ़ष्मान बिन हैशम ने बयान किया, कहा हमसे औ़फ़ ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम ने, उनसे इमरान ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने जन्नत मे झांक कर देखा तो उसके अकष़र रहने वाले ग़रीब लोग थे और मैंने दोज़ख़ में झांककर देखा तो उसके अंदर रहने वाली अकष़र औरतें थीं। इस रिवायत की मुताबअ़त अबू अय्यूब और सलम बिन ज़रीर ने की है। (राजेअ़ : 3241)

बाब 90 : तुम्हारी बीवी का भी तुम पर ह़क़ है

٩٠ – باب لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقٌّ. أَبُو جُحَيْفَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ

इस ह़दीष़ को अबू जुहैफ़ा (अ़ब्दुल्लाह बिन वहब आमिरी) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से मर्फ़ूअ़न रिवायत किया है।

٥١٩٩ – حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا الأَوْزَاعِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا عَبْدَ اللهِ أَلَمْ أُخْبَرْ أَنَّكَ تَصُومُ النَّهَارَ وَتَقُومُ اللَّيْلَ؟)) قُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((فَلاَ تَفْعَلْ، صُمْ وَأَفْطِرْ، وَقُمْ وَنَمْ، فَإِنَّ لِجَسَدِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِعَيْنِكَ عَلَيْكَ حَقًّا، وَإِنَّ لِزَوْجِكَ عَلَيْكَ حَقًّا)). [راجع: ١١٣١]

5199. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको औज़ाई ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, कहा कि मुझसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अ़ब्दुल्लाह! क्या मेरी ये ख़बर स़ह़ीह़ है कि तुम (रोज़ाना) दिन में रोज़े रखते हो और रात भर इबादत करते हो? मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ या रसूलल्लाह! आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसा न करो, रोज़े भी रखो और बिला रोज़े भी रहो। रात में इबादत भी करो और सोओ भी। क्योंकि तुम्हारे बदन का भी तुम पर ह़क़ है, तुम्हारी आँखों का भी तुम पर ह़क़ है और तुम्हारी बीवी का भी तुम पर ह़क़ है। (राजेअ़ : 1131)

नहीं लेना चाहिये

الإِنَاءِ

5630. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अबी कषीर ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुममें से कोई शख़्स पानी पिये तो (पीने के) बर्तन में (पानी पीते वक़्त) सांस न ले और जब तुममें से कोई शख़्स पेशाब करे तो दाहिने हाथ को ज़कर पर न फेरे और जब इस्तिंजा करे तो दाहिने हाथ से न करे।

(राजेअ़: 153)

٥٦٣٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ يَحْيَى عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا شَرِبَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يَتَنَفَّسْ فِي الإِنَاءِ وَإِذَا بَالَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يَمْسَحْ ذَكَرَهُ بِيَمِينِهِ وَإِذَا تَمَسَّحَ أَحَدُكُمْ فَلاَ يَتَمَسَّحْ بِيَمِينِهِ)).

[راجع: ١٥٣]

उनकी ख़िदमात के लिये अल्लाह ने बायाँ हाथ बनाया है और सीधा हाथ खाने—पीने के लिये और तमाम ज़रूरी कामों के लिये है, इसलिये हर हाथ से उसकी हैषियत का काम लेना चाहिये बर्तन में सांस लेना त़िब्ब की रू से भी नुक़्सानदेह है। इस त़रह़ मेअ़दा के बुख़ारात इसमें दाख़िल हो सकते हैं (फ़त्हुलबारी)

बाब 26 : पानी दो या तीन सांस में पीना चाहिये

٢٦- باب الشُّرْبِ بِنَفَسَيْنِ أَوْ ثَلاَثَةٍ

5631. हमसे अबू आ़सिम और अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ड़र्वा बिन षाबित ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे षुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, बयान किया कि ह़ज़रत अनस (रज़ि.) दो या तीन सांसों में पानी पीते थे और कहा कि रसूले करीम (ﷺ) तीन सांसों में पानी पीते थे।

٥٦٣١- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ أَبُو نُعَيْمٍ قَالاَ: حَدَّثَنَا عَزْرَةُ بْنُ ثَابِتٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كَانَ أَنَسٌ يَتَنَفَّسُ فِي الإِنَاءِ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا وَزَعَمَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَتَنَفَّسُ ثَلاَثًا.

तश्रीह : त़बरानी की रिवायत में है कि जब आपके पास पानी का प्याला आता तो पहले आप बिस्मिल्लाह पढ़कर पीना शुरू करते, दरम्यान में तीन सांस लेते आख़िर में अल्ह़म्दुलिल्लाह पढ़ते और फ़र्माया कि पीने के इब्तिदा में बिस्मिल्लाह पढ़ो आख़िर में अल्ह़म्दु लिल्लाह कहो (फ़त्हुल बारी)

बाब 27 : सोने के बर्तन में खाना और पीना ह़राम है

٢٧- باب الشُّرْبِ فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ

5632. हमसे ह़फ़्स़ बिन ड़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कीम बिन अबी लैला ने, उन्होंने बयान किया कि ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) मदाइन में थे। उन्होंने पानी मांगा तो एक देहाती ने उनको चँदी के बर्तन में पानी लाकर दिया, उन्होंने बर्तन को उस पर फेंक मारा फिर कहा मैंने बर्तन स़िर्फ़ इस वजह से फेंका है कि उस शख़्स़ को मैं इससे मना कर चुका था लेकिन ये बाज़ न आया और रसूले करीम (ﷺ) ने हमें रेशम व दीबा के पहनने से और सोने और चाँदी के बर्तन में खाने—पीने से मना किया था और आपने

٥٦٣٢- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: كَانَ حُذَيْفَةُ بِالْمَدَائِنِ، فَاسْتَسْقَى، فَأَتَاهُ دِهْقَانٌ بِقَدَحِ فِضَّةٍ، فَرَمَاهُ بِهِ فَقَالَ: إِنِّي لَمْ أَرْمِهِ إِلاَّ أَنِّي نَهَيْتُهُ فَلَمْ يَنْتَهِ وَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ نَهَانَا عَنِ الْحَرِيرِ وَالدِّيبَاجِ وَالشُّرْبِ فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ، وَقَالَ: ((هُنَّ لَهُمْ

पूछा आप (ﷺ) ने देखा होगा एक ऊँट रेगिस्तान में हिरन जैसा साफ़ रहता है लेकिन जब ही एक ख़ारिश वाले ऊँट के पास आ जाता है तो उसे भी खारिश हो जाती है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया लेकिन पहले ऊँट को किसने ख़ारिश लगाई थी।

(राजेअ: 5707)

اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ عَدْوَى)) فَقَامَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: أَرَأَيْتَ الإِبِلَ تَكُونُ فِي الرِّمَالِ أَمْثَالَ الظِّبَاءِ فَيَأْتِيهَا الْبَعِيرُ الأَجْرَبُ فَتَجْرَبُ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَمَنْ أَعْدَى الأَوَّلَ؟)). [راجع: ٥٧٠٧]

तशरीह : यही इसका षुबूत है कि छूत की कोई ह़क़ीक़त नहीं है। अगर कहें कि उसको किसी और ऊँट से ख़ारिश लगी थी तो उस ऊँट को किससे लगी? आख़िर में तसलसुल लाज़िम आएगा जो महाल है या ये कहना होगा कि एक ऊँट को ख़ुद बख़ुद ख़ारिश पैदा हुई थी आपने ऐसी दलील मन्तक़ी बयान फ़र्माई कि डाक्टरों का लंगड़ा टट्टू उसके सामने चल ही नहीं सकता। अब जो ये देखने में आता है कि कुछ बीमारियाँ जैसे ताऊ़न (प्लेग), हैज़ा वग़ैरह एक बस्ती से दूसरी बस्ती में फैलती है या एक शख़्स के बाद दूसरे शख़्स को हो जाती हैं तो इससे ये षाबित नहीं होता कि बीमारी मुंतक़िल हुई है बल्कि बहुक्मे इलाही इस दूसरी बस्ती या शख़्स में भी पैदा हुई और इसकी दलील ये है कि एक ही घर में कुछ ताऊ़न से मरते हैं कुछ नहीं मरते और एक ही शिफ़ाख़ाने में डॉक्टर-नर्स वग़ैरह ताऊ़न वालों का इलाज करते हैं कि कुछ डॉक्टरों नर्सों को ताऊ़न हो जाता है कुछ को नहीं होता। अगर छूत लगना होता तो सब ही को हो जाता लिहाज़ा वही ह़क़ है जो मुख़्बिर स़ादिक़ (ﷺ) ने फ़र्माया मगर वहम की दवा अफ़लातून के पास भी नहीं है। (वह़ीदी)

5776. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मैंने क़तादा से सुना और उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया छूत लगना कोई चीज़ नहीं है और बदशगुनी नहीं है अल्बत्ता नेक फ़ाल मुझे पसंद है। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया नेक फ़ाल क्या है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छी बात मुँह से निकालना या किसी से सुन लेना। (राजेअ: 5756)

٥٧٧٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ عَدْوَى وَلاَ طِيَرَةَ، وَيُعْجِبُنِي الْفَأْلُ)) قَالُوا وَمَا الْفَأْلُ؟ قَالَ : ((كَلِمَةٌ طَيِّبَةٌ)). [راجع: ٥٧٥٦]

कोई कलिमा ख़ैर सुन पाना जिससे किसी ख़ैर को मुराद लिया जा सकता हो ये नेक फ़ाली है जिसकी मुमानअ़त नहीं है।

बाब 55 : नबी करीम (ﷺ) को ज़हर दिये जाने के बारे में बयान। इस क़िस्से को उ़र्वा ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से बयान किया, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है।

٥٥- باب مَا يُذْكَرُ فِي سَمِّ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ،
رَوَاهُ عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

5777. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़ द ने, उनसे सईद बिन अबी सईद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, उन्होंने बयान किया कि जब ख़ैबर फ़तह हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) को एक बकरी हदिये में पेश

٥٧٧٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ قَالَ: لَمَّا فُتِحَتْ خَيْبَرُ أُهْدِيَتْ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ شَاةٌ فِيهَا سُمٌّ فَقَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ

तरफ़ देखा और फ़र्माया कि जो अल्लाह की मख़्लूक़ पर रहम नहीं करता उस पर भी रहम नहीं किया जाता।

رَسُولَ اللهِ ﷺ، ثُمَّ قَالَ : ((مَنْ لاَ يَرْحَمُ لاَ يُرْحَمُ)).

मज़ीद तशरीह नीचे वाली हदीष़ में आ रही है।

5998. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उर्वा ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा आप लोग बच्चों को बोसा देते हैं, हम तो उन्हें बोसा नहीं देते। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिल से रहम निकाल दिया है तो मैं क्या कर सकता हूँ?

٥٩٩٨ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ فَقَالَ: تُقَبِّلُونَ الصِّبْيَانَ فَمَا نُقَبِّلُهُمْ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَوَ أَمْلِكُ لَكَ إِنْ نَزَعَ اللهُ مِنْ قَلْبِكَ الرَّحْمَةَ)).

5999. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने, कहा कि मुझसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास कुछ क़ैदी आए क़ैदियों में एक औरत थी जिसका पिस्तान दूध से भरा हुआ था और वो दौड़ रही थी, इतने में एक बच्चा उसको क़ैदियों में मिला उसने झट अपने पेट से लगा लिया और उसको दूध पिलाने लगी। हमसे हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्या तुम ख़याल कर सकते हो कि ये औरत अपने बच्चे को आग में डाल सकती है हमने अर्ज़ किया कि नहीं जब तक इसको क़ुदरत होगी ये अपने बच्चे को आग में नहीं फेंक सकती। आँहज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि अल्लाह अपने बन्दों पर इससे भी ज़्यादा रहम करने वाला है। जितना ये औरत अपने बच्चे पर मेहरबान हो सकती है।

٥٩٩٩ - حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ قَالَ: حَدَّثَنِي زَيْدُ بْنُ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ سَبْيٌ فَإِذَا امْرَأَةٌ مِنَ السَّبْيِ تَحْلُبُ ثَدْيَهَا تَسْقِي إِذَا وَجَدَتْ صَبِيًّا فِي السَّبْيِ أَخَذَتْهُ فَأَلْصَقَتْهُ بِبَطْنِهَا وَأَرْضَعَتْهُ فَقَالَ لَنَا النَّبِيُّ ﷺ ((أَتُرَوْنَ هَذِهِ طَارِحَةً وَلَدَهَا فِي النَّارِ؟)) قُلْنَا لاَ وَهِيَ تَقْدِرُ عَلَى أَنْ لاَ تَطْرَحَهُ فَقَالَ: ((اللهُ أَرْحَمُ بِعِبَادِهِ مِنْ هَذِهِ بِوَلَدِهَا)).

तश्रीह : ग़ालिबन ये उस औरत का गुमशुदा बच्चा था जो उसे मिल गया और उसको उसने इस मुहब्बत के साथ अपने पेट से चिमटा लिया।

बाब 19 : अल्लाह तआला ने अपनी रहमत के सौ हिस्से बनाए हैं

١٩ - باب جَعَلَ اللهُ الرَّحْمَةَ مِائَةَ جُزْءٍ

6000. हमसे हकम बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, कहा हमको सईद बिन मुसय्यिब ने ख़बर दी कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह ने रहमत के सौ हिस्से बनाए और अपने

٦٠٠٠ - حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((جَعَلَ اللهُ

पास उनमें से निन्नानवे (99) हिस्से रखे सिर्फ़ एक हिस्सा ज़मीन पर उतारा और उसी की वजह से तुम देखते हो कि मख़्लूक़ एक—दूसरे पर रहम करती है, यहाँ तक कि घोड़ी भी अपने बच्चे को अपने सम नहीं लगने देती बल्कि सुमूँ को उठा लेती है कि कहीं उससे उस बच्चे को तकलीफ़ न पहुँचे। (दीगर मक़ामात : 6469)

الرَّحْمَةَ مِائَةَ جُزْءٍ، فَأَمْسَكَ عِنْدَهُ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ جُزْءًا، وَأَنْزَلَ فِي الأَرْضِ جُزْءًا وَاحِدًا، فَمِنْ ذَلِكَ الْجُزْءِ يَتَرَاحَمُ الْخَلْقُ حَتَّى تَرْفَعَ الْفَرَسُ حَافِرَهَا عَنْ وَلَدِهَا خَشْيَةَ أَنْ تُصِيبَهُ)). [طرفه في : ٦٤٦٩].

तश्रीह : घोड़ी का अपने बच्चे पर इस दर्जा रहम करना भी क़ुदरत का एक करिश्मा है मगर कितने लोग दुनिया में ऐसे हैं कि वो रहम व करम करना मुत्लक़ नहीं जानते बल्कि हर वक़्त ज़ुल्म पर अड़े रहते हैं उनको याद रखना चाहिये कि जल्द ही वो अपने मज़ालिम की सज़ा भुगतेंगे क़ानूने क़ुदरत यही है **फ़कुतिअ दाबिरुल्क़ौमिल्लज़ीन ज़लमू वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्आलमीन** (अल अन्आम : 45)

٢٠- باب قَتْلِ الْوَلَدِ خَشْيَةَ أَنْ يَأْكُلَ مَعَهُ

6001. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर बिन मुअतमिर ने, उन्हें अबू वाइल ने, उन्हें अम्र बिन शुरहबील ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने कहा या रसूलल्लाह! कौनसा गुनाह सबसे बड़ा है? फ़र्माया कि तुम अल्लाह तआला का किसी को शरीक बनाओ हालाँकि उसी ने तुम्हें पैदा किया है। उन्होंने कहा फिर उसके बाद फ़र्माया ये कि तुम अपने लड़के को इस डर से क़त्ल करो कि अगर ज़िन्दा रहा तो तुम्हारी रोज़ी में शरीक होगा। उन्होंने कहा उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये कि तुम अपने पड़ौसी की बीवी से ज़िना करो। चुनाँचे अल्लाह तआला ने भी आँहज़रत (ﷺ) के इस इर्शाद की ताईद में ये आयत वल्लज़ीन ला यदऊना मअल्लाहि इलाहन आख़र अल्अख़, नाज़िल की कि, और वो लोग जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पुकारते और न वो नाहक़ किसी का क़त्ल करते हैं और न वो ज़िना करते हैं। (राजेअ : 4477)

٦٠٠١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُرَحْبِيلَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ الذَّنْبِ أَعْظَمُ؟ قَالَ ((أَنْ تَجْعَلَ للهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ)) ثُمَّ قَالَ أَيُّ؟ قَالَ : ((أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ خَشْيَةَ أَنْ يَأْكُلَ مَعَكَ)) قَالَ : ثُمَّ أَيُّ؟ قَالَ: ((أَنْ تُزَانِيَ حَلِيلَةَ جَارِكَ)) وَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى تَصْدِيقَ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ﴿وَالَّذِينَ لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ﴾. [الفرقان: ٦٨].
[راجع: ٤٤٧٧]

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि शिर्क अकबरुल कबाइर है और दूसरे मज़्कूरा कबीरा गुनाह हैं अगर उनका मुर्तकिब बग़ैर तौबा मर जाए तो उसे दोज़ख़ में पहुँचा देते हैं शिर्क की हालत में मरने वाला हमेशा के लिये दोज़ख़ी है ख़्वाह वो नामो—निहाद मुसलमान ही हों क्योंकि क़ब्रों को सज्दा करता है, मुर्दों को पुकारता और उनसे हाजात तलब करता है तो वो काहे का मुसलमान है वो मुसलमान भी मुश्रिक है।

बाब 21 : बच्चे को गोद में बिठा लेना

٢١- باب وَضْعِ الصَّبِيِّ فِي الْحِجْرِ

6002. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा

٦٠٠٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى،

6038. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने सलाम बिन मिस्कीन से सुना, कहा कि मैंने षाबित से सुना, कहा कि हमसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की दस साल तक ख़िदमत की लेकिन आपने कभी मुझे उफ़ तक नहीं कहा और न कभी ये कहा कि फ़लाँ काम क्यूँ किया और फ़लाँ काम क्यूँ नहीं किया। (राजेअ : 2768)

٦٠٣٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، سَمِعَ سَلاَّمَ بْنَ مِسْكِينٍ قَالَ: سَمِعْتُ ثَابِتًا يَقُولُ: حَدَّثَنَا أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَدَمْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَشْرَ سِنِينَ فَمَا قَالَ لِي أُفٍّ وَلاَ لِمَ صَنَعْتَ وَلاَ أَلاَّ صَنَعْتَ؟. [راجع: ٢٧٦٨]

तश्रीह : दस साल की मुद्दत काफ़ी त़वील होती है मगर इस सारी मुद्दत में ह़ज़रत अनस (रज़ि.) को आँह़ज़रत (ﷺ) ने कभी भी नहीं डांटा न धमकाया न कभी आपने उनसे सख़्त कलामी फ़र्माई। ये आपके हुस्ने अख़्लाक़ की दलील है और ह़क़ीक़त है कि आपसे ज़्यादा दुनिया में कोई शख़्स नर्मदिल ख़ुशअख़्लाक़ पैदा नहीं हुआ। अल्लाह पाक उस प्यारे रसूल पर ह़ज़ारहा ह़ज़ार दरूदो–सलाम नाज़िल फ़र्माए, आमीन षुम्म आमीन।

बाब 40 : आदमी अपने घर में क्या करता रहे

٤٠- باب كَيْفَ يَكُونُ الرَّجُلُ فِي أَهْلِهِ؟

6039. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अस्वद ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने घर में क्या करते थे? फ़र्माया आँह़ज़रत (ﷺ) अपने घर के काम काज करते और जब नमाज़ का वक़्त हो जाता तो नमाज़ के लिये मस्जिद तशरीफ ले जाते थे। (राजेअ : 676)

٦٠٣٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَصْنَعُ فِي أَهْلِهِ؟ قَالَتْ: كَانَ فِي مِهْنَةِ أَهْلِهِ، فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلاَةُ قَامَ إِلَى الصَّلاَةِ. [راجع: ٦٧٦]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि आप बाज़ार से सौदा ले आते और अपना जूता आप टाँक लेते गोया उम्मत के लिये आप सबक़ दे रहे थे कि आप काज महा काज, इंसान का रवैया होना चाहिये। **अल्मिहनतु बिकस्रिल्मीम व फत्हिहा व उन्किर इल्ला लिमअल्कस्रि व फस्सरहा बिख़िदमति अहलिही** (फ़त्हुल्बारी) या'नी लफ़्ज़े महना मीम के ज़ेर और ज़बर दोनों के साथ जाइज़ है और घर वालों की ख़िदमत पर ये लफ़्ज़ बोला जाता है।

बाब 41 : नेक आदमी की मुह़ब्बत अल्लाह पाक लोगों के दिलों में डाल देता है।

٤١- باب الْمِقَةِ مِنَ اللهِ

6040. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे अबू आ़सिम ने, उनसे इब्ने जुरैज ने, कहा मुझको मूसा बिन उ़क़्बा ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब अल्लाह किसी बन्दे से

٦٠٤٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

के लिये या क़ानूने क़ुदरत के बरअ़क्स कोई मुत़ालबा अल्लाह के सामने रख रहे हैं तो हर्गिज़ ये गुमान न करें कि इस क़िस्म की दुआएँ भी आपकी क़ुबूल होंगी।

(4) दुआ करने के बाद फ़ौरन ही इसकी क़ुबूलियत आप पर ज़ाहिर हो जाए, ऐसा तस़व्वुर भी स़ह़ीह़ नहीं है बहुत सी दुआएँ फ़ौरन अष़र दिखाती हैं और बहुत सी काफ़ी देर के बाद अष़र पज़ीर होती हैं। बहुत सी दुआएँ बज़ाहिर क़ुबूल नहीं होतीं मगर उनकी बरकात से हम किसी आने वाली बड़ी आफ़त से बच जाते हैं और बहुत सी दुआएँ स़िर्फ़ आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा बनकर रह जाती हैं। बहरह़ाल दुआ बशराइत़े बाला किसी ह़ाल में भी बेकार नहीं जाती।

(5) आँह़ज़रत (ﷺ) ने आदाबे दुआ में बतलाया है कि अल्लाह के सामने हाथों को हथेलियों की त़रफ़ से फैला कर सच्चे दिल से साइल बनकर दुआ मांगो। फ़र्माया, **तुम्हारा रब्बे करीम बहुत ही ह़यादार है उसको शर्म आती है कि अपने मुख़्लिस़ बन्दे के हाथों को ख़ाली हाथ वापस कर दे।** आख़िर में हाथों को चेहरे पर मल लेना भी आदाबे दुआ से है।

(6) पीठ पीछे अपने मुसलमान भाई के लिये दुआ करना क़ुबूलियत के लिह़ाज़ से फ़ौरी अष़र रखता है मज़ीद ये कि फ़रिश्ते साथ में आमीन कहते हैं और दुआ करने वाले को दुआ देते हैं कि अल्लाह तुमको भी वो चीज़ अ़त़ा करे जो तुम अपने भाई के लिये मांग रहे हो।

(7) आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं कि पाँच क़िस्म के आदमियों की दुआ ज़रूर क़ुबूल होती है। मज़्लूम की दुआ, ह़ाजी की दुआ जब तक वो वापस हो, मुजाहिद की दुआ यहाँ तक कि वो अपने मक़्स़द को पहुँचे, मरीज़ की दुआ यहाँ तक कि वो तन्दुरुस्त हो, पीठ पीछे अपने भाई के लिये दुआए ख़ैर जो क़ुबूलियत में फ़ौरी अष़र रखती है।

(8) एक दूसरी रिवायत की बिना पर तीन दुआएँ ज़रूर क़ुबूल होती हैं। वालिदैन का अपनी औलाद के ह़क़ में दुआ करना और मज़्लूम की कुछ रिवायत की बिना पर रोज़ेदार की दुआ और इमामे आ़दिल की दुआ भी फ़ौरी अष़र दिखलाती है। मज़्लूम की दुआ के लिये आसमानों के दरवाज़े खुल जाते हैं और बारगाहे अह़दियत से आवाज़ आती है कि मुझको क़सम है अपने जलाल की और इ़ज़्ज़त की मैं ज़रूर तेरी मदद करूँगा अगरचे उसमें कुछ वक़्त लगे।

(9) कुशादगी, बेफ़िक्री, फ़ारिग़ुल बाली के औक़ात में दुआओं में मशग़ूल रहना कमाल है वरना शदाइद व मस़ाइब में तो सब ही दुआ करने लग जाते हैं। औलाद के ह़क़ में बद् दुआ करने की मुमानअ़त है। इसी त़रह़ अपने लिये या अपने माल के लिये बद् दुआ नहीं करनी चाहिये।

(10) दुआ करने से पहले फिर अपने दिल का जाइज़ा लीजिए कि उसमें सुस्ती-ग़फ़लत का कोई दाग़ धब्बा तो नहीं है। दुआ वही क़ुबूल होती जो दिल की गहराई से स़िद्क़ निय्यत से ह़ुज़ूरे क़ल्ब व यक़ीने कामिल के साथ की जाए।

बाब : अल्लाह तआला ने फ़र्माया, मुझे पुकारो! मैं तुम्हारी पुकार क़ुबूल करूँगा

باب قوله تعالى ﴿ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ - إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾ [غافر: ٦٠]. وَلِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ مُسْتَجَابَةٌ

बिला शुब्हा जो लोग मेरी इ़बादत से तकब्बुर करते हैं वो बहुत जल्द दोज़ख़ में ज़िल्लत के साथ दाख़िल होंगे। उस ह़दीष़ का बयान कि हर नबी की एक दुआ ज़रूर ही क़ुबूल होती है।

तश्रीह : इस आयत को लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये ष़ाबित किया कि दुआ भी इ़बादत है और इस बाब में एक स़रीह़ ह़दीष़ वारिद है जिसे इमाम अह़मद और तिर्मिज़ी और नसाई और इब्ने माजा ने निकाला कि दुआ भी इ़बादत है फिर आपने ये आयत पढ़ी। **उदऊ़नी अस्तजिब लकुम** दूसरी रिवायत में यूँ है कि दुआ ही इ़बादत का मग़ज़

वारिष बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन बिन ज़क्वान मुअल्लिम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदह ने बयान किया, उनसे बशीर बिन कअ़ब अ़दवी ने कहा कि मुझसे शद्दाद बिन औस (रज़ि.) ने बयान किया, और उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कि सय्यिदुल इस्तिग़्फ़ार (मग़्फ़िरत मांगने के सब कलिमात का सरदार) ये है कि यूँ कहे, ऐ अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तूने ही मुझे पैदा किया और मैं तेरा ही बन्दा हूँ मैं अपनी ताक़त के मुताबिक़ तुझसे किये हुए अ़हद और वादे पर क़ायम हूँ। उन बुरी हरकतों के अ़ज़ाब से जो मैंने की हैं तेरी पनाह मांगता हूँ, मुझ पर नेअ़मतें तेरी हैं इसका इक़रार करता हूँ। मेरी मग़्फ़िरत कर दे कि तेरे सिवा और कोई भी गुनाह मुआ़फ़ नहीं करता। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने इस दुआ़ के अल्फ़ाज़ पर यक़ीन रखते हुए दिल से इनको कह लिया और उसी दिन उसका इंतिक़ाल हो गया शाम होने से पहले तो वो जन्नती है और जिसने इस दुआ़ के अल्फ़ाज़ पर यक़ीन रखते हुए रात में इनको पढ़ लिया और फिर उसका सुबह होने से पहले इंतिक़ाल हो गया तो वो जन्नती है।

عبدُالوارثِ، حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، عَنْ بَشِيرِ بْنِ كَعْبٍ الْعَدَوِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنِي شَدَّادُ بْنُ أَوْسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((سَيِّدُ الاِسْتِغْفَارِ أَنْ تَقُولَ: اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ، قَالَ: وَمَنْ قَالَهَا مِنَ النَّهَارِ مُوقِنًا بِهَا فَمَاتَ مِنْ يَوْمِهِ، قَبْلَ أَنْ يُمْسِيَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، وَمَنْ قَالَهَا مِنَ اللَّيْلِ وَهُوَ مُوقِنٌ بِهَا فَمَاتَ قَبْلَ أَنْ يُصْبِحَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ

बाब 3 : दिन और रात नबी करीम (ﷺ) का इस्तिग़्फ़ार करना

٣- باب اسْتِغْفَارِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) का ये इस्तिग़्फ़ार और तौबा करना इज़्हारे अ़ब्दियत के लिये था या दुनिया की ता'लीम के लिये या बरतरीक़े तवाज़ोअ़ या इसलिये कि आपकी तरक़्क़ी दरजात हर वक़्त होती रहती तो हर मर्तबा आला पहुँचकर मर्तब-ए-औला से इस्तिग़्फ़ार करते। सत्तर बार से मुराद ख़ास़ अ़दद है या बहुत होना। अ़रबों की आ़दत है जब कोई चीज़ बहुत बार की जाती है तो उसको सत्तर बार कहते हैं। इमाम मुस्लिम की रिवायत में सौ बार मज़्कूर है।

6307. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने कहा कि मुझे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी उन्होंने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! मैं दिन में सत्तर मर्तबा से ज़्यादा अल्लाह से इस्तिग़्फ़ार और उससे तौबा करता हूँ।

٦٣٠٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالَ: قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((وَاللهِ إِنِّي لأَسْتَغْفِرُ اللهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً)).

बाब 4 : तौबा का बयान

٤- باب التَّوْبَةِ

M-09825696131

दिया है, उसमें उसे बरकत अ़ता फ़र्माइयो। (राजेअ़ : 1982)

راجع: ١٢

6335. हमसे ड़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ड़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक स़ह़ाबी को मस्जिद में क़ुर्आन पढ़ते सुना तो फ़र्माया, अल्लाह इस पर रह़म करे इसने मुझे फ़लाँ फ़लाँ आयतें याद दिला दीं जो मैं फ़लाँ फ़लाँ सूरतों से भूल गया था। (राजेअ़ : 2655)

٦٣٣٥- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً يَقْرَأُ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ: ((رَحِمَهُ اللهُ لَقَدْ أَذْكَرَنِي كَذَا وَكَذَا آيَةً أَسْقَطْتُهَا فِي سُورَةِ كَذَا وَكَذَا)) [راجع: ٢٦٥٥].

6336. हमसे ह़फ़्स़ बिन ड़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने, कहा मुझको सुलैमान बिन मह्रान ने ख़ बर दी, उन्हें अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने कोई चीज़ तक़्सीम फ़र्माई तो एक शख़्स़ बोला कि ये ऐसी तक़्सीम है कि इससे अल्लाह की रज़ा मक़्सूद नहीं है। मैंने नबी करीम (ﷺ) को इसकी ख़बर दी तो आप उस पर ग़ुस्सा हुए और मैंने ख़फ़्गी के आष़ार आपके चेहरा-ए-मुबारक पर देखे और आपने फ़र्माया कि अल्लाह मूसा (अ़लैहिस्सलाम) पर रह़म फ़र्माए, उन्हें उससे भी ज़्यादा तकलीफ़ दी गई लेकिन उन्होंने स़ब्र किया। (राजेअ़ : 3150)

٦٣٣٦- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَسَمَ النَّبِيُّ ﷺ قَسْمًا فَقَالَ رَجُلٌ: إِنَّ هَذِهِ لَقِسْمَةٌ مَا أُرِيدَ بِهَا وَجْهُ اللهِ فَأَخْبَرْتُ النَّبِيَّ ﷺ فَغَضِبَ حَتَّى رَأَيْتُ الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ وَقَالَ: ((يَرْحَمُ اللهُ مُوسَى لَقَدْ أُوذِيَ بِأَكْثَرَ مِنْ هَذَا فَصَبَرَ)). [راجع: ٣١٥٠]

मैं भी ऐसे बेजा इल्तिज़ामात पर स़ब्र करूँगा। ये ए'तिराज़ करने वाला मुनाफ़िक़ था और ए'तिराज़ भी बिलकुल बात़िल था। आँह़ज़रत (ﷺ) मस़ालेहे मिल्ली को सबसे ज़्यादा समझने वाले और मुस्तह़िक़्क़ीन को सबसे ज़्यादा जानने वाले थे। फिर आपकी तक़्सीम पर ए'तिराज़ करना किसी मोमिन मुसलमान का काम नहीं हो सकता। सिवाय उस शख़्स़ के जिसका दिल नूरे ईमान से मह़रूम हो। तमाम अह़कामे इस्लाम के लिये यही क़ानून है।

बाब 20 : दुआ़ में सजअ़ या'नी क़ाफ़िये लगाना मकरूह है

٢٠- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ السَّجْعِ فِي الدُّعَاءِ

(क़ालल्अज़्हरी हुवल्कलामुल्मुकफ़्फ़ा मिन ग़ैर मुराअ़ति वज़्निन) अज़्हरी ने कहा कि कलामे मुक़्फ़ा वो है जिसमें मह़ज़ क़ाफ़िया बन्दी हो वज़न की रिआ़यत मद्देनज़र न हो।

6337. हमसे यह़्या बिन मुह़म्मद बिन सकन ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ब्बान बिन हिलाल अबू ह़बीब ने बयान किया, कहा हमसे हारून मुक़री ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुबैर बिन ख़रीति ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे

٦٣٣٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ السَّكَنِ، حَدَّثَنَا حَبَّانُ بْنُ هِلاَلٍ أَبُو حَبِيبٍ، حَدَّثَنَا هَارُونُ الْمُقْرِئُ، حَدَّثَنَا

नेक अ़मल कभी करना, कभी छोड़ देना मह़मूद नहीं जो भी हो उस पर हमेशगी होना मह़मूद है।

6463. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे किसी शख़्स को उसका अ़मल नजात नहीं दिला सकेगा। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया और आपको भी नहीं या रसूलल्लाह! फ़र्माया और मुझे भी नहीं, सिवा उसके कि अल्लाह तआ़ला मुझे अपनी रह़मत के साये में ले ले। पस तुमको चाहिये कि दुरुस्ती के साथ अ़मल करो और मियाना रवी इख़्तियार करो। सुबह़ और शाम, इसी त़रह़ रात को ज़रा सा चल लिया करो और ए'तिदाल के साथ चला करो मंज़िले मक़्सूद को पहुँच जाओगे। (राजेअ़ : 39)

٦٤٦٣- حدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَنْ يُنَجِّيَ أَحَدًا مِنكُمْ عَمَلُهُ)) قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((وَلاَ أَنَا إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللهُ بِرَحْمَةٍ، سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَاغْدُوا وَرُوحُوا، وَشَيْءٌ مِنَ الدُّلْجَةِ وَالْقَصْدَ الْقَصْدَ تَبْلُغُوا)).

[راجع: ٣٩]

मक़्सूद ये है कि आदमी सुबह़ व शाम को इसी त़रह़ रात को थोड़ी सी इ़बादत कर लिया करे और हमेशा करता रहे। ये तीन वक़्त निहायत मुतबर्रक हैं। आयत **अक़िमिस़्स़लात लिदुलूकिश्शम्सि** से ज़ुहर और **हाफ़िज़ू अलस़्स़लवाति वस़्स़लातिल्वुस्ता** (अल बक़र : 238) से अ़स्र इस त़रह़ से क़ुर्आने करीम से पंजवक़्त इ़बादत का तक़ाज़ा है।

6464. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया दरम्यानी चाल इख़्तियार करो और बुलंद परवाज़ी न करो और अ़मल करते रहो, तुममें से किसी का अ़मल उसे जन्नत में नहीं दाख़िल कर सकेगा, मेरे नज़दीक सबसे पसंदीदा अ़मल वो है जिस पर हमेशगी की जाए, ख़्वाह कम ही क्यूँ न हो। (दीगर : 6467)

٦٤٦٤- حدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَاعْلَمُوا أَنْ لَنْ يُدْخِلَ أَحَدَكُمْ عَمَلُهُ الْجَنَّةَ، وَأَنَّ أَحَبَّ الأَعْمَالِ أَدْوَمُهَا إِلَى اللهِ وَإِنْ قَلَّ)). [طرفه في : ٦٤٦٧].

फ़राइज़े इलाही में कमी बेशी का सवाल ही नहीं है। ये तमाम नफ़्ली इ़बादतों का ज़िक्र है।

6465. मुझसे मुह़म्मद बिन अ़रअ़रा ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से पूछा गया कौनसा अ़मल अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा पसंद है? फ़र्माया कि जिस पर हमेशगी की जाए, ख़्वाह वो थोड़ा ही हो और फ़र्माया नेक काम करने में उतनी ही तकलीफ़ उठाओ जितनी त़ाक़त है (जो हमेशा निभ सके)।

٦٤٦٥- حدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ: أَيُّ الأَعْمَالِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ؟ قَالَ: ((أَدْوَمُهَا وَإِنْ قَلَّ، وَقَالَ اكْلَفُوا مِنَ الأَعْمَالِ مَا تُطِيقُونَ)).

6466. मुझसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़ई ने और उनसे अ़ल्क़मा ने बयान किया कि मैंने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से पूछा उम्मुल मोमिनीन! नबी करीम (ﷺ) क्यूँकर इ़बादत किया करते थे क्या आपने कुछ ख़ास़ दिन ख़ास़ कर रखे थे? बतलाया कि नहीं, आँह़ज़रत (ﷺ) के अ़मल में हमेशगी होती थी और तुममें कौन है जो उन अ़मलों की त़ाक़त रखता हो जिनकी आँह़ज़रत (ﷺ) त़ाक़त रखते थे। (राजेअ : 1987)

٦٤٦٦- حَدَّثَنِي عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ قَالَ: سَأَلْتُ أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ عَائِشَةَ قُلْتُ: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ كَيْفَ كَانَ عَمَلُ النَّبِيِّ ﷺ، هَلْ كَانَ يَخُصُّ شَيْئًا مِنَ الأَيَّامِ؟ قَالَتْ: لاَ، كَانَ عَمَلُهُ دِيمَةً وَأَيُّكُمْ يَسْتَطِيعُ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَسْتَطِيعُ.

[راجع: ١٩٨٧]

सारी रात इ़बादत में गुज़ार देता यहाँ तक कि पैरों में वरम हो जाना सिवाय ज़ाते कुदसी स़िफ़ात फ़िदाहू रूह़ी के और किसमें ऐसी त़ाक़त हो सकती है।

6467. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन ज़िब्रिक़ान ने, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया देखो जो नेक काम करो ठीक त़ौर से करो और ह़द से न बढ़ जाओ बल्कि उसके क़रीब रहो (म्यानारवी इख़्तियार करो) और ख़ुश रहो और याद रखो कि कोई भी अपने अ़मल की वजह से जन्नत में नहीं जाएगा। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया और आप (ﷺ) भी नहीं या रसूलल्लाह! फ़र्माया, और मैं भी नहीं सिवा उसके कि अल्लाह की मग़्फ़िरत व रह़मत के साये में मुझे ढाँक ले। मदीनी ने बयान किया कि मेरा ख़्याल है कि मूसा बिन उ़क़्बा ने ये ह़दीष़ अबू सलमा से अबुन् नस़्र के वास्त़े से सुनी है। अबू सलमा ने आ़इशा (रज़ि.) से। और अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने बयान किया कि हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू सलमा (रज़ि.) से सुना और उन्होंने आ़इशा (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से कि आपने फ़र्माया दुरुस्ती के साथ अ़मल करो और ख़ुश रहो। और मुजाहिद ने बयान किया कि सदादन सदीदा दोनों के मा'नी स़दक़ के हैं। (राजेअ : 6464)

٦٤٦٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الزِّبْرِقَانِ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((سَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَأَبْشِرُوا، فَإِنَّهُ لاَ يُدْخِلُ أَحَدًا الْجَنَّةَ عَمَلُهُ))، قَالُوا: وَلاَ أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((وَلاَ أَنَا. إِلاَّ أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللهُ بِمَغْفِرَةٍ وَرَحْمَةٍ)). قَالَ: أَظُنُّهُ عَنْ أَبِي النَّضْرِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ. وَقَالَ عَفَّانُ: حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((سَدِّدُوا وَأَبْشِرُوا)). وَقَالَ مُجَاهِدٌ: سَدَادًا سَدِيدًا: صِدْقًا.

[راجع: ٦٤٦٤]

तश्रीह़ : या'नी सच्चाई को हर ह़ाल में इख़्तियार करो तुम आमाले ख़ैर करोगे तुमको जन्नत की बल्कि दुनिया में भी कामयाबी की बशारत है। क़ुर्आन की आयत, **क़ूलू क़ौलन सदीदा** (अल अह़ज़ाब : 70) की त़रफ़ इशारा है। अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) के उस्ताद हैं इस सनद को लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अ़ली बिन